वाह रे दुनिया

(लघुकथा संग्रह)

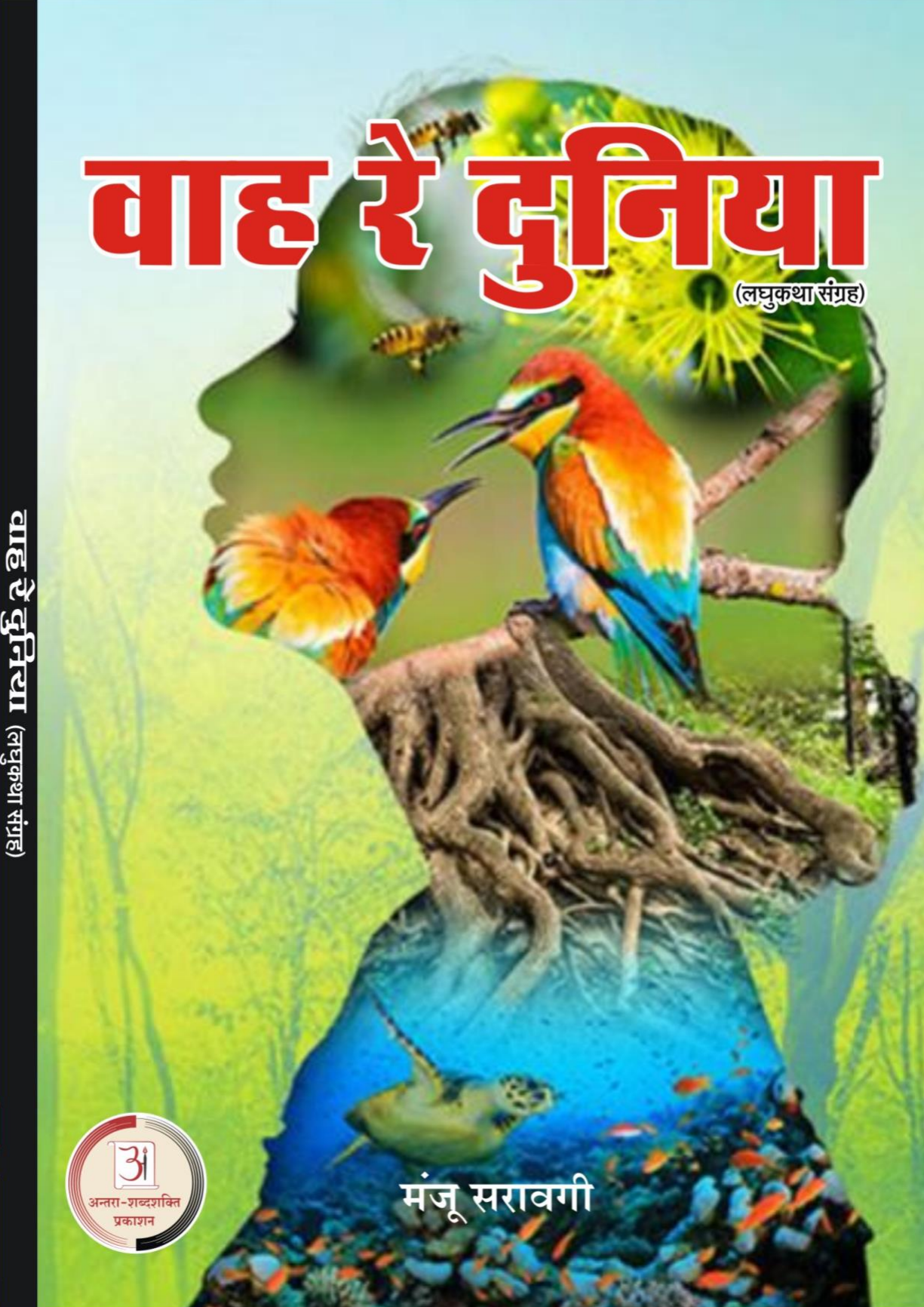

मंजू सरावगी

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

वाह रे दुनिया (लघुकथा संग्रह)

वाह रे दुनिया

(कहानी संग्रह)

मंजू सरावगी

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-257-9

संपादक- डॉ; प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी

मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

मोबाईल- 9424765259, 9009465259

ईमेल- **antrashabdshakti@gmail.com**

वेबसाईट- **www.antrashabdshakti**

प्रथम संस्करण- 2020, जागृति मिश्रा 'रानी'

मूल्य- 250.00 रूपये

मुद्रक- शैलू कम्प्युटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY JAGRATI MISHRA 'RANI'

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

अनुक्रमणिका

1.	वाह रे! दुनिया	7
2.	अवहेलना	8
3.	सिफारिश	9
4.	उत्तरदायित्व	10
5.	धोखा	10
6.	आशा	11
7.	नियति	12
8.	अपहरण	13
9.	अनशन	14
10.	ममता का बलिदान	15
11.	अटल मृत्यु	16
12.	अपेक्षा/ उपेक्षा	17
13.	शिक्षा का महत्व	18
14.	सतरंगी रंग	19
15.	होली के रंग	20
16.	आशीष की शपथ	21
17.	बचपन की शरारत	22
18.	उड़ान	23
19.	आखिरी क्षमा	24
20.	सासु माँ का गृहप्रवेश	25
21.	माँ की परछाई	26
22.	जीत	27
23.	विसर्जन	28
24.	पिंड दान,... हक किसका	29
25.	पहली करवा चौथ	30
26.	प्रायश्चित	31
27.	बदलाव	32
28.	अनुभव दादी का	33
29.	मार दुहू तौला	34

30.	बुटीक	35
31.	मरबो अऊ का	36
32.	तलाक	37
33.	पलायन	38
34.	मौत का इंतजार	38
35.	नीम का पेड़	39
36.	लॉकडाउन	40
37.	प्रशंसा के बोल	42
38.	आ,... अब लौट चलें	43
39.	उतावलेपन की सजा	45
40.	तोहफा	46
41.	पापा होते तो	47
42.	बेटी के लिए	48
43.	रोटी दो जून की	49
44.	काँसे कहूँ	50
45.	संवेदना की धरोहर	51
46.	दोहराता इतिहास	52
47.	कमाकर लाना	53
48.	श्रंद्धाजलि	54
49.	तमांचा	55
50.	बूढ़े की अर्थी	55
51.	अभ्यास	56
52.	दोष किसका	57
53.	शबरी के बेर	58
54.	मातृत्व की तरंग	59
55.	आओ पेड़ लगाये	60
56.	मेरी बगिया	61
57.	वृक्ष भी लगाना	62
58.	बदला ऐसा भी	63
59.	जरूरत	64
60.	दिखावा	65
61.	दिवाली स्वप्न सच हुआ	66

62.	**प्रमोशन**	67
63.	**साबुन**	68
64.	**सागर**	69
65.	**गतिविधियाँ**	70
66.	**ग्रहण**	71
67.	**मै क्या करूँ?**	72
68.	**इंद्रधनुष**	74
69.	**आत्महत्या**	76
70.	**मातृत्व प्रेम**	78
71.	**जहरीला गुलाब**	79
72.	**बेटियाँ**	81
73.	**आजादी**	82
74.	**चोरी का उपहार**	83
75.	**विदाई**	84
76.	**सपना! सपना ही रह गयां**	85
77.	**शिक्षा का मूल्य**	86
78.	**पवित्र रिश्ता**	87
79.	**भीख**	88
80.	**झूला**	89
81.	**जानवर**	90
82.	**आहूति के रूप**	91
83.	**आखिर क्यों नहीं**	92
84.	**मालिक का उत्तरदायित्व**	93
85.	**अंशिका**	93
86.	**बारिश**	94
87.	**नारी एकता**	95
88.	**फैशन और संस्कार**	96

भूमिका

मेरे लिखने का उद्देश्य अपने मन विचार को शब्दों में अभिव्यक्त करना है। हम समाज परिवार में रहते हुए कितने प्रकार की रस्मों रिवाज, अच्छाइयां बुराइयों, अंधविश्वास आडंबर आदि देखते हैं आसपास के वातावरण को महसूस करते हैं। इन सब के लिए हमारे मन में कई बातें ध्यान में आती है हम किसी व्यक्ति विशेष किसी भी समाज परिवार कोसे मिलकर अपनी बात शेयर नही कर सकते हैं

अपनी बात को व्यक्त करने का सबसे सही और सीधा रास्ता लेखन है हम आमने सामने कई रिवाज या किसी को कुछ कहने में संकोच महसूस करते हैं। पर लिखकर यह बात कह सकते हैं। लेखन समाजिक आर्थिक, राजनैतिक किसी भी बिंदु पर किया जा सकता है। आज विचार भावना को न्यूज़ पेपर न्यूज़ चैनल आदि के जरिये जल्दी से जल्दी पहुंचाया जा सकता है।

कलम में वह ताकत है जो हर परिवर्तन को सहज और सरल बना दुनिया में बदलाव ला सकतीहै। इसलिए मुझे पढ़ना बहुत पंसद और इस लिए लिखने की कोशिश कर रही हूं यह मेरा शौक, समय व्यतीत करने का साधन भावनाओं, विचार अभिव्यक्त का बहुत सुंदर माध्यम है!

माता शारदा की वंदना एवं हिन्दी भाषा का अधिक से अधिक प्रसार प्रचार का साधन है और मै लेखन के माध्यम से बहुत लोगों से जान पहचान उनसे बहुत कुछ सीखती हूँ पढ़ती और मनन भी करती हूँ अंतरा शब्दशाक्ति समूह को मेरा बहुत बहुत धन्यवाद है जो मेरे लेखन का साधन है.....

इस समूह से, तथा मेरी रचना पढ़ने वाले सभी से आशा करती की वह मुझे मार्गदर्शक बनकर मेरी गल्तियों को बताये एवं मुझे उत्साह को प्रोत्साहित करते रहे, इस बार मैं आप लोगो के सामने समाज की घटनाओं से प्रभावित होकर कुछ लघु कथा प्रस्तुत कर रही हूँ विश्वास है आपलोगो का मार्गदर्शन मिलेगा.....

मंजू सरावगी

रायपुर छतीसगढ़

वाह! रे दुनिया

आज रवि ने जन्म दिन कि पार्टी का आयोजन किया था उसके सभी प्रकार के दोस्त है कुछ दोस्त सिर्फ मांसाहारी हैं और कुछ शाकाहारी। सभी की पसंद का ध्यान का ध्यान रखकर शाकाहारी खाना के साथ... रवि ने पार्टी मासांहारी में भी व्यंजन की व्यवस्था की थी। व्यंजन में फिश पकोड़े... बटर चिकन... और चिकन पुलाव तंदूरी मुर्गा बनवाया। समय पर सभी दोस्त आ गये। सबने आते ही कहा यार गजब की खुशबू आ रही है खाने की जायेदार खुशबु ने भूख को दुगनी कर दी है जल्दी से केक काटों... वरना मैं पहले खाना शुरू करूँ। रमेंश की बात पर जतिन बोला यार सब खाने के लिए है कुछ सब्र करो।

हँसी मज़ाक़ के बीच केक कटा और फिर खाना खाने का दौर शुरू हो गया सबने जीभर कर फिश पकोड़े... बटर चिकन और तंदूरी मुर्गा खा रहे थे। तभी बातचीत का सिलसिला हथनी के मारे जाने पर चलने लगा। रमेंश बोला कैसे निर्दयी इंसान है लोग मूक जानवरों को मार देते हैं

जतिन बोला ऐसे मानव में इंसानियत कहाँ होती है जो पशु पक्षी का दर्द समझे

और माधव बोला ऐसे लोगों को इंसान कहना,... इंसानियत को शर्मसार करना है

रवि ने कहा ये लोग इंसान नहीं दानव है जो जानवरों को बिना कारण मार डालते हैं संवेदना तो होती नहीं,...दानव है दानव

बेटर को आवाज देकर बोले गरम गरम फिश पकोड़े सर्व करो,...!

--00--

अवहेलना

जिंदगी और मौत से लड़ रहा है मिथलेश। वह आई.सी.यु. के रूम में बैड पर लेटे ही खिड़की की ओर देखा खिड़की में मिरर के पीछे दादा जी और उसकी मम्मी आँखों में आंसू लिए उसे एकटक देख रहे हैं उनकी हालत देखकर मिथलेश को उनकी बातों की अवहेलना करने का ध्यान बीमारी से ज्यादा दुःखी कर रहा था...!

मिथलेश एम.एस. करने यू.एस. गया था और वही की संस्कृति अपना ली थी सबसे हाथ मिलाना... गले लगाना और गालों पर किस करना... फिर वह व्यक्ति आदमी हो या औरत। उसकी यह आदत दादा जी को बिल्कुल पंसद नहीं थी वे मिथलेश को हमेंशा कहते की सबको सिर्फ नमस्कार... और प्रणाम किया करो... बड़ो के चरण स्पर्श किया करो। पर मिथलेश पर पाश्चात्य संस्कृति अच्छी लगती थी और वह उनकी बात को मजाक में टाल देता था। दादा उससे इतना प्यार करते थे कि वह उससे नाराज नहीं रह पाते थे बेटे को खोकर उन्होंने पोता मिला था। इसलिए दादा उसकी छोटी बात का ध्यान रखते व टोकते थे।

मिथलेश ने अपनी इसी आदत के कारण अपने एक दोस्त से हाथ मिलाया और गले लगा लिया। दोस्त हाथ से इशारा करता रह गया परिणाम स्वरूप मिथलेश दोस्त के साथ आज आई.सी.ओ. में लेटा है। दोस्त पर कोरोना वायरस का असर था और अब मिथलेश भी उसकी चपेट में था। अपने आप पर झल्लाता हुआ दुखी अपने दादा और मम्मी को देख रहा है उसकी अवहेलना की सजा किसको मिलेगी सोच के साथ...!

--00--

सिफारिश

गौरव को जिस दिन का इंतजार था आज वह दिन आ गया था। आज उसका सरकारी नौकरी के लिए साक्षात्कार था जैसे जैसे वह तैयार हो रहा था वैसै वैसै उसके मन के कोने का डर परेशान कर रहा था कारण। लिखित परीक्षा तो उसने बहृत अच्छे से पास कर ली थीं। साक्षात्कार की तैयारी भी अच्छी तरह से की है। पी.एस.सी. में भी उसका चयनित हो चुका था। पर हर बार साक्षात्कार में रह जाता था कारण।

सिफारिश भ्रष्टाचार और आरक्षण। उस पर सामान्य जाति का होना सबसे बड़ा अभिशाप। गौरव को अपनी काबिलियत और कोशिश पर विश्वास था पर साक्षात्कार में चयन से वाछित हो जाता था। उसका अपनी योग्यता पर नौकरी पाना।

उसके पापा के पास रूतबा और पैसा दोनों था। गौरव इन सब का उपयोग करके नौकरी प्राप्त करना नहीं चाहता था।

अपने को पूणतया तैयार करके वह साक्षात्कार केन्द्र के लिए निकल गया। साक्षात्कार टाइम 11 से 3 बजे तक का था। अभी वह रास्ते में ही था कि उसने देखा एक ट्रक और इनोवा की टक्कर हो गई हैं। और दो आदमी बुरी तरह घायल है आस पास कोई नहीं हैं पूरा रास्ता सूना हैं। गौरव के मन में उथल पुथल होने लगीं वह आहत को अस्पताल लेकर जाए या अपना इटरव्यू देने जाए।

अंत में मनवता की विजय हूई और वह इटरव्यू को छोड़ कर घायलों को लेकर अस्पताल पहूंचा। उनको एडमिट कराया और उपचार शुरू करवाया। इन सब में काफी समय लग गया। जब वह अपने इटरव्यू केंद्र पहूंचा तो काफी समय हो चुका था। उसके कपड़ों में धूल और खून के दाग लग चुके थे। पर उसे इस बात की परवाह नहीं की परीक्षा अधिकारी ने साक्षात्कार के लिये मना किया पर उसके बार बार कहने और कारण बताने पर इटरव्यू ले लिया। इटरव्यू अच्छा रहा और गौरव को नौकरी मिल गई।

गौरव ने ईश्वर को धन्यवाद दिया उसे लगा कि कुछ अच्छे कार्य की वजह से ईश्वर ने उसकी सिफारिश की है उसके मानवीय संवेदनाओं के कारण।

--00--

उत्तरदायित्व

उर्मिला गहन आत्मचिंतन में डूब कर सोच रही थी कि उत्तरदायित्व होता क्या है? कैसा उत्तरदायित्व... किसके लिए क्या करना है... बचपन से बुढ़ापा आ गया करते करते... बड़ी बहन थी तो छोटे भाई बहन के लिए कर्तव्य करती रही... शादी हुई तो बड़ी बहू बनी और उत्तरदायित्व की डोर थामकर कर्तव्य पूरे किये... बच्चों के साथ तो माँ पिता को अपना उत्तरदायित्व निभाना ही पड़ता है बच्चों का भले कोई उत्तरदायित्व न हो... पर माँ पिता कैसे भूल सकते हैं अपना उत्तरदायित्व...

उर्मिला के हाथ तो उत्तरदायित्व के लिए भी उत्तरदायित्व ही बना रहा... बस आज भी उसके पास आँखों के लिए आँसू और दरवाजे पर टकटकी लगाये नजर है... तन के लिए वही पुराने कुछ फटे कुछ उधड़े कपड़े... और खाने को वही सहेजकर बनाया रूखा सूखा खाना... इसी को उपयोग करना उत्तरदायित्व...!

--00--

धोखा

कमली माँ बूढ़ी हो गयी थी उनका अपनी कोई औलाद नहीं थी। पति दीनानाथ से कमली ने कई बार कहा किसी को गोद ले लेते हैं पर दीनानाथ हमेंशा टाल देते थे क्योंकि उनके मन में डर था कि धन की लालच में कोई भी रहने को तैयार हो जायेगा पर दिल से वह अपना नहीं रहेगा। और धोखा देकर सारी संपत्ति हथिया ले। कमली को लगता कि किसी को रख ले तो काम और खाना बनाने से तो आराम हो जायेगा। पर वह नौकर चाकर नहीं रखना चाहती थी। अपने बुढ़ापा का वास्ता देकर कमली ने अपने दूर के भतीजे को रख लिया। उसने आते ही घर की जिम्मेदारी संभाल ली। कमली ने बेटे जैसे भतीजे की शादी भी कर दी और बहु ले आई। भतीजा अच्छा बनकर धीरे धीरे कमली का सब धन हथियाता जा रहा था। बहु ने भी अच्छी बनकर कमली और दीनानाथ को चारों धाम की यात्रा के लिए भेज दिया। जाने के पूर्व उन्होंने होटल और टिकट आरक्षण के नाम पर कागज पर साइन करवा कर सब अपने नाम कर लिया। जब दो माह बाद कमली और दीनानाथ आये तो उन्हें वृद्धाश्रम में पहुचा दिया है कमली और दीनानाथ इस धोखा के लिए कोर्ट के दरवाजे खटखटा रहे हैं,...!

--00--

आशा

दरवाजे पर ठक ठक की आवाज आई और... लीला अपने आप में बुदबुदाई... चंदा आ गयी है और दरवाजे पर सिर मार रही हैं लीला ने भैस को रोटी खिलाई तो वह इधर उधर सिर घूमा कर देखा और चली गयी। चंदा हमारे पडोसी की भैंस है और वह पूरे मोहल्ले में हर घर रोटी खाने जाती है न जाने चंदा को टाइम कैसे पता चल जाता है घंडी़ में "बारह" बजे और चंदा दरवाजे पर। बंद दरवाजा हो तो वह सिर से खट् खटा कर खुलवा लेती और रोटी तथा लीला अपनी आदत के अनुसार भाजी तरकारी और भी बचा हुआ खाना चंदा को खिला देती थी। इंसान ही नहीं जानवर पशु पक्षी को भी अगर हम कुछ खाने देते है तो वह भी आशा लगा कर समय से इंतजार करने लगते हैं। सुबह छत पर कदम रखते ही चिड़िया उड़ उड़ कर चहक चहक कर हल्ला करने लगती है। एक दिन लीला का अपने पति से काम को लेकर झगड़ा हो गया। लीला का पति हर समय लीला को ताना कसता रहता कि घर में बैठे बैठे करती क्या हो। बस आज यह बात से लीला के अहम को ठेस लगी और उसने सोच लिया की आज वह कुछ नही करेगी घर के सारे सदस्य अपनी अपनी जगह चुप चाप थे। "बारह" बजते ही द्वार पर चंदा आ गयी और सिर से दरवाजा ठक ठक करने लगी। लीला ने गुस्से में दरवाजा नहीं खोला चंदा लगा तार दरवाजे पर दस्तक दे रही थी। लीला छत पर जाकर देख रही थी कि चंदा कितनी देर तक खडी़ रहती है करीब बीस पच्चीस मिनट बाद वह आगे बढ़ रही थीं पर पलट पलट कर बंद दरवाजे पर निगाह रुकती इस आशा में कि दरवाजा खुले और कोई आवाज़ दे। उसकी आँखों में आशा ही आशा थी लीला सोच रही थी कि उसके कोध्र और अहम ने एक जानवर की आशा को निराशा से भर दिया है। और चंदा अभी भी पलट पलट कर अपनी उम्मीद जाहिर कर रहीं थी।

--00--

नियति

राजेन्द्र बाबू को हमेंशा से ही बच्चों से लगाव रहा। नन्हे मुन्ने हँसते खेलते बच्चे हमेंशा ही उनके मन की कमजोरी थी। बच्चों की हर शरारत में उनकी खुशियां रमती थी बच्चे अपने हो या पराये,... सब पर बराबर प्यार बरसता था।

जब उनके अपने बेटे आशीष की शादी हुई और बहू अंकिता घर आईं तो मन उनका खुशी के सागर में हिलोरे लेने लगा। किसी के यहाँ भी बधाई की सुनकर अपनी पत्नी मधु से कहते की अपने घर कब बधाई का समय आयेगा।

ईश्वर ने उनकी बात सुन ली और बहू अंकिता गभर्वती हुई तो उनके अरमानों को पंख मिल गये। उनकी खुशी का ठिकाना न रहा। दिन रात पोते पोती के सपने देखने में निकलता। लगता समय का इतंजार कितना करना पड़ रहा हैं। आठ माहिने यूही जगती आँखों के सपने देखते निकल गए।

आखिर वह दिन भी आ गया जिस का राजेंद्र बाबू ने पल पल इतंजार किया था। बहू को लेवर पेन हुआ डॉक्टर ने सजर्री से डिलवरी के लिए कहा।

राजेंद्र बाबू पत्नी बेटे रिश्ते दारो के साथ आपरेशन थियेटर के बाहर आने वाली खुशियों को बाहों में लेने कोब बेकरार थे

नियति को कुछ और ही मंजूर था। एक घंटे के इंतजार के बाद डॉक्टर बाहर आये और कहा। आई एम सारी। आपकी बेबी डैड हैं।

राजेंद्र बाबू को नियति के इस क्रूर मजाक जरा भी आगाज नहीं था। उनके हाथों में उनके अरमानों के रूप में पोती की डैडबाडी थी। वह आंसुओं भरी आँखों से नियति के इस क्रूर मंजर को देख रहे थे शून्य में।

--00--

अपहरण

मंदिर में खडी़ विमला अपने दोनों हाथ जोड़कर कर रोते हुए बारबार विनती कर रही थी 'हे! कृष्ण मुरारी मेंरी अर्ज सुन लो 'रमा,... की पीड़ा का अंत कर दो किसी भी रूप आ जाओ कृष्णा।' रमा का रोना देखकर उन्हें अपनी पीड़ा याद आ रही थी कि वह कितने दुख सह चुकी है। आज से 15 साल पहले विमला के बारह वर्ष के नीरज को अपहरण कर्ता उठा ले गए थे और फिरौती की रकम मांगी थी।

विमला देवी के पति ने रकम तो देदी थी पर उनके पडोसी ने पुलिस को सूचना देदी थी इसलिए कोध्र और पकड़े जाने के डर से अपहरण कर्ता ने उसके बेटेको मार दिया था। इस हादसे के बाद विमला ने दुख से बनारस छोड़ दिया था। और वह इंदौर में रहने लगी थी। उनके पडो़स में दो बच्चों व पति के साथ रमा रहतीं थी। रमा से वह बेटी जैसा प्यार करती थी। आज रमा के दोनों बच्चों मान्या,... मनन का अपहरण किसी ने स्कूल जातें समय कर लिया था। तथा फिरौती की 50 लाख रकम की मांग की थी। रमा मध्यम परिवार की थी और रकम की व्यवस्था करना नमुकीन था। अपहरण कर्ता रमा का रहन सहन देख कर मांग कर रहे थे। रमा शानदार तरीके से रहती थी। और अपनी मजबूरी और बच्चों के वियोग में वह जार जार रो रही थीं। विमला देवी को उसकी पीड़ा में अपना दर्द दिख रहा था और वह लगातार कृष्ण मुरारी से प्रार्थना कर रही थी उसकी पीड़ा दूर करने के लिए।

--00--

अनशन

कपिल का जब से जन्म हूआ था दादा जी की खुशी का ठिकाना नहीं रहता था। कपिल की हर जायज नाजायज मांगों को दादा जी पूरा करते थे। आखिर पूरा भी क्यों न करते? कपिल उनका लाड़ला एकलौता पोता जो था। विजय बाबू कपिल के पिता और मम्मी सुषमा कभी कभी दादा जी के लाड़ से परेशान हो जाते। विजय बाबू कई बार शिकायती लिहाजे में बोलते की कपिल "जिद्दी" होता जा रहा है तो दादा जी मुस्कुरा कर बात टाल देते। सब ठीक हो जायेगा। जब कभी विजय बाबू या सुषमा कपिल को डाँट देते तो वह नाराज होकर खाना पीना छोड़ देता। तब दादा जी कपिल को मान मनौवल करके मना लेते थे। इसी तरह कपिल 18 वर्ष का हो गया। आज कपिल के स्कूल में सालाना प्रोग्राम था उसको स्कूल से विदाई भी मिलने वाली थी। इस लिए वह जिद्द कर रहा था कि कार वह खुद चला कर ले जायेगा। विजय बाबू ने साफ मना कर दिया। क्योंकि वह खुद एक पुलिस अधीक्षक थे। और बच्चों की गाड़ी चालाना समझते थे। कपिल ने गुस्से में खाना पीना छोड़ दिया। दादा जी ने भी कपिल का साथ दिया और वह भी "अनशन" करेंगे कह दिया। दादा जी ने कपिल के साथ साथ कुछ नही खाया। दादा जी को डायबिटीज है दिन भर खाना और दवा न लेने के कारण उनकी तबियत बिगड़ गई। सुषमा ने बहूत समझाया पर दादा जी नही माने। वह अपने अनशन पर डटे रहे। विजय बाबू ने हारकर कपिल को कार खुद चला कर जाने की इजाजत देदी। दादा जी खुश हूए पर जब रात एक बजे तक कपिल घर वापस नही आया तो उन्हें चिंता और घबराहट होने लगी बार बार मोबाइल का नंबर लगाते। ज्यादा रात होने पर विजय बाबू भी चिंतित होने लगे। तभी एक अनजान नंबर से फोन आया फोन सुनकर विजय बाबू एक दम घबरा कर बोले कपिल का एक्सीडेंट हो गया है। दादा जी विजय बाब हास्पिटल गये जहां कपिल और उसके चार दोस्त एडमिट थे। कपिल की कार तेज गति के कारण सड़क के डिवाइडर से टकरा गई थी और एक भयंकर हादसा होगया। कार पूरी क्षतिग्रस्त होगई। और विजय बाबू हास्पिटल में इधर उधर भागकर डॉक्टर से मिल रहे थे। कपिल "आई सी यू" में जिंदगी और मौत से जूझ रहा था। दादा जी अपने मन से जूझ रहे थे कि उन्होंने ये कैसा "अनशन" किया।

--00--

ममता का बलिदान

गौरव की बात सुनकर माँ एकदम आवक रह गयी। गौरव की बात में जिद्द और द्दढता थी कि माँ मीता को समझ नहीं आ रहा था कि वो क्या कहे। गौरव और उसकी पत्नी सुरभि ने इतना बड़ा फैसला लिया है। पर गौरव की बात पर वह छः माह पहले की याद में खो गयी। उनका अपना खुश हाल परिवार था परिवार में दो बेटा दो बहू वह और उनके प्यारे पति बेटी का विवाह हो चुका था और अब वह ससुराल में खुश थी। बड़े बेटे की शादी उन्होंने संध्या के साथ पांच साल पहले ही की थी उनके दो सुंदर बच्चे तीन साल की मायरा और छः माह बेटा मनन था। एक साल पहले उन्होंने ने गौरव की शादी सुरभि से करके चैन की सांस ली थी। पर भाग्य में सुख नहीं था। इसलिए छः माह पहले ही मीता के बड़े बेटे की एक कार एक्सीडेंट में मृत्यु हो गई। घर पर दुख का पहाड़ टूट गया। मीता को समझ नहीं आ रहा था कि वह खुद को संभाले या संध्या को। सुरभि ने अपने संयम और साहस से परिस्थिति को संभाला। संध्या की हालत और उम्र को देखकर गौरव और सुरभि ने फैसला किया कि वह भाभी का पुनः विवाह कर देगे। जब भाभी से बात की तो वह राजी नहीं हुई काफी जिद्द करने पर वह कहने लगी की बच्चे का क्या होगा उन्हें कौन स्वीकार करेगा। गौरव ने कहा कि वह कहने और सुरभि बच्चे को गोद लेगे। संध्या के कहने पर कि,... जब उनके अपने बच्चों केहो जाने के बाद सबको एकसा व्यवहार करना संभव नहीं होगा। समुचित ध्यान नही दे पाओगे। तब गौरव ने कहा कि वह और सुरभि ने फैसला किया है कि वे परिवार नियोजन करवा लेगें। और अपने बच्चें नहीं होने देंगे। और वह अपनी बात पर वह अडिग रहे और उन्होंने अपना परिवार नियोजन आपरेशन करवा लिया। समय पर अच्छा लड़का ढूढ़ कर संध्या का विवाह कर दिया। विदाई के समय संध्या गौरव के गले मिलकर रोते हुए कहा। भईया आपने कर्तव्य और फर्ज में पापा और भाई दोनों को भी पीछे छोड़ दिया। सुरभि के गले मिलकर रोते हुए कहा,... सुरभि तुमने मेंरे लिए अपनी,... "ममता का बलिदान" कर दिया। तुम धन्य हो धन्य है तुम्हारा "बलिदान"

--00--

अटल मृत्यु

पुलवामा की आंतकी घटना को लगभग एक माह हो चुका था। परंतु रेखा का मन अभी भी बहुत ज्यादा दुःखी रहता था क्योंकि इस आंतकी हमले में उसका बड़ा बेटा विशाल वीर गति को प्राप्त हुईं थी। रेखा के पति भी फौज के अहम अधिकारी रह चुके थे और वह रिटायर अफसर थे उनमें देश प्रेम की भावना कूट कूट कर भरी थी। बड़े बेटे के शहीद होने पर उन्हें दुख से ज्यादा उसकी शहादत पर गौरव होता था। इस लिए वह अपने दूसरे बेटे विक्रम को भी फौज में भेजने का निर्णय कर लिया। जब यह बात उन्होंने अपनी पत्नी रेखा से कहा। तो वह यह बात सुनकर अत्यंत दुविधा में फंस गयीं। एक तरफ उसकी ममता और दूसरी ओर पति की भावना का सम्मान। रेख की दुविधा को देख कर विक्रम ने मां को समझाया कि।

मम्मी मृत्यु को जब आना है तब ही आयेगी। आप ही तो कहती हो। मृत्यु अटल होती है अगर उसे आनी है तो कहीं पर आ जायेगी। रोज ही सड़क दुर्घटना,... आधी पानी बिजली और कई कारण से मौत हो जाती है। उनकी मृत्यु पर सिर्फ अफसोस होता है। न सम्मान मिलता है न ही शहीद कहलाते हैं। इससे अच्छा है मैं फौज में शामिल हो कर फौजी बन देश पर कुरबान हो जाऊँ। देश के लिए जान देने पर शहीद बन इज्जत की मृत्यु मिलेगी। बेटे की बात रेखा को समझ में आ गई और वह अपने मन की दुविधा से निकल कर बेटे को फौज में भेजने की हिम्मत जुटाने लगीं।

--00--

उपेक्षा/अपेक्षा

मनुष्य एक समाजिक प्राणी है वह समाज परिवार रिश्ते नाते और दोस्तों के साथ रहता है। और सबके साथ रहते वह सब के लिए कुछ न कुछ करते रहता है और उसके करने की वजह ही अपेक्षा बन जाती है और यही अपेक्षा कभी उपेक्षा का कारण बनती हैं।

जैसे अधिकार और कर्तव्य को अलग अलग करना मुश्किल है उसीतरह अपेक्षा और उपेक्षा को अलग अलग नही किया जा सकता है। माता पिता अगर बच्चों को पालते है वह शब्दों से नहीं कहते कि वह क्या अपेक्षा रखते हैं पर बिना कहे भी अपेक्षा के हालत बन जाते हैं। इसी तरह हर रिश्ता चाहे बहन बहन का हो,... बहन भाई का,... भाई भाई का,... पति पत्नी का,... अडोसी पडोसी,... या मित्रता,... घर परिवार सभी को कुछ न कुछ अपेक्षा हो ही जाती है हर समय हर कोई उपेक्षा भी नहीं करता है पर हालात उसे उपेक्षित समझ लेता है। आज के दौर में हर मनुष्य यही कहता है कि अपेक्षा नहीं करनी चाहिए पर यह बात वैसी ही होती है जैसे पानी में डूब कर सूखा रहना।

हाँ इतना जरूर कहना चाहती हूँ कि अपेक्षा इतनी नही रखो कि उपेक्षा होने पर मनुष्य दुख महसूस करे। अपेक्षा रखो पर सामने वाले पर न तो जाहिर करो और न उसके भरोसे पर रहो।

जैसे आवश्यकता अविष्कार की जननी है वैसे ही अपेक्षा उपेक्षा की जननी है। फर्क़ इतना है कि अविष्कार आगे बढ़ता है और उपेक्षा दुख अवसाद।

जितनी कम अपेक्षा

उतनी कम होगी या महसूस करेगें उपेक्षा,...।

--00--

शिक्षा का महत्व

हमेंशा समय एक सा नही रहता है यह परिवर्तन शील है और जिंदगी में भी समय समय पर आते हैं रहते हैं समय के साथ अपने नियम कायदे स्वभाव बदलते रहना चाहिए। और सभी लोग इस बात का विशेष ध्यान रखना की,... लड़कियों की पढ़ाई नही रूकना चाहिए न उनको जॉब में जाने से रोकना। बेटी का विकास ही हमारे विकसित होने का सच्चा और सही मायने में उन्नति होगी। जब रंजना को समझाते हुए उसके बडे भाई सुशील कुमार ने कहा तो वह एक दम अंचभित सी हो गयी थी सोचने लगी की यह वही भईया है जो पढाई के नाम पर विशेष कर लड़कियों की शिक्षा पर गुस्सा हो जाते थे। इतना जोर दे रहे है भईया में यह परिवर्तन अचानक नही आया था इसके लिये उनकी बेटी नेहा ने बहुत संघर्ष किया था। सुशील भईया लड़की को घर से बाहर भेजने उस पर पढाई के लिये। एक महायुद्ध से ज्यादा,... घर का महाभारत झेलना पड़ा था। नेहा को इन्जीनियर बनने का शौक था। और आज से बीस साल पहले एक मध्यम वर्गीय परिवार में रहकर बाहर जाकर पढाई करना सरल नही था। पर नेहा ने पापा से पूछे बिना पी एम टी दे दिया था पर अब उसका सिलेक्शन हो जाने पर नगर से बाहर दूसरे शहर में पढाई के लिये भेजने पापा ने मना किया उसका साथ उसकी दादीजी ने दिया बहुत डांट फटकार के साथ नेहा की पढाई का सफर शुरू हुआ। उसकी हर जरूरत को उसके पापा नजर अंदाज कर देते थे। एक एक किताब को भी परेशान होती पर नेहा ने ठान लिया था की पापा की विचारधारा को वह बदल देगी। और वह अपनी कोशिश में कामयाब हुई लगातार चारों साल पूरे आठ सेमिस्टर में वह मेंरिट में आती। तथा गोल्ड मेंडल मिलता। इंजीनियर बनने के बाद मेंरिट वाले लड़के लड़की को मैडल के लिये बुलाया गया। और राज्यपाल तथा मुख्यमंत्री ने नेहा के साथ उसके पापा की इतनी अधिक तारीफ की। और उस दिन से शिक्षा के प्रति सुशील कुमार में जो परिवर्तन आया उसका फायदा पूरे परिवार समाज और रिश्तेदार तक को प्राप्त हो रहा है यहाँ तक वह आर्थिक मदद भी करते हैं पढाई के लिये।

--00--

सतरंगी रंग

होली का त्यौहार जैसे जैसे नजदीक आ रहा था सुषमा की मन की बैचेनी बढ़ती जा रहीं थी। आखिर क्यों न हो। क्योंकि उनके जीवन में होली के त्योहार से बहुत सी अच्छी बुरी यादें जुड़ी है होली से उन्हें खुशी के रंग मिले और दु ख केरंग भी। दो साल पहले ही उनके बेटे के लिए लिए रिश्ता आया था और वह होली से पूर्व ही लड़की देखने जाने वाले थे। उनके दो बेटे "सजल" और "समीर" थे। रिश्ता शयामली के घर से सजल के लिये आया था। श्यामली एक सुंदर सुशील पढी लिखी लड़की थी। श्यामली को जब देखने लड़के वाले आने वाले थे तो उसने अपनी सहेली प्रियंका को भी बुला लिया था। वह भी एक सुंदर और अच्छी लड़की थी। सजल को श्यामली एक नजर में ही पंसद आ गई। और उनके रिश्ते के लिए हां हो गई। प्रियंका भी समीर को अच्छी लगी और शयामली के जरिये उसका रिश्ता प्रियंका से तय हो गया। इस तरह होली के दिन दोनों की शादी तय हो गयी। प्रियंका और श्यामली दोनों सुषमा की "बहू" बनकर घर आ गईं खुशियों से दिन बीतने लगे। एक साल में ही प्रियंका और समीर की बेटी हुई तथा सजल और श्यामली को पुत्र हुआ। सजल की नौकरी आर्मी में थी। और सीमा पर रहते हुए एक दिन पाकिस्तानी विस्फोट में वह शहीद हो गया। और घर में मातम छा गया। और श्यामली अकेली हो गई। कुछ दिनों बाद एक सड़क दुर्घटना में प्रियंका की मृत्यु हो गई। और समीर की पत्नी की मृत्यु से वह भी अकेला रह गया। प्रियंका की मृत्यु के छैमाह बाद ही उसके लिए रिश्ते की बात होने लगी। और समीर भी न। न करके शादी के लिए तैयार हो गया। और उसके लिए लड़की देखी जाने लगी। होली के दो दिन बाद लड़की देखने का प्रोग्राम तय हुआ। सुषमा की बहन यह रिश्ता लेकर आयी थी वह भी आई हुई थी। होली के दिन होली खेलते हुए वह जब श्यामली को रंग लगाने लगा तो वह रोक दिया और कहने लगीं कि हम विधवा को रंग लगाना और होली खेलना वार्षिक रहता है और रोते हुए वह अपने कमरे में चली गई। समीर ने अपनी मम्मी से कहा "कि मेंरी पत्नी की मृत्यु के बाद मुझे रंग खेलना दूसरा विवाह कर सकता हूँ तो शयामली क्यों नहीं। सुषमा ने कहा कि समाज का यही नियम है समीर ने कहा "आखिर क्यों" तब सुधा ने कहा दीदी हम समाज के सामने एक नया उदाहरण दे सकते हैं। सुषमा ने कहा

कैसे। तब सुधाने कहा कि हम श्यामली का रिश्ता समीर से करके। सुषमा ने विचार किया और कहा मै समीर तथा उसके पापा से बात करके बताती हूँ उनके सहमति मिलते ही श्यामली को बुला कर आंगन में खड़ा कर दिया और श्यामली कुछ समझ पाती। सुषमा ने समीरऔर उसके दोस्तो से कहा कि। श्यामली को होली के रंगों से इतना रंग दो कि इन्द्र धनुष के रंग भी शर्मा जाये। समीर और सब ने मिलकर होली है कहते हुए श्यामली को रंग से सरोवर कर दिया। और सुषमा कहती रही कि इतना रंगों मेंरी बहू को की तन मन ऐसा रंग जाये। जीवन भर रंग कम न हो। और श्यामली होली के इन सतरंगी रंग में खुशी से डूबती जा रही थी रंग रंग सतरंगी रंग में।

--00--

होली के रंग

हमारे चाचा को होली खेलने का शौक बहुत ज्यादा था वह अपने सभी जान पहचान वालों को होली में नये नये तरीके से परेशान करते थे। सभी लोग उनसे होली खेलने से कतराते थे। होली के पहले उनकी सगाई तय हो गई थी शादी होली के बाद होनी थी। सभी दोस्तों ने मिलकर योजना बनाई और उनकी मंगेतर को होली खेलने आने के लिए तैयार कर लिया। यह बात चाहिए चाचा जी को नही बतलाई चाचा जी ने अपने स्वाभाव के अनुरूप गढढा गोद कर रंग भर दिया। चाचा के वहाँ से हटते ही दोस्तों ने उस रंग में गाय का बदबूदार गोबर मिला दिया और ठडाई में बहुत सारी भांग मिला कर चाचा को पिला दी। भांग के नशे में सबने मिलकर चाचा को गढढे में डाल दिया भांग के नशे में चाचा ने अपनी मंगेतर को गढढे में दबोच लिया और प्यार करने लगे। सभी दोस्त यह देखकर बहुत चटकारे ले लेकर हंसने लगे। उनकी मंगेतर शर्म सार हो रही थी चाचा को कोई फर्क नहीं पड़ते देख वह गुस्से से दोस्तों का सहारा ले कर बाहर आ वापस चली गई। नशा उतरने पर चाचा को बहुत बुरा लगा उन्होंने अपनी मंगेतर से माफी मांगी। उनकी मंगेतर ने इस शर्तें पर माफी दी की वह हंसी खुशी उल्लास से होली खेलेंगे। किसी को न जबरदस्ती रंग लगायेंगे न तंग करेंगे।

--00--

आशीष की शपथ

आशीष को बचपन से लेन देन शब्द से चिढ़ थी। वह देखता की फूफाजी आये है या कोई जीजाजी तो पूरा परिवार उनकी आवभगत में लग जाता और सब ऐसा ध्यान रखते की किसी बात पर दामाद जी को गुस्सा न आ जाये कोई बात बुरी न लगे। और जाते समय नोट रख कर लिफाफा जरूर दिया जाता है। वह अपनी मम्मी से इसका कारण जरूर पूछता। शुरू में मम्मी बहला देती पर वह बड़ा हुआ और समझ आने लगा की किसी के आते ही मम्मी देने की चिंता करने लगतीहै तो उसकी समझ में लेने देने के रिवाज का विरोध करने लगा। मम्मी समझाती की उसके अकेले सोचने से समाज का दस्तूर नही बदलेगा। पर आशीष ने कहा कि कमसे कम मै तो अपने लिए नियम बना सकता हूँ। उसने मम्मी से शर्त रखी कि वह लड़की जब देखने जायेगा जब मै शपथ लू की दहेज नही लूंगी तथा किसी भी प्रकार की पैर पढाई की रस्म पर नोट रखा लिफाफा नही लेगे। इस शर्त के साथ उसका विवाह हुआ उसने ससुराल में किसी से भी किसी प्रकार का कोई रुपया सामान या गिफ्ट नही लिया तथा अपने साथ अपने भाई व परिवार की किसी कीभी शादी में वह रुपया या गिफ्ट नही लेता न लेने देता। और सभी को देना लेना न करने की शपथ लेने कहता है समाज के रस्मों रिवाज गलत प्रयोग केलिए खिलाफ,...

पांच साल से वह सबको अपनी शपथ में शामिल करने की कोशिश करता है,...।

--00--

बचपन की शरारत

बचपन के किस्से सुनकर मुझे भी अपने बचपन के अवसर याद आ रहे हैं जिसमें हमने अपने मुहल्ले वालो को काफी तंग भी किया डांट भी खूब खाईं और बहुत सबका लाड़ प्यार मिला पहले ऐसा नहीं था कि घर के लोग ही ध्यान रखें डांटे या प्यार करे सारा मुहल्ला हम सबको साथ में खेलते देखता था और गलती करने पर मुहल्ले के कोई भी बडे चाचा मामा चाची मौसी डांट देती थी। गर्मी के दिन थे और हमारी धमतरी छोटा शहर या कस्बा सा था। गर्मी में बहुत ज्यादा बिजली आफ हो जाती थी जिसके कारण सभी घर के बाहर विशेष कर खेलने का मैदान था उसमें बैठकर बाते करते और सभी बच्चे मिलकर खेलते रहते। एक दिन हम लोगो ने बडो़ को बातें करते सुना की बनिया पारा में बहुत ज्यादा टोहनी है और वह भूत प्रेत से सबको डराती है। बस क्या था मैंने और मेंरी तीन सहेली ने सबको डराने का प्रोग्राम बना डाला। हमने पड़ोस के चाचा के घर का कछुआ चुरा लिया और रात को बिजली के चले जाने पर अंधेरे में कछुआ को छोड़ दिया और उसकी पीठ पर मोमबत्ती जला दी। सबको कछुआ दिखाई नहीं देता था और जलती मोमबत्ती दिख रही थी इधर उधर भागती। मैं और मेंरी सहेली जोर जोर से चिल्लाने लगी भूत है भूत। चारो तरफ हल्ला मच गया आज से चालीस पैतालीस साल पहले लोग जल्दी भूत टोहनी पर विश्वास कर लेते थे। सबको परेशान देखकर हम लोग बहुत खुश हो रहे थे। हम लोगो को देख कर बंशी चाचा को कुछ शंकर हुआ और वह मोमबत्ती के पीछे चलने लगे और हमारी शैतानी समझ गए। उन्होंने सबको शांत कर अपने घर भेज दिया किसी को हमारी शरारत के बारे में नहीं बताया पर अकेले में बहुत डांटा। और कछुआ को तंग करने के लिये डराया की वह अपना बदला जरूर लेगा। तथा भूत के नाम पर हमने सबको तंग किया है इसलिए भूत और टोहनी भी नाराज है और बदला लेगी। जल्दी ही लेगी। काफी दिनों तक हम इस बात से डरते रहे की कछुआ पता नहीं कैसे बदला लेगा। रोज चाचा को चिंता करके पूछते की सच में भूत बुरा मान हमको तंग करेगा। जब चाचा ने कहा कि मैं भी तुम्हारी तरह शरारत कर रहा था तब चिंता खत्म हुई और रो रो कर चाचा को अपने काक्का बाई (पापा मम्मी) को न बताने का वचन लिया। आज भी अंधेरे में वह कछुआ वाली घटना याद आती है। बचपन के वह शैतानी भरे अवसर।

--00--

उड़ान

आज ममता का मन मयूर थिरक थिरक कर नाच रहा था। पंछी मन उड़ा जा रहा खुले आसमान में। मन कह रहा था जितनी उड़ान भरना चाहो भर लो। और हो भी क्यूँ ना मन खुश उन्होंने आज अपनी बेटी की बात सुनी और उसका सपना साकार करने करने में अपना सम्पूर्ण तन मन धन लगा रही थी। उसकी बेटी ने इंजीनियर बनकर दो वर्ष जॉब कर लिया था और वह यू.एस. जाकर एम.एस. करना चाहिए रही थी। पर ममता के परिवार व रिश्ते दार बराबर जोर दे रहे थे कि लड़की को कहाँ अकेली भेजी। साथ ही तीस लाख रुपये की जरूरत थी। इतने में तुम आराम से बेटी की शादी करके उसका घर बसा दो। पति भी सभी के साथ उनकी हां में हां मिला रहे थे। अंहिसा बेचारी कुछ नही कर पा रही थी। उसकी शादी की बात चलने लगी हर जगह शादी में होने वाले खर्च और दहेज पर टिक जाती। और रिश्ता नही हो पारहा था। एक दिन अंहिसा ने अपनी माँ से कहाँ की वह जितने रुपये शादी में खर्च करोगी उतने में एम.एस. कर लगी और उससे ज्यादा कमाकर लाऊंगी। और मेंरे काबिल लड़का खुद मेंरा हाथ मांगेगा आप एक कोशिश करिये। और वह सब सच हो गया। अंशिका ने एम एस किया और उसकी पढाई और जांब से प्रभावित होकर सौरभ ने उसका हाथ मांगा। आज उसकी बेटी की सगाई है बीस दिन बाद शादी। उनकी आशाओं ने एक नई उड़ान भरने लगी।

--00--

आखिरी

माँ में इस लड़की से ही शादी करूँगा कहते हुए सिद्धार्थ ने एक अपूर्व सुंदरी को सामने खड़ा कर दिया। अल्पना आगे आकर माँ का आशीर्वाद ले लो। और अल्पना ने आकर पुष्पा के चरण छू लिये। पुष्पा अल्पना की सुंदरता से प्रभावित हो गई और इतना ही कहा- मै पापा से बात करूँगी। शाम को दिनेश घर आये तो पुष्पा ने अल्पना के बारे में बताया और सिद्धार्थ की इच्छा बताई। दिनेश ने दो चार दिन का टाइम मांगकर लड़की के बारे में जान कारी ली तो उनके पैरों तले की जमीन खिसक गयी। घर आकर उन्होंने ने पुष्पा को अल्पना की जानकारी दी व शादी के लिए मना कर दिया। परंतु सिद्धार्थ पर तो अल्पना के रूप का खुमार छाया था वह किसी बात को मनाने को तैयार नहीं था अंत में थककर दिनेश ने शादी कर दी। अल्पना ने घर में आते ही अपना असर दिखाना शुरू कर दिया,... वह रुप की जितनी सुंदर थी उतनी ही स्वभाव और सोच तथा व्यवहार में कठोर और निष्ठुर थी। हर बात पर वह दहेज प्रताड़ना का इलजाम लगा देती। और सिद्धार्थ को शिकायत करती सास और ससुर की। चार माह बाद सिद्धार्थ के बाहर जाने पर तथा सासु के घर पर न रहने का फायदा उठाया। उसने ससुर पर छेड़ खानी का आरोप लगा दिया और ब्लैक मेंल के नाम पर पुरी जायदाद अपने नाम करवा ली। तथा यह जायदाद की बात सिद्धार्थ को बताने मना कर दिया। नही तो वह दिनेश की छेड़छाड़ बता देगी। दिनेश का डरना ही उनकी बरबादी का कारण बन गया। अब वह और निरकुंश होती जा रही थी। एक दिन पुष्पा ने गुस्से में हाथ पकड़ लिया तो उसने खुद को ही मार कर अपनी चोट दिखा पुलिस थाने में दहेज के लिए घरेलू हिंसा के तहत जेल भिजवा दिया। इन सबमें अल्पना की माँ पिता का पूरा सहयोग रहता था। जेल से जमानत पर आने पर पुष्पा और दिनेश ने उसे घर से जाने कहा तो जायदाद के पेपर दिखाकर उसने उन्ही को निकाल दिया। अब वह सिद्धार्थ पर अपना रंग दिखाने लगी। अपने आशिक को घर बुलाती और सिद्धार्थ के मना करने व गुस्सा होने पर वह उसको घरेलू हिंसा के लिए जेल भिजवा दिया। सिद्धार्थ को अपनी गलती पर बहुत क्षोभ तथा आत्मग्लानि हुई। और एक दिन उसने बहुत बड़ा कदम उठा लिया। एक रात को उसने अल्पना को धोखे से जहर देकर मार दिया तथा स्वयं ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। अपने मम्मी पापा के लिए पत्र में अपनी गलती के लिए आखिरी क्षमा मांगते हुए लिखा मैंने आप लोगो की बात न मानकर गलती की थी। मैं अल्पना को समझाकर,... थक गया वह मुझे तलाक देने को तैयार नहीं थी व मेंरी हर बात की सजा आप लोगो को देतीं थी इस लिए में अल्पना का अंत करके आपलोगो का कष्ट दूर कर रहा हूँ और जो दुख मैंने दिये उसके लिए आखिरी क्षमा!

--00--

सास मां का गृह प्रवेश

नेहा बचपन से ही बहूत ज्यादा तेज स्वभाव तथा जिददी प्रवृत्ति की लड़की थी। नेहा की मम्मी लता को हमेंशा नेहा की चिंता रहती। बड़ी होने पर भी उसका स्वभाव जैसा का तैसा था। परंतु शादी तो होनी थी रुप रंग सुंदर था इसलिए रिश्ता जल्दी और अच्छी जगह हो गया। राजेश एक सरकारी अफसर था। नेहा ने गृह प्रवेश के दूसरे दिन से ही सबको अपने स्वभाव का नमूना दे दिया। परंतु नई बहू के कारण सब शांत रहे। नेहा का बर्ताव इसी तरह चलता रहा। जैसे तैसे तीन साल के बाद नेहा ने सास ससुर को घर में रखने से इंकार कर दिया। राजेश तो पहले ही बहूत परेशान रहता था क्योंकि नेहा दहेज उत्पीड़न,... तथा घरेलू हिंसा के नाम पर राजेश तथा सास ससुर को ब्लैक मेंल करती रहती थी। उस दिन भी उसने सास ससुर को स्पष्ट कह दिया कि अगर घर से नहीं गये तो वह रिपोर्ट कर देगी। मजबूरी में राजेश को मां पिता को अलग घर में रखना पड़ा। नेहा की माँ लता को अपनी बेटी के कारण बहूत कुछ सुनना पड़ता था। उन्होंने संकल्प लिया कीअब वह नेहा को सुधारेगी। पर इसके लिए उन्हें अपने बेटे तथा होने वाली बहू के साथ की जरूरत थी। नेहा के भाई ने मां की योजना अनुसार काम की रूप रेखा बनाई। नेहा को लेने के लिये वह उसके घर गया और शादी तक रुकने केलिए कहा। भाई की शादी के दूसरे दिन ही भाभी ने तमाशा दिखाना शुरू कर दिया। पांचवे दिन तो वह अड़ गई की सास ससुर अभी घर छोड़ दे। नहीं तो वह पुलिस में शिकायत कर देगी। नेहा के विरोध करने पर उसने नेहा की शिकायत पुलिस से कर दी। व पुलिस घर में नेहा से पूछताछ करने आ गयी तथा साथ में हथकड़ी लेकर उसके माँ पिता को पहनाने वाली थी। तभी नेहा ने अपने भाई को डांटने लगी भाई ने कहा वह भी जीजा जी जैसा मजबूर हैं। आप स्वयं सोचों अगर मैने विरोध किया तो मेंरी जिंदगी खराब हो जायेगी। नेहा की माँ ने कहा यह सब तो हर सास ससुर को सहना पड़ता है। नेहा को चक्कर आ गया और अपनी गलती का एहसास हूआ। दो घंटे बाद वह ठीक हो गई और अपने सास ससुर के पास जाकर अपनी गलती तथा अभद्र व्यवहार के लिए क्षमा मांगी। तथा अपने सास तथा ससुर को मान सम्मान के साथ घर लेकर आयी। तथा सास से कहा आपने मेंरा गृह प्रवेश लक्ष्मी कहकर किया था। पर आज आप महालक्ष्मी बन कर अपने घर में गृह प्रवेश करिये। नेहा की माँ भाई तथा भाभी भी नेहा के बदले रुप से तथा अपनी तरकीब काम आने से बहूत ज्यादा खुश हो रहें हैं।

--00--

माँ की परछाई

शैलजा काम कर के फुर्सत हुई थी कि मोबाइल की आवाज सुन कर तुंरत अंदर गयी देखा बड़ी भाभी का फोन था पूछा- कैसी हो दीदी,... आप कबसे धमतरी नहीं आई हो। आप को हम लोगो की याद नहीं आती है हम बहुत याद करते हैं जल्दी आना। ये समझ लो बाई(शैलजा अपनी माँ को बाई कहती थी) अभी भी है।

शैलजा की माँ तीन महीने पहले शांत हो गई थी जब से शैलजा मायके नही जा पाई थी। कुछ न कुछ लगा रहता कभी शादी में जाना कभी बहू को मायके जाना घूमने जाना। इस कारण समय नहीं निकाल सकी। माँ थी तो उनके लिए समय तो निकालना ही पड़ता था। नही तो बाई नाराज हो जाती कि किसी को मेंरी जरूरत नही है। मैं जिंदा रहूँ या मरू। उनके लिए हम सब बहन समय समय पर धमतरी जाते रहते थे। अब व्यस्तता के कारण और जरूरी नहीं रहा जाना। पर भाभी के कारण दो दिन को शैलजा बहू तथा पति को,...साथ लेकर मायके चली गई

मन में माँ की कमी तो बहुत खल रही थीं पर सभी भाई और भाभियों ने बहुत ध्यान रखा कहीं भी माँ की कमी महसूस नहीं होने दी। जब लौट रही थी तो लगा शैलजा को की बाई (माँ) अभी भी इस घर में है बड़ी भाभी के रूप में माँ की परछाई नजर आ रही थी। शैलजा को लौटते समय मन में सकून और चेहरे पर संतोष था कि बड़ी भाभी माँ की परछाई है और परछाई में हमारी माँ।

--00--

जीत

आज रंजना बहूत खुश थी उसने जो सोचा,... मन में एक अडिग संकल्प लिया था वह पूरा हो गया था अपनी जीत की खुशी के जश्न मानाते मानाते यादों के भंवर में फंसती चली गई जहाँ से कभी उसको लगता था कि जिंदगी के दलदल में वह फसी रह जायेगी और हाथ पैर चलाते धस जायेगी शायद यही अंत होगा उसका। पंरतु वह ऐसा नहीं होने देना चाहती थी। मन को मजबूत कर के उसने संघर्ष की राह चुनी थीऔर रंजना ने अपनी एक बेटी को इंनजिनियर और दूसरी को मनोचिकित्सक डाक्टर बना लिया था।

रंजना एक सुंदर पढी लिखी लड़की थी उसके मायके की गिनती रईस खानदान में होती थी इसी कारण उसका विवाह भी एक इज्जत दार रईस खानदान में हूआ। कुछ साल तो वह ससुराल वालों की नीति समझ ही नहीं पाई और न ही अपने पति को। समय के साथ वह दो बेटियों की माँ बन गयी। उसके पति भुवन में को रईस घर के बिगड़े नबाब के सभी गुण थे। रंजना सिर्फ घर की सजावटी बहू थी और कुछ नहीं। ससुराल वाले को उससे एक लड़के की उम्मीद बना रखी थी। रंजना को इस बात से कोई परेशानी न थी। पर जब उसको महसूस हूआ कि सम्पन्न परिवार सिर्फ एक दिखावा है वे उसकी बेटी और स्वयं रंजना को नौकर से ज्यादा अहमियत नहीं देते हैं। न ही लड़की को अच्छी शिक्षा दिलाने वाले है तो वह विद्रोह कर बैठी की वह लड़के को जन्म तब देगी जब दोनों बेटी के लिए उचित शिक्षा का वचन देगें। पर ससुराल वालों इसके लिए तैयार नहीं हूये। और उसी रात रंजना ने ससुराल छोड़ ने का संकल्प करके घर से निकल गयी। ससुराल वालों ने निकाल दिया है जानकर भाभी ने भी जीना मुश्किल कर दिया और रंजना ने मायका भी छोड़ दिया और जो भी काम मिल जाता अपनी मेंहनत से करके दोनों बेटियां को पढाती रही और आज उसकी दोनों बेटियों ने मां की मेंहनत का ईनाम दिया था। एक सम्पन्न परिवार की बेटी और बहू ने अपने संकल्प पूरा करने के लिए हर प्रकार की परिस्थिति का सफर तय कर लिया था। और आज वह स्वयं से भी जीत गई थी

सिर्फ बेटी के शिक्षा के लिए। आज उसने एक नया संकल्प भी लिया वह ऐसी हर औरत की ढाल बनेगी जो घर परिवार की इज्जत के नाम पर घुट घुट कर जीतीं है और अरमान को मन में समेंट मर जाती है।

--00--

विसर्जन

कमला झाड़ू पोछा बर्तन किया करती थी उसके साथ छुट्टी के दिन उसकी नौ वर्ष की सलोनी भी श्री वास्तव जी के यहाँ चली जाती थी। उस दिन गणेश स्थापना का दिन था। कमला ने घर को जल्दी जल्दी अच्छे से साफ किया। फिर मालकिन तथा उसके बेटे अनिरुद्ध गणेश जी की सजावट और तैयारी में करने लगे। समय पर गणपति की स्थापना हूई। यह सब सलोनी ने पहली बार ध्यान से देख रही थी। गणेश जी रखे तो पहले देखें थे। पर विधि विधान की पूजा देखकर बहूत खुश हूई। घर आते ही सलोनी ने बाल सुलभता से माँ से पूछ बैठी गणेश जी मालिकों के घर में ही क्यों रखे जाते हैं। कमला ने समझया की गणपति कोई भी श्रृद्धा भक्ति से रख सकता है। बस पापा के आते ही सलोनी ने जिद करने लगी कि बापू मै भी गणेश रखूंगी। सलोनी के बापू रिक्शा चलाते थे व सलोनी को बहूत प्यार करते थे। उसकी हर इच्छा पूरी करने की कोशिश करते थे। सलोनी ने पिता के साथ जाकर छोटे सी मूर्ति ले आई और एक आले में उसे रखकर दस दिनों तक पूजा की। चतुर्दशी के दिन अपने पापा से विसर्जन के लिए कहा तो उन्होंने उसे वादा किया की शाम को रिक्शा सजा कर उसमें गणपति को बिठा कर ले जायेंगे विसर्जन करने के लिए नदी। शाम को सभी लोग विसर्जन करने जा रहे थे सबने सलोनी से कहा कि वह भी चले पर उसने बापू के साथ जायेंगे कहकर मना कर दिया। रात को दस बजे गये पर सुमान नही आया रिक्शा लेकर। कमला व सलोनी दोनों परेशान हो रही थी। कमला जानती थी कि उसके पति को शाम होते ही शराब और जुआ दिखता है बस और कुछ नहीं। सलोनी की नानी ने सलोनी को मनाते हूए कहा कि वह अपने गणपति का विर्सजन मामा के साथ जाकर करदे। क्योंकि तेरा पिता तो अपनी आदतों का विसर्जन नहीं कर सकता है। नानी की बात सुन सलोनी ने पूछा नानी आदतों का विर्सजन कैसे होता है तब नानी ने समझाया तो सलोनी बोली आज बापू से मैं यह आदतों का विसर्जन जरूर करवाऊंँगी। जब देर रात को सुमान आया तो बेटी के रोते चेहरे को देख कर सारा नशा उतर गया। और सलोनी को मनाते हूए कहा जो माँगोंगी वह दूंगा। तब सलोनी ने कहा कि वह अपनी बुरी आदतों का विसर्जन गणेश जी के साथ कर दो। या मैं गणपति के साथ अपना विर्सजन कर दूगीं। सलोनी की जिद पर सुमान ने जुआ और शराब की आदत का विसर्जन भी कर दिया। क्योंकि उसे शराब से अधिक अपनी बेटी से प्यार है और वह बेटी के लिए कुछ भी करने को तैयार था। सलोनी अति खुश है।

--00--

पिंड दान- हक किसका

पिंड दान करने का हक आखिर बेटों को क्यूँ है माँ,... क्यूँ पंडित जी,... लड़की पिंड दान क्यों नहीं कर सकती,... ये कैसा रिवाज है माँ यह हक सिर्फ लड़को को क्यूँ?

गुस्से और दुख से आशा की आवाज भर्रा गयी थी। आज उसके पिता की बरसी थी और उसके भाई रघु को दादी और माँ पिंड दान करने के लिए सुबह से उठा रही थी पर वह कुभंकर्ण की भातिं सो रहा था उठने का नाम नहीं ले रहा था।

कल्याणी की लगातार पांच लड़कियां हुईं उसके बाद रघु का जन्म हुआ था। दादी और माँ की ममता और लाड़ में वह इतना बिगड़ गया कि शायद कोई अवगुण बचा हो सब के सब उसमें मौजूद थे। उसके पिता महेश चंद भी समझा कर मृत्यु को प्राप्त हो गये पर वह नहीं सुधरा तो नहीं सुधरा।

घर की हालत से उसका कोई वास्ता नहीं था। पांच लड़कियों और छठवां रघु का पालन पोषण करना कठिन था। लड़कियों ने छोटी उम्र से पापा का हाथ बंटना शुरू कर दिया था टूयूशन पढ़ाना,... सिलाई करना सभी काम करती थी। बड़ी बेटी शोभा ने तो पिता की मृत्यु के बाद घर का पूरा दायित्व संभाल लिया था उसने कसम लेली थी कि वह जब तक अपनी छोटी बहनों आशा,... निशा,... नेहा,... निकिता की जिम्मेदारी पूरी नहीं करेगी तब तक शादी नहीं करेगी। व माँ तथा दादी को अपने साथ ही रखेगी।

आज बरसी के दिन भी रघु के बिगड़े रवैया पर आशा बरस पड़ी। दादी और माँ से पूछ बैठी की जब सारे दायित्व दीदी पूरा कर रही है तो पिता का पिंड दानक्यूँ नहीं?

और दादी ने आशा के प्रश्न के उत्तर में वह शोभा का हाथ पकड़ कर पूजा में बिठा दिया और कहा कि शोभा को हक है तथा साथ में सभी बेटियां भी इस हक को निभा सकतीं है और शोभा करने लगी अंश्रु पुरित पिता का पिंड दान।

--00--

पहली करवा चौथ

शादी के बाद पहली करवा चौथ आई मुझे व्रत करना अच्छा लगता है और करवा चौथ के बारे में जो देखा व सुनते थे उससे लगा की हम भी व्रत करें। पर परेशानी यह की सासु माँ और दादी सास दोनों द्वारकाधीश गयी थी और करवा चौथ वाले दिन लौटना था। 33 साल पहले फोन की सुविधा इतनी नहीं थी कि बात कर पूछ लेते। बस हमने भी करवा चौथ का उपवास रख लिया और जैसे मायके में पूजा का विधान की तरह तैयारी कर ली पति देव से समान लाने कहा। लिस्ट में चूड़ी बिंदी लिखी,... तो वो दुकान में जाकर एक चूड़ी एक बिंदी ही मांगी,... दुकान दार ने हंसी उड़ा कर उन्हें एक डिब्बा चूड़ी एक पता बिंदी का दिया। इसतरह पूजा का समान आ गया और हमाने चौक डाल कर विधिवत पूजा की तैयारी कर ली। स्वयं भी शादी की साड़ी जेवर पहन श्रृंगार कर एकदम तैयार हो गये। हमारे देवर और पति सबको लेने स्टेशन गये थे मैं मन खुश हो रही थी कि सासु माँ सब देखकर तारीफ करेगी। क्योंकि की माँ को देखा था भाभी की दिल से बढाई करती थी। सासु माँ घर आई तो हमने सबको चाय नाश्ता कराया। व सासु माँ को हमने पूजा कमरा में बुलाया। अम्मा आई और हमें तैयार देख पूछा ऐसे क्यों तैयार हो,... अम्मा के प्रश्न पर मैं घबरा गयी और कहा करवा चौथ की पूरी तैयारी हो गई है इसलिए पूजा के लिए तैयार हो गई हूँ। तभी हमारी दादी सास ने कहा हमारे यहाँ यह व्रत नहीं होता है मान्य है।

अब तो मै एकदम सकते में आ गई मेंरी हालत देखकर सासु माँ ने मुझसे कहा कि तुम दिनभर से भूखी प्यासी रहकर,... सारी पूजा की तैयारी की है तुम तो हमारे बेटे के लिए व्रत कर रही हो,... उसका मंगल चाहती हो,...इसलिए आज कर लो आगे देखेंगे क्या करना है। एक साल में ही मुझे और मेंरी जिठानी को पुत्र हो गये। सासु माँ ने फिर मुझे कभी मना नही किया करवा चौथ व्रत को। 33 साल से मैं यह करवा चौथ व्रत कर रही हूँ। मेंरी सासु माँ ने मुझे व्रत का अभयदान दिया। परिवार में सिर्फ मै भर यह व्रत करती हूँ। और किसी को इजाजत नहीं है। सासु माँ के इस निर्णय का आज भी दिल से सम्मान करती हूँ।

--00--

प्रायश्चित

माया को आज अपने आप को बेबस देखकर समझ नहीं आ रहा था कि क्या करें। उससे ये क्या हो गया। आज वह तीन नन्हें चिड़ियों के बच्चे की मौत का कारण बन गयी। माया घर की सफाई कर रही थी घर में मकड़ी के जाले तोड़ते-तोड़ते उसे ध्यान आया कि बालकनी में भी जाला दिखाई दे रहा था और वह जल्दी-जल्दी दीवार पर जालाझाड़ू से जाला निकाल रही थी,... लापरवाही से जाला झाड़ू चिड़िया के घोसले से टकरा गयी और घोसला जमीन पर आ गिरा। घोसले में चिड़िया के तीन नन्हें नन्हें बच्चे थे जो जमीन पर गिर गये। माया ने उन्हें सावधानी उठाकर रख दिया। चिड़िया वही आसपास होगी और अपने बच्चों को देखकर बुरी तरह चहचहाने लगी जैसे वह घबराहट में सबको बुला रही हो रो-रो वह शोर मचाती रही। बहुत सी चिड़िया इकट्ठी हो गयी। तथा सभी शोर मचा रही थी पर कोई भी चिड़िया बच्चों के पास नहीं आ रही थी। तभी माया की पडो़सन श्यामा आयी,... तो उसको माया ने बताया कि घोसला उससे गिर गया था जमीन पर। और उसने बच्चों को ऊपर उठा कर रखा है। चिड़िया शोर मचा रही है बहुत रो रही है पर बच्चों के करीब नहीं आ रही है। तब श्यामा ने बताया कि पक्षी के बच्चों को इंसान छू लेता है तो फिर वह अपने बच्चों को हाथ नहीं लगाते हैं चाहे कितना भी दु:ख मनाते रहे। और माया बेबस चिड़िया को बेबस रोते तड़पते देखती रही और उसके सामने नन्हें बच्चे तड़प तड़प कर मरते रहे,... और माया बेबस खडी़ है घटना के बारे में सोचते-सोचते। क्यूँ छू लिया बच्चों को। हाय,...! बेबस चिड़िया माँ शोक में,.. हाय,... ।

--00--

बदलाव

आज श्यामली सुबह से बहुत खुश थी क्योंकि सुबोध चार साल बाद घर आया था रक्षा बंधन के लिए और यही सोचकर श्यामली खुशी से पागल हो रही थी सुबोध को उसने चार साल पहले बहुत दूर मंगलोर में पढ़ने के लिए भेजा था यह कहकर कि कुछ बन जाओ,... कोई डिग्री हासिल करो,... नौकरी करने लगो तभी शक्ल दिखाना। दो साल तो उसने सुबोध से बात भी नहीं की,... न मां को करने देती थी सुबोध की गलती और लापरवाही की सजा दी। सिर्फ इतना मतलब रखती की समय पर फीस और खर्च के रूपये भेज देती। और आज सुबोध ने बी.ई. करके यू.पी.एस.सी. की परीक्षा पास कर ली थी और आई.एस. में चयन हो गया था। ज्वाइनिंग के पहले वह मम्मी और दीदी का आशीर्वाद लेने आया था रक्षा बंधन के दिन।

श्यामली ने चौक पूर कर उसपर चौकी रखी सुंदर सी राखी और भाई के पंसद की मिठाई। मम्मी से सुबोध की पंसद का खाना बनाने की फरमाइश की। राखी की थाली तैयार करके वह सुबोध का इंतजार करने लगी।

सुबोध से श्यामली दस साल बड़ी थी जब सुबोध हुआ तो वह दिन भर गोदी लिए प्यार करती। दुर्भाग्य से सुबोध पांच साल का था तभी उनके पापा की एक्सीडेंट में मृत्यु हो गई और श्यामली की माँ शोभा को दुख के साथ घर संभालने की जिम्मेदारी भी आ गई और श्यामली ही सुबोध का पूरा ध्यान रखती वह स्कूल कालेज भी कम जाती घर में रहकर पढ़ाई करती सुबोध का ज्यादा से ज्यादा देखभाल करती। पढाई के बाद नौकरी कर रही और निश्चय किया कि वह शादी भी तभी करेगी जब सुबोध स्वयं अपने पैरों पर खड़ा न हो जाये। माँ के लाड़ और बहन के प्यार में सुबोध अपने मित्रों के साथ कुछ बुरी आदतों में फंस गया और श्यामली को जैसे ही यह समझ आया उसने बहुत दूर पढ़ने भेज दिया और बात न करने की सजा भी। फलस्वरूप सुबोध ने अपने को सुधार कर सुयोग्य बना लिया और वह माँ और बहन से मिलने रायपुर आ गया। सुबोध ने आकर श्यामली को दौनों हाथों से पकड़ कर चौकी पर बिठाया और माँ से पूछा राखी क्यों बांधते है शोभा ने कहा कि बहन की रक्षा कवच का यह रेशमी धागा भाई हाथ पर बंधवा कर उसकी रक्षा का वचन देता है। सुबोध ने कहा फिर तो इस राखी पर दीदी का हक है वही बचपन से आज तक मेंरी जिम्मेदारी देख भाल सुरक्षा करती है इसलिए मैं दीदी को राखी बांधूगा। और उसने दीदी को राखी बांध कर मुंह मीठा किया। शोभा को कुछ पल समझ नहीं आया कि वह इस बदलाव के लिए क्या कहे। क्योंकि सुबोध ने अपने तर्क से सही कहा कि समाज कुछ भी कहे पर दीदी हमेंशा रक्षा करती है। शोभा ने कुछ पल रुककर कहा ठीक है ऐसा ही करो। पर रक्षा बंधन त्यौहार तो भाई बहन के प्रेम का त्यौहार हुआ ना। और श्यामली सुबोध को गले लगा कर अपनी ममता की मुहर लगा दी।

--00--

अनुभव दादी का

कोरोना वायरस के चलते किसी को भी बुखार जुकाम या खाँसी हो रही थी सबकी घबराहट से जान निकल जाती है इसी तरह की परेशानी का सामना रजनी और समीर कर रहे थे। उनकी इकलौती बेटी टिंकल एम बी का कोर्स करने बाम्बे गई थी। कोरोना के कहर की लहर की सुनकर रजनी समीर ने अपनी बेटी को कार भेजकर बुला लिया था टिंकल को आये 15 दिन से ज्यादा हो गये थे। किसी प्रकार के लक्षण कोरोना वायरस के नहीं दिख रहे थे सब आशात्व हो गये कि टिंकल को बीमारी नहीं हुई है। अचानक एक दिन टिंकल को बहुत ज्यादा गले में दर्द और खाँसी हो गई अब तो रजनी का रो रोकर बुरा हाल हो रहा था समीर भी परेशान अब क्या होगा। कोरोना वायरस निकलने पर किसी मदद नहीं मिलेगी औऱ घबराहट बढ़ जायेगी।

टिंकल लगातार मम्मी पापा को समझाने की कोशिश कर रही थी कि मौसम का बुखार और जुकाम है पर उसके मम्मी पापा सुन नहीं रहे। उनकी हालत देखकर टिंकल ने पापा से कहा वह दादीजी को गाँव से बुला दीजिये वही मेंरे साथ रहेगी उनका अनुभव ही बतायेगा मुझे क्या हुआ है। समीर को अपनी मम्मी के अनुभव पर ब पूरा भरोसा था तबीयत की सुनकर दादीजी तुरंत आ गई। उन्होंने टिंकल के पास जाकर देखा,... छुआ और कहा कि टिंकल को कोई कोरोना वायरस का अटैक नहीं है। जाँच करवाने में कोई परेशानी नहीं है पर जाँच के न घबराओ और न ही अभी हल्ला करो। हाँ एतिहात बरतने में कोई हर्ज नहीं है और दादीजी ने टिंकल का पूरा ध्यान रखा। दादीजी के अनुभव के कारण टिंकल का सहजता से जाँच करवाई और कोरोना निगेटिव आया। दादीजी के अनुभव ने टिंकल का विश्वास डगमगाने नहीं दिया,...!

--00--

मार दुहू तौला

कोरोना वायरस के ही चारों ओर चर्चा हो रही थी। दस साल की झुमकी को कोरोना वायरस समझ नहीं आ रहा था कि यह क्या और कौन है कहाँ से आया है।

झुमकी की माँ यशोदा एक घरों में घरेलू काम बरतन,... कपड़ा झाड़ू पोछा करके अपना और अपने दोनों बच्चों की जीवन गाड़ी चला रही थी। शहर होता तो काम बहुत मिल जाता पर गाँव में इस प्रकार के घरेलू काम कम मिलते हैं और पगार भी अधिक नहीं मिलती। जैसे तैसे जीवन चल रहा था। पति तो पूरा पक्का शराबी था सिर्फ पीने से मतलब रहता था शराब न मिले या खाना पूरा घर सिर पर उठा लेता था अचानक कोरोना महामारी ने सारा जीवन अस्त व्यस्त कर दिया था। यशोदा को तीन दिन से बुखार सर्दी और खाँसी हो रही थी। सभी अड़ोस पडोस के रहने वाले ने आना जाना कम कर दिया।

सब कहते यशोदा पैसे की लालच में काम पर जाती रही अब भुगतों। झुमकी सब की बात ध्यान से सुन रही थी। अपनी बीमार माँ के पास बैठकर माँ से पूछा माँ ये कोरोना वायरस कौन है कहाँ से आ रही हैं मुझे बताओं ना। यशोदा ने झुमकी को समझाने के लिए कहा यह तो यह तो एक चुड़ैल है जो गाँव के बाहर से आयेगी।

अपनी माँ की हालत देख रही थी छोटा भाई भूख के कारण रो रहा था वह बाजू वाली काकी से खाना माँगने गई तो काकी ने दूर से खाना तो दे दिया पर कहा अब हमारे घर नहीं आना क्यों कि तुम्हारी माँ को बुखार है और कोरोना भी हो सकता है अब मत आना।

लेटे लेटे झुमकी को ध्यान आया कि गाँव के बाहर सभी गाँव वाले जाते हैं और पीपल के पेड़ को गाँव का द्वार कहते हैं हमेंशा कहते हैं इस पेड़ को पार करके गाँव पहूँच सकते हैं। झुमकी ने मन में ठान लिया कि वह इस चुड़ैल को मार देगी।

बस मन में विचार आते ही वह उठी और घर में खुरपी ढूँढने लगी। माँ से पूछने का कोई मतलब नहीं था क्योंकि माँ ही बापू के डर से खुरपी छुपा देती थी किसी को नशे में मार न दे।

झुमकी खुरपी ली और अपने बापू के गमछा से सिर और चेहरा बाँध लिया और पीपल के वृक्ष के नीचे कोरोना का इंतजार करने लगी।

सुधा को पुलिस विभाग में अहम जिम्मेदारी मिली थी कि हर गाँव का निरक्षण करें। और सभी गाँव में राशन सामग्री वितरित करें।

छ:गाँव का निरीक्षण करते उसे शाम हो गई। उसने अपने डाईवर से यह आज का आखिरी गाँव है सर्वे करने के लिए। जैसे ही गाँव की ओर गाड़ी बढ़ी,... सुधा ने देखा एक लड़की मुँह पर कपड़ा बाँध कर खडी़ है। गाड़ी रूकवा कर सुधा उसकी तरफ़ बढ़ी,... झुमकी ने अपने हाथ की खुरपी को मजबूती से पकड़ लिया। सुधा ने पुलिस वर्दी पर कोरोना वायरस से बचाव के लिए वह मुँह पर मास्क,... हाथों में दास्ताने पहने थी। जैसे ही वह झुमकी के करीब पहुंची झुमकी ने मार दुह् तौला कहकर उस पर वार किया एक हाथ से वार रोक कर सुधा ने पूछा तुम मुझे क्यों मार रही हो और उसने अपने टूटे फूटे शब्दों में समझाया कि गाँव में सभी कह रहे हैं कोरोना चुड़ैल है और उसे गाँव में नहीं घुसने दूँगी। भले तुम मुझे खा लेना पर मेरे गाँव और माँ भाई को छोड़ देना।

सुधा आश्चर्य से उस नन्ही निडर को देख रही थी जो जीत के लिए खडी़ थी बेखौफ,...!

--00--

बुटीक

तनुजा ने कभी सोचा भी नहीं था कि बचपन का शौक एक दिन उसकी जरूरत बन जायेगा। और यह अनुभव उसे इस तरह विख्यात कर देगा।

तनुजा को छोटे से ही गुड़िया गुड्डे सजाने का शौक था और वह उनके लिए सुंदर सुंदर डेस डिजाइन करके सिला करती थी इस तरह उसकी सिलाई अच्छी होने लगी। उसे अपने मायके में कभी सिलाई करने की जरूरत महसूस नहीं हूई क्यों की मायका सम्पन्न परिवार से था तथा शादी भी उमेंश से हूई तो वहभी अच्छे पद पर नौकरी करता था। इस तरह तनुजा अपने शौक के लिए अलग डिजाइन की डैस भगवान या गुड़िया के लिये बनाती रहती थी। अपने दोनों बच्चों के लिए भी कोशिश करती रहती वह सुंदर कपड़े तैयार करती। दुर्भाग्य वश तनुजा के पति का एक्सीडेंट हो गया और उसकी कमर के नीचे का हिस्सा निक्रिय हो गया। तनुजा के सामने अपने घर की व्यवस्था करना बच्चों को संभालने के साथ साथ धन की समस्या भी उत्पन्न हो गई। तनुजा पढ़ी लिखी थी पर समस्या यह की वह नौकरी करने जायेगी तो उसके पति उमेंश और बच्चों की देख रेख कौन करेगा। तब उसने अपने अनुभव काम आया। उसने घर पर रहकर बुटीक खोल लिया। और उसके बुटीक में सफलता मिली और दिनों दिन ख्याति मिली तथा धन की समस्या का निदान हो गया। बचपन का शौक और अनुभव से जिंदगी संवर गई,...।

--00--

मरबो अऊ का

सुकारो के घर तीन दिनों से चूल्हा नहीं जला था। बच्चे दो दिनों से भूखे थे। दस दिन पहले अचानक लाकडाला हो जाने के कारण सुकारो कुछ नहीं कर पाई थी सुकारो का गाँव छोटा सा था सभी सुविधाएं देर से पहुचती थी। पर कोरोना वायरस का खौफ ऐसा सिर पर चढ़ा की गाँव के लोगों ने आना जाना सब बंद कर दिया। दूसरे गाँव जाकर सामान लाना असंभव हो गया। छः सात दिन का राशन था घर में तो आठ दिन फिर भी चिंता करते बीत गये। अब सुकारो अपने दोनों भूखे बच्चे को देख कर दुखी हो रही थी। सुमान (सुकारो का पति) पहले ही रोजी रोटी के लिए सब साथियों के साथ काम करने जयपुर गया था। वह भी फंस कर रह गया है। अपने बच्चों को भूख से तड़पते देखकर सुकारो ने मन ही मन में निश्चय किया और बेटी से जल्दी आने को कह निकल गई घर से। जल्दी जल्दी उसको जाते देखकर पडोसी की शांता ने आवाज दी सुकारो कहाँ जावत हस,... चारों ओर कोरोना टोहनी जैसे झापात हावै

सुकारो ने ठिठकते हुए बोली- घर मा खुसरे खुसरे भूख ले मर जावो... तेकर सेती मैं पगार माँगे वर्ष और सामान लायवर जावथ हवौ। मरना होई तो मरवो... पर तड़प के भूखा नहीं मरन

सुकारो के साथ शांता भी चल पडी,... जैसे डर के आगे जी खडी हो,...!

--00--

तलाक

सलीम बस इंतजार,... इंतज़ार कर रहा है कि रेहाना शायद लौट आये। पर उसका इंतज़ार बढ़ता ही जा रहा है उसको लगने लगा कि अब कभी रेहाना लौट कर नहीं आयेगी। और क्यूँ आये?

सलीम शायद खुद ही प्रश्न कर रहा था और स्वयं में उत्तर ढूँढ रहा है,... यह सब उसके उतावलेपन के कारण हुआ था। उसका स्वभाव में था कि सोचना और सुनना कभी आता ही नहीं था बस पटाक से कुछ भी बोल देना,... परिणाम क्या होगा विचार ही नहीं करता।

उसकी बीबी रेहाना हमेंशा टोकती रोकती कि तुम्हारा उतावलापन तुम्हें बहुत महँगा पडेगा और "वह हंसकर कहता सस्ती चीज लेने का शौक नही है"

सलीम अपनी बुआ जान के बेटे को बिलकुल पसंद नहीं करता था उसे मालूम था कि रेहाना से शकीर भी निकाह करना चाहता था। पर उसके अरमान अधूरे रह गये और रेहाना का निकाह सलीम से हो गया। उसे देखते ही उसका दिमाग सतावे आसमान पर पहुँच जाता था। उस दिन भी ऐसा ही हुआ रेहाना ने शकीरभाईजान को नहीं बुलाया था पर उसे मालूम था कि आज रेहाना का जन्म दिन है और वह बिना बुलाये फूलों का गुलदस्ता लेकर रेहाना के घर पहुँच गया और जन्म दिन की शुभकामनाएँ दी। सलीम को देखते ही शकीर ने मजाक में कहा भाभी जान याद करे और हम न आये ऐसा कैसे होगा बस फिर क्या था सलीम ने,... न कुछ पूछा न सुना। बस रेहाना को देखकर गुस्से में तलाक तलाक तलाक बोलता चला गया। रेहाना और अम्मी,... शकीर आवाक रह गये। शरीयत के अनुसार रेहाना किसी से निकाह करके,... फिर तलाक ले तब सलीम की बीबी बन सकती है और शकीर ने रेहाना से निकाह कर लिया लेकिन तलाक नहीं दे रहा। सलीम अपने उतावलेपन के लिए सिर्फ इंतजार कर रहा,...!

--00--

पलायन

गाँव लौटने को केशव के कदम नहीं उठ रहे थे। पर मरता क्या न करता वाली हालात थे। केशव को पाँच साल पहले वाला गाँव गाँव की बात और अपनी अम्मा और बापू याद आ रहे थे। जिन्होंने उसको बहुत रोका था कि इस तरह अपने गाँव,... घर और परिवार को छोड़ कर महानगर में जाना उचित नहीं है पर केशव तो फिल्मों में बाम्बे देखकर और चकाचौंध से इस तरह प्रभावित था कि कुछ भी सुनना समझना नही चाहता था

अम्मा ने आखिरी दांव फेका कि शादी करके जाना,... नहीं तो जिंदगी भर ब्यौअ न होगा। और केशव शादी का इंतजार करने लगा। शादी के पाँचवे दिन ही अपनी पत्नी को लेकर बम्बई रवाना हो गया।

आज पाँच साल होगये थे गाँव से पलायन किये हुए। मुड़कर नहीं देखा गाँव को। लेकिन आज जब कोरोना का कहर महानगर पर पड़ा तो रोजी रोटी छूट गयी। लाखों मजदूर की तरह वह भी मजबूर हो गया। सिर छिपाने का ठिकाना न रहा ऐसी हालत में बापू से बात हुई तो बापू ने कहा लौट आओ केशव,... यह गाँव हमारी जनम भूमि,... करमभूमि सब कुछ है यहाँ के खेत खलिहान,... जंगलों में इतनी दौलत छुपी है बस हमें अपने हाथों की ताकत और बुद्धि लगाकर अपने गाँव को शहर सा रूप देना है। और केशव बम्बई को प्रणाम कर फिर से पलायन कर रहा है अपने गाँव अपनी जन्म भूमि के लिए,...!

--00--

मौत का इंतजार

आँख मूंद कर एक दुकान से सिर टिकाये बैठा था समारू। तभी पुलिस वाला समाने आकर आवाज देने लगा। कौन हो तुम,... क्यों बैठे हो यहाँ। तुम्हें पता नहीं यह पूरा एरिया सील किया है यहाँ पर बैठकर मरना है क्या। कोरोना से संक्रमित होकर समारू काम करने आया था दुकान पर और सोच रहा था जल्दी जल्दी ज्यादा समान पहुँचाकर अपनी मजूरी से खाना का समान ले जाऊँगा। पर यहाँ पहुँच कर पता चला लाकडाउन है काम ही नहीं मिलेगा। मजूरी फिर कहाँ है। समारू उठकर खड़ा हो गया पर सोच रहा है कहाँ जाऊँ,... यहाँ पुलिस रूकने नहीं देगी। घर पर बच्चों की भूख।

संक्रमण तो मन को लगा है। मौत भी निश्चित है। भूख से मौत,... या कोरोना से,...!

--00--

नीम का पेड़

यह नीम का पेड़ क्यों काट दिया भरत दादा जी ने घर में पैर रखते ही गुस्से से तमतमा कर बोले। दादाजी की गरजती आवाज सुनकर भरत भी घबरा गया। दादा जी का सामना करने की हिम्मत नहीं हो रही थी। दादा जी के बार बार आवाज देने पर भरत बाहर आ गया,... और सिर झुका कर खड़ा हो गया।

दादा जी दो दिनों के लिए अपनी बेटी के पास बनारस क्या गये,... नीरा को मौका मिल गया पेड़ कटवाने का। क्यों की नीरा जानती थी की दादा जी के रहते पेड़ कटवाना मुश्किल ही नहीं असंभव है।

इसलिए नीरा ने मौका पर चौका लगाया दिया। नीरा के सामने भरत कुछ नहीं बोल सकता था। नीरा सदा मनमानी करती थी। भरत को खमोश देखकर नीरा भी आकर खडी़ हो गई। दादा जी ने प्रश्न वाचक नजर से देखा तो नीरा ने कहना आंरभ किया,... दादा जी एकदम दरवाजे के पास यह पेड़ था जो अच्छा नहीं लगता था दिन भर यहाँ पत्तो का कचरा फैलता था। कितने सारे पंछी घोंसला बनाकर रहते थे सुबह से शोर मचा जाता था और दिनभर तिनका दाना फैला समेंटना पड़ता है। नीरा की बात पर दादा जी को बहुत क्रोध आया फिर भी नीरा को समझाते हुए कहा कि कचरा और शोर के कारण तुमने इतने हरे भरे पेड़ को कटवा दिया। उसके फायदा नहीं दिखा नीम के पेड़ के कारण घर तथा आसपास का वातावरण कितना शुद्ध रहता था। कितने सारे पंछी का आशियाना बना था सुबह शाम कितनी सुहवनी लगती थी पक्षी के शोर से। सुबह की भोर और शाम की संध्या का पता चल जाता था कितनी ठंडी ठंडी हवा मिलती थी शुद्ध आक्सीजन मिलता था और इस नीम की छाँव में बैठना कितना सुखद होता था सभी गाँव वाले इसके नीचे बैठकर अपना सुखदुख बाँटते थे। तुम्हारे जैसे लोगो ने धरती माँ का श्रृंगार छीन लिया है और इसको सूखी बंजर बना रहे हो। यह मात्र पेड़ नहीं था मेंरे स्वर्गीय बेटे बहू की याद में लगाया गया पेड़ था मेंरा बेटा और दादा जी वही बैठ गए जहाँ पेड़ को उजाडा़ गया था उनकी आँखों के आंसू मन की पीड़ा व्यक्त करने में असमर्थ हो रहे,...!

--00--

लाकडाउन

प्रणय बाबू को हमेंशा हरियाली और प्रकृति से लगाव था बचपन में इसलिए उन्हें नानी के घर जाना अच्छा लगता था क्योंकि उनके नाना नानी गाँव में रहते थे और वह गाँव में बहुत मस्ती करते थे जो शहर में मिलनी असंभव थी। इसलिए नौकरी लगने के बाद उन्होंने अपने लिए शहर से थोड़ी दूर पर फार्म हाउस खरीद लिया था और उसमें तीन चार कमरे का गेस्टहाउस बनवाया था तथा चारों खूबसूरत फूल पेड़,... फल और सब्जी लगवा कर तैयार किया था। सेवा निवृत्ति के बाद उनका विचार फार्म हाउस में रहने का था।

प्रणय बाबू की पत्नी रूपाली को फार्म हाउस में रहना पसंद नहीं था उनको शहर की चमक दमक में रहना अच्छा लगता था बच्चे दोनों बाहर रहकर पढाई कर रहे थे इसलिए प्रणय बाबू को मजबूरी में शहर में रहना पड़ता था वह हर माहिने जाकर निरक्षण कर आते थे।

कोरोना वायरस के कहर के कारण दोनों बच्चों को उन्होंने अपने पास बुला लिया था। लाकडाउन के कारण रिमझिम शांतनु दिन भर दो कमरे के फ्लैट में बोर हो जाते थे। प्रणय बाबू ने बच्चों का मन बहलाने के लिए फार्म हाउस में जाने का मन बना लिया बच्चे भी खुशी से जाने को तैयार हो गये। कम से कम फ्लैट में बंद से तो फार्म हाउस में रहना अच्छा होगा। सबने 15-20 दिनों के लिए आवश्यक सामान रखकर शाम को फार्म हाउस पंहुच गये। शाम के समय फार्म हाउस का मौसम सुहाना लग रहा था। बहुत से पंछी,... चिड़िया,... तोता,... मैना ने पेड़ों पर घोंसले बना रखे थे वे वापस आरहे थे सभी की चोंच में दाना तिनका था जिसे देखकर पंछी के बच्चे चहचहा कर शोर कर रहे थे भंवरे और तितलियों का झुंड इधर उधर उड़ रहे थे सूरज अस्ताचल हो रहा था इसलिए अपनी सिंदूरी रश्मियाँ समेंट रहा था जिससे आसमां सिंदूरी लाल हो रहा था उसकी लालिमा की आभा फार्म हाउस की छोटी सी झील को खूबसूरती प्रदान कर रही थी देखकर रिमझिम,... और शांतनु खुश हो गये। फार्म हाउस पर रहने वाले सारे नौकरों ने पूरा इंतजाम करके रखा था। सभी ने चाय के बाद टहलते रहे फिर खाना खाकर सो गये। पापा ने कहा था कि सुबह का नजारा बहुत सुंदर होता है इसलिए पापा से कहा सुबह जल्दी उठा देना। भोर होते ही प्रणय बाबू ने बच्चों को उठा दिया

आलस करते हुए जब रिमझिम और शांतनु बगीचे में आये तो नजारा देखकर अचंभित हो गये भोर का सूरज अपनी सिंदूरी आभा से श्रृंगारित होकर झील रूपी दर्पण में अपना प्रतिबिंब देख रहा था सभी तरफ चिड़िया,... मैना की चहचहाट गूंज रही थी कोयल आम के वृक्ष पर मधुर गीत गाते रही थी। सामने पहाड़ी हरियाली की चादर ओढ़ कर इतरा रही थी हवा के मंद मंद झोंके पेड़ों की डाल को झूला झूला रहे थे। रंग बिरंगे सुगंधित फूलों से लदे पोधे स्वयं सुंदरता का गान कर रहे थे। विभिन्न प्रकार के फल अपनी खुशबू बिखेर रहे थे। जैसे सब अपनी बाहों में लेने को आतुर हो। उनके प्रथम आगमन पर झूम झूम कर स्वागत कर रहे हो। सुहाना मौसम मदमस्त था देखकर सुंदर सूर्योदय का दृश्य रिमझिम और शांतनु आँखों में प्रकृति का अनुपम अदभुद स्वरूप देखकर खुशी से पापा से लिपट गये। पापा आप बहुत अच्छे हो आपने हमारे लाकडाउन के बोरिंग समय को प्रकृति के साथ रहने का शुभ अवसर दिया हम कभी नहीं भूलेंगे आज की भोर को जो जिंदगी की स्वर्णिम भोर बन गई हमारी,..।

--00--

प्रशंसा के बोल

हॉस्पिटल के वी आई पी रूम में बैड पर लेटी महक की बंद आँखों से आँसू बह रहे हैं। महक का मन अपने मन के दर्द को सहने में असमर्थ हो रहा है तन की तो उसे सुध ही नहीं है। कल रात को उसकी सर्जरी हुई है उसने अपनी एक किडनी अपने पिता को डोनेट की है उसके पिता माधव की दोनों किडनी इन्फेक्शन की वजह से खराब हो गई थी और उनकी बड़ी बेटी महक ने अपने पिता को किडनी दी थी और वह मन ही मन खुश थी कि आज तो उसकी माँ उसकी प्रशंसा करेगी। और वह बेसब्री से माँ का इंतजार कर रही थी। पर ममता ने आकर जैसे उसको अंगारों पर लिटा दिया और कानों में पिघलता शीशा भर दिया हो,.

उसे बचपन से आज तक की हर घटना आँखों के सामने नजर आ रही थी। महक जब दो साल की थी तभी उसकी माँ माया का स्वर्गवास स्वाइन फ्लू से हो गया था। पिता माधव मध्यम वर्गीय परिवार से थे अतः घर व बेटी को संभालने के लिए दूसरा विवाह किया था। उनकी दूसरी पत्नी ममता को महक बिलकुल पसंद नहीं थी। इसलिए महक को माँ की डाँट मार ही मिलती थी। उसपर उसका साँवला रंग। सोने पे सुहागा। कहते हैं माँ दूसरी तो पिता तीसरा। यह कहावत महक पर बिल्कुल सही थी इसलिए माँ पिता के प्यार को तरसती रहती।

संयोग वश उसके पिता माधव की किडनी खराब हो गई। महक को पता चलते ही वह किडनी देने को स्वंय ही तैयार हो गई। मन के कोने में आशा थी कि इससे माँ और पिता की प्रशंसा और प्यार मिलेगा।

आज पर जो हुआ उसकी कल्पना भी नहीं की थी महक ने। महक की दादी ने जैसे ही ममता से कहा आज मेंरी महक ने कितना तारीफ और हिम्मत का काम किया है अपने पिता को किडनी देकर नया जीवन दिया तभी महक की माँ बोली हाँ,... बड़ा तारीफ का काम किया है रंग रूप के कारण पहले ही शादी मुश्किल थी। अब सबको पता चल जायेगा किडनी डोनेट की है तो शादी न होगी कभी। जीवन भर मूंग दलेगी मेंरी छाती पर,...!

--00--

आ अब लौट चलें

साधना की आँखों में नींद नहीं थी वह जितना सोने की कोशिश करती,... यादों के समंदर में उतना ही डूब रही थी। बैचेनी से करवट बदल कर स्वयं ही परेशान हो रही थी। पर मन चंचल उसको बार बार सोचने पर विवश् कर रहा था। आज जबसे उसके दोस्त विक्रम ने यू ऐसे से फोन किया और उमेंश की जानकारी दी उससे उसकी नींद उड़ गयी और व्याकुलता बढ़ गयी। दिमाग कह रहा था बेवफाई की सजा मिली है तो दिल कह रहा था कि उमेंश के साथ जो हुआ शायद नहीं होना था,... या उसकी अपनी किस्मत का दोष था। उसका मन एक साल पहले की यादों में खो गया।

एक साल पहले दोनों ही पूना में एक अच्छी कंपनी में जांॅब करते थे। दोनों ही साफ्टवेयर इंनजिनियर थे। कालेज के दिनों से दोनों एक दूसरे को जानते थे और धीरे धीरे जान पहचान,... प्यार में बदल गयी। और दो साल पहले प्रेम विवाह कर लिया था। दोनों की जिंदगी अच्छे से निकल रही थी। अचानक उमेंश को उसकी कंपनी ने अमेंरिका जाने की सूचना दी। पहले तो वह साधना के बिना जाने को तैयार नहीं था पर साधना के समझाने पर वह अमेंरिका चला गया। तीन चार माहिने तो अच्छे से बीते फिर उमेंश का फोन आना धीरे धीरे कम होता जा रहा था। साधना के फोन को उठाकर फिर लगाने कहकर रख देता। पर कभी फोन नहीं आता।

साधना की फिक्र बढ़ती जा रही थी। साधना ने अमेंरिका में रहने वाले दोस्तों से जानकारी मालूम की तो उसको अपनी प्यार की दुनिया उजड़ती नजर आयी। इस विषय पर जब उमेंश से बात की तो उसने दो टूक जबाब दे दिया कि वह ऐलेना से प्यार करता है और शादी कर रहा है। साधना के जानने वाले और माता पिता ने उमेंश के लिए नोटिस भेजने कार्यवाही करने का पर साधना ने अपने को संभाल लिया और सबसे कह दिया प्यार स्वार्थी नहीं होता है अगर उमेंश ऐलेना के साथ खुश है तो वह खुशी से जिंदगी बसर करें

आज साधना को विक्रम ने बताया कि उमेंश बहुत बुरी हालत में है। उसकी पत्नी ऐलेना उसका सारा धन पैसा लेकर और कर्ज में डूबा कर भाग गयी है। वह वहाँ लोगों का कर्जदार है और उसे कर्ज दिये बिना आने भी नहीं मिल पायेगा

साधना का मन में उमेंश के लिए सोया प्यार जाग उठा। उसने सोचते हुए निर्णय लिया और मन में सकून केआते ही उसे नींद आ गयी। सुबह उठकर उसने कुछ दिनों के लिए छुट्टी का एप्लीकेशन भेजा। फिर आनलाईन ही उसने वाशिंगटन के लिए टिकट बुकिंग करके रात की फ्लाइट से वाशिंगटन पहुँच गयी। सबसे पहले विक्रम से मिलकर उसने उमेंश की सारी स्थिति की जानकारी ली। और अपने जमा रूपये से उमेंश का सारा कर्ज उतार कर सारे कर्ज मुक्ति के पेपर और अन्य कागजात तैयार कर पाये। उसके बाद वह उमेंश से मिलने पहुँच गयी। उमेंश उसे अचानक देखकर आश्चर्य चकित रह गया और शर्म से सिर झुका कर बैठ गया। साधना ने जैसे ही सारे पेपर उसके सामने रखे वह लज्जित हो हाथ जोड़ दिए। मुँह से शब्द नहीं निकल रहे थे सिर्फ अधर काँप रहे थे। साधना ने उमेंश के कंधे पर हाथ रखकर सांत्वना देते हुए भारत के दो टिकट रख दिये और उमेंश से कहा,... आ,... अब लौट चलें,... अपने घर,... भारत,...!

--00--

उतावलापन की सजा

आज जानकी की पुण्यतिथि है,... इतने सालों में सावित्री उसकी फोटो के सामने खड़े होकर न जाने कितनी बार अपने उतावलेपन के लिए क्षमा माँगी होगी,... कितने आँसु बहाये है और प्रायश्चित की आग में वह प्रति पल जलती रहती है। आज भी उनका मन बोझिल हो गया और वह जानकी को याद करते करते बीते चौदह साल पहले पहूँच गयी।

अच्छी तरह से उन्हें याद था जब जानकी का रिश्ता विनोद के लिए आया। वह विनोद और गौरीशंकर जी लड़की देखने गये। जानकी को देखकर तीनों ही अचंभित हो गये,... विनोद की किस्मत इतनी उम्दा होगी की साक्षात स्वर्ग की अप्सरा सी सुंदर लड़की मिलेगी। विनोद सावित्री और गौरीशंकर जी ने तत्काल हामी भर दी,... और रिश्ता तय करके आ गये एक माह में ही जानकी सावित्री की बहू बन घर आ गई। सावित्री देवी की खुशी का ठिकाना न रहा जब बहू देखने के समय सबने सावित्री की किस्मत की जी भर कर तारीफ की।

सावित्री स्वभाव से बहूत ही उतावली थी हर बात पर उग्र हो बोलने लगती। सोचने का काम न था। शादी के एक माह बाद ही विनोद को कंपनी के जरूरी से जापान जाना पड़ा। उसका मन तो था कि जानकी को साथ ले जाता पर वीजा न मिलने से वह नहीं ले जा सका। विनोद छै माह के बाद लौट रहा था तभी उसका विमान दुर्घटना ग्रस्त हो गया और विमान समुद्र में जा गिरा। विमान के एक्सीडेंट की खबर मिलते ही सावित्री और गौरीशंकर जी सकते में आ गये। जो बहू उन्हें लक्ष्मी सीता लग रही थी वह अब अभागिन,... कलमुँही डायन नजर आने लगी। विमान दुर्घटना का ठीकरा जानकी किस्मत के नाम फूटा,... सावित्री ने आव देखा न ताव देखा और जानकी को धक्का देकर निकाल दिया,... कहा जैसे मेंरे लिए विनोद मरा तू भी जाकर मर जा

जानकी घर से बेसुध सी चली जा रही थी न उसे अपना ध्यान था और न रास्ते पर होर्न देते ट्क का। और डाईवर जब तक ब्रेक लगाता और टक रोकता,... जानकी की टक्कर रफ्तार से आती गाड़ी से हो गई और जमीन पर गिरते ही पास पडे पत्थर से सिर फट गया और घटना स्थल पर ही मृत्यु हो गई। दो दिनों बाद विनोद का पता लग गया और उस दिन से उनका घर जानकी बिना सूना है शायद उतावलेपन की सजा से,...!

--00--

तोहफा

रेखा को हमेंशा तोहफा का लेने का बहुत शौक था। कोई भी उसके लिए कुछ भी लेकर आता तो उसे बहुत जल्दी रहती रैपर खोल कर गिफ्ट देखने की।

सतीश के साथ शादी होने के बाद वह हमेंशा रेखा के लिए शापिंग कराते थे जन्म दिन,... शादी की सालगिरह,... त्यौहार सभी पर उसे उसकी पसंद का सामान लेते तो वह कहती,... मुझे आप बाजार नहीं ले जाया करो,... आप खुद मेंरे लिए अपनी पसंद का तोहफा लाया करो तब सतीश हँस कर कह देते मैं तुम्हें एक दिन इतना अच्छा गिफ्ट दूगाँ,... और तुम जिंदगी पर मेंरे गिफ्ट पर सरप्राइज रहोगी की इतना अच्छा तोहफा मिला तुम्हें।

खुशी खुशी इस तरह जीवन के कुछ साल बीते। गर्मी के दिनों में रेखा अपने मायके गई थी। तभी उसकी भतीजे की शादी होने के कारण काफी समय मायके में रहना पडा़। सतीश ने रेखा को शादी की सालगिरह पर अपने ससुराल सागर पहूँचने कहा। शादी की सालगिरह साथ में मनायेंगे। इस लिए रेखा तत्काल टिकट करवा के सागर शादी के दिन रात को आठ बजे पहूँच गयी। स्टेशन पर सतीश की जगह अपने देवर को देख उसने पूछा भाईसाहब क्यूँ नहीं आये मुझे लेने,... देवर ने कहा तुम खुद बात कर लो,... मुझे स्टेशन आने कहा था इसलिए आ गया।

रेखा ने मोबाइल पर बात की तो सतीश ने कहा जरूरी काम से आया हूँ रात खत्म होने के पहले तोहफा लेकर आऊँगा। सतीश रेखा के लिए बहुत सुंदर सा तोहफा खरीदने के लिए इस दुकान से उस दुकान घूम रहा था। कभी ज्वेलर्स की दुकान,... कभी कपड़े की। अंत मैं उसने एक मंगलसूत्र और एक खूबसूरत साड़ी पैक करवाई और लिखवाया प्रिय रेखा को सरप्राइज नीचे लिखा
तुम्हारा सतीश गिफ्ट लेकर सतीश ने घड़ी देखी,... बहुत देर हो गई थी गिफ्ट के चक्कर में। वह मोटर साइकिल को तेज रफ्तार से घर की ओर बढ़ चला। पर अनहोनी अपने रूप बदल कर आ गई और तेज रफ्तार से जाते सतीश को बोलोरो ने भंयकर टक्कर दे दी। और सतीश की स्पॉट पर ही मौत हो गई।
रेखा इंतजार करते करते सो गई। अचानक रात को मोबाइल की रिंग टोन से नींद खुली देखा सतीश के नंबर से फोन था। उठा कर हैलो कहा उधर से किसी आदमी की आवाज आई यह मोबाइल किसका है तुम जानती हो
रेखा ने बताया मेंरे पति का है उसने कहा कि मैं पुलिस वाला हूँ ये मोबाइल मुझे मिला है किसी और का नंबर देदो। जिसका मोबाइल है उनका छोटा सा एक्सीडेंट हो गया है घबराने वाली बात नहीं है। रेखा ने नंबर दे दिया और इंतजार करने लगी। इंतजार करते करते सुबह हो गई सुबह बाहर गाड़ियों की आवाज और तेज कोलाहल सुनकर वह बाहर आई तो जिंदगी भर के लिए सरप्राइज हो गई। बाहर उसके देवर और रिश्तेदार सतीश की डैडबाॅडी गाड़ी से निकाल रहे थे। और उसके साथ सतीश का खरीदा तोहफा भी रखा था। रेखा इस सरप्राइज तोहफा के लिए खुद सरप्राइज हो गई,...!.

---00--

पापा होते तो

यशोदा देवी बैचेनी से करवट बदल रही थी। आँखों में भरे आँसू नींद को रोक रहे थे। रात दो बजे अचानक टिंकी की जोर जोर से रोने की आवाज आई तो,... वह उठ कर टिंकी के पास गई। और रोती हूई टिंकी को चुप कराने का असफल प्रयास करने लगी। परंतु टिंकी लगातार रो रही थी। टिंकी की बुआ और मम्मी उसे बहला रही थी। यशोदा देवी शांत न रह सकी और पूछा टिंकी इतनी रात को अचानक कैसे उठ गई,... और इस तरह मचल कर क्यूँ रो रही है।

तीन साल की टिंकी माँ की गोदी में सिसक रही थी,... क्योंकि बुआ का करारा तमाचा गाल पर पड़ चुका था। यशोदा देवी ने बेटी को डाँट कर बाहर जाने कहा और बुआ बड़बड़ाते हूई चली गई।

दादी के प्यार से पूछने पर टिंकी ने रोते हूए कहा कि गरम गुलाब जामुन खाना है जो बाहर बन रहे हैं और मम्मी,... बुआ मना कर रहे हैं और डाँट रहे हैं। बाहर हलवाई मिठाई और नमकीन बना रहा था क्योंकि सुबह अनिल बाबू (टिंकी के पापा) की तेरहवीं थी और तेरहवीं की पूजा और ब्राह्मण भोज के लिए भोजन तैयार हो रहा था।

यशोदा देवी अपने जबान बेटे की मृत्यु से अत्यंत दुखी थी। उनके बेटे अनिल की मृत्यु पीलिया बिगड़ जाने से हो गई थी। अनिल की दो बेटियाँ शिंदे और टिंकी इतनी छोटी और मासूम थी कि मृत्यु का अर्थ ही नहीं समझती थी। इसीलिए टिंकी गुलाब जामुन देख मचल गई थी पापा की लाड़ली बिटिया।

यशोदा देवी से जब टिंकी का रोना सहन नहीं हूआ तो वह हलवाई के पास जाकर बोली इस प्लेट में दो गुलाब जामुन देदो,... टिंकी के लिए वहाँ पर बुआ चाचा और जो तेरहवीं की तैयारी की देखरेख कर रहे थे बोले माँ जी ये तो तेरहवीं की पूजा और अनिल की थाली के लिए बन रहे है टिंकी को कैसे दे दे।

यशोदा देवी अचानक रोने लगी और बोली की आज पापा होते तो पहले अपनी बेटी को खिलाते तब खुद खाते। इसलिए अभी भी टिंकी को खिला दो फिर अनिल को खिलाना,... और अब उनकी आँखों से आँसू धार रूकने का नाम नहीं ले रही,...!

--00--

बेटी के लिए

मीना की शादी के पाँच साल बाद ही मीना के जीवन में भूचाल आ गया। अचानक उसके पति की एक दुर्घटना में मौत हो गई। मीना की तीन साल की बेटी और मीना की जिम्मेदारी घर परिवार पर आ गई। और मीना को दुख के साथ मन की व्यथा भी सहनी पड़ रही थी। उसने कोशिश की वह नौकरी करने लगे तो उसका वक्त आसानी से कट जायेगा। और रूपये की समस्या नहीं होगी। पर परिवार के लोग दुनिया क्या कहेगी का अलाप करते। मीना बंधन में फड़फड़ा कर रह जाती। मायके में माता पिता भी नहीं थे। जिनका सहारा मिल पाता। दुनिया के सामने मीना को हर प्रकार की सुविधा थी पर यह सुविधा के लिए उसे कितनी व्यथा झेलनी पड़ती थी दिन भर ताने सुनने में बीत जाते थे। मीना की बेटी सुमिरन बहुत होशियार थी कक्षा दूसरी की छात्रा थी पर आलराउंडर थी पेन्टिंग,... डास हर प्रकार की हस्तकला में। सभी प्रकार की प्रतियोगिता में उसे भाग लेना रहता था। इसके लिए उसे फीस के आलावा और खर्च बढ़ जाते थे। स्कूल भी अलग से जाना पड़ता था। एक दिन उसकी बड़ी मम्मी ने कहा अपने पिता को पहले ही खा गई,... अब क्या बड़े पापा को खायेगी। पैसे पेड़ पर नहीं फलते सुमि सब का अर्थ नहीं समझ पाई पर मीना ने तुरंत घर छोड़ दिया। और अपने रिश्ते दार के घर में कुछ दिन रूक नौकरी ढूँढ कर नौकरी करके अपनी लड़की हर प्रकार की शिक्षा दिलवाई। पेन्टिंग में उसकी प्रर्दशनी लगी और बहुत तारीफ के साथ इनाम मिले। मुख्य अतिथि के रूप में उसकी बड़ी मम्मी,... पापा स्टेज पर आये और उन्होंने ने जब सुमि से कहा कि वह किसी भी प्रकार की सहायता के लिए पूरा सहयोग करेंगे। तो सुमि ने कहा मेंरी माँ ने अपनी बेटी के लिए सब व्यथा को सह लिया है अब और व्यथा की जरूरत नही,...!

--00--

रोटी दो जून की

सलोनी और बिरजू दोनों शहर में ही रहकर मजदूरी करके अपनी गुजर बसर कर रहे थे। दोनों की मजदूरी से उनका व दोनों बच्चों का काम चल जाता था। बिरजू शांत और संतोषी स्वभाव का था वही सलोनी नाम के अनुरूप,... संवाली सलोनी तीखे नाक नकश वाली कसे बदन की खूबसूरत महिला थी। देखकर लगता नही था दो बच्चो की माँ हैं उपर हँसमुख स्वभाव और मेंहनतकश। देखकर कोई भी आकर्षित हो जाता था। बिरजू और सलोनी की गृहस्थी पर करोना की गाज गिर गई। शहर में सब काम बंद हो गये दोनों को दो जून की रोटी का जुगाड़ करना मुश्किल हो गया।

गाँव में भाई और माँ ने बुला लिया,... गाँव आ जाओ जैसे तैसे विपदा कट जायेगी। बिरजू और सलोनी गाँव आ गये। घर में रहने की व्यवस्था तो हो गई पर खाने की समस्या बन रही। बिरजू के भाई भाभी वही गाँव के ठाकुर के यहाँ काम करते थे। भाई बिरजू और सलोनी को काम माँगने के लिए लेकर गया। बिरजू को लिए ठाकुर ने काम नही है कहकर मना कर दिया। पर सलोनी को देखकर बोला तुम चाहो तो तुम्हें काम दे सकता हूं जिससे तुम्हें भूखे नहीं मरना पड़ेगा। ठाकुर के कहने के तरीके से सलोनी को काम समझ आया और मना करके आ गई।

तीन चार दिन तो कट गये पर पाँचवे दिन से खाने के लाले पड़ गये। दो तीन से भूखे बिरजू को चक्कर आने लगे घर के आँगन में गिर गया और सिर पर चोट आ गई। डाक्टर ने पट्टी करके दवाई देते हुए कहा खाली पेट मत खाना। बिरजू को लेकर सलोनी घर आई तो बच्चे भूख से रो रहे थे। सलोनी ने मन ही मन सोचविचार करके बिरजू से बोली अपना और बच्चो का ध्यान रखना मैं अभी दो घंटे में आती हूँ

कहारते हुए बिरजू ने पूछा कहाँ जा रही हो

सलोनी ने कहा अभी आती हूँ दो जून की रोटी कमाकर,...।

--00--

कांसै कहूँ

दो महीने से रेवती की मन की व्यथा से बैचेन थी। मन की व्यथा उसे एक पल का भी सकून देती थी। कई बार उसे लगता कि सारी गलती उसी की है न वह रमिया को काम रखती न उसके मन को इतनी व्यथा सहनी पड़ती और न ही उसके कारण रमिया को भी व्यथा और जिल्लत न मिलती पर अब वह क्या करे,... कैसे और किससे कहें।

रेवती अपने पति का स्वभाव जानती थी कि वह बहुत स्वार्थी है पर वह इतना नीच विचार रखता है और ऐसा करेगा सोचा ना था।

रेवती अपने घर काम के लिए हमेंशा बाई चुनकर और उम्रदराज महिला को रखती थी। उसकी काम वाली दुलारी अपनी बेटी के यहाँ गई थी और दामाद की मौत के कारण वही रूक गयी। उसने अपनी भतीजी को दो माह को काम करने भेज दिया। रमिया जबान और तीखे नैननक्श वाली साँवली आकर्षित करने वाली थी। रेवती का पति उसको देखकर बोला रमिया तो नौकरानी जैसी नहीं लगती,... अगर जेवर और अच्छे कपड़े पहनने लगे तो अच्छे घर की लड़की लगेगी। रेवती तुम इसे अच्छे कपड़े दिला देना।

रेवती ने उसके लिए दो चार जोड़ी कपड़े दिलवा दिये पैसे तो भगवान का दिया बहुत था। अब रमिया बिना झिझक के हर काम घर समझ कर करती थी। एक रमिया को रूपये चाहिए थे तो उसने रेवती से कहा। मालकिन आज रूपये की जरूरत है देदो। रेवती ने कहा पर्स उठाकर लाना। तभी पति कहने लगा तुम खुद रूपये निकाल लो डरने की क्या जरूरत है जब हम सामने है और रमिया की पर्स से रूपये निकालने की वीडियो बना डाली। रमिया को रूपये निकालने की वीडियो दिखा कर धमकी देने लगा कि मेंरी किसी बात को मना किया,... या किसी को बताया तो मैं जेल भेज दूगाँ। रमिया रेवती के पति के इशारे पर उसके साहब को खुश करती और मोहन उसका वीडियो बना फायदा उठाता। रमिया और रेवती दोनों ही धमकी से डरती है क्योंकि मोहन रमिया को जेल भेज देगा। रेवती व्यथित हो सोच रही है हमसफ़र गुनाहगार,... कैसे कहूँ अपनी व्यथा,...!

--00--

संवेदना की धरोहर

कल्पना ने एक चैन की ठंडी साँस ली और अपने आप से कहा,... कल्पना आज तूने अपने मन की संवेदना को इंसानियत से पूरा कर लिया है आज तुम स्वयं से जीत गई,... और अपनी कमजोरी को हरा दिया

कल्पना ने अपनी इंसानियत की भावना से पाली बेटी की शादी कर के विदा किया। फिर कल्पना सारे काम पूरे किये,... होटल का बिल,... बैड बाजे और नौकरों का हिसाब करके आँख बंद कर बैठी ही थी कि उसकी कामवाली शांता बोली मैम साहब आप आराम से चेयर पर बैठ जाओ मै आपके पैरों में तेल लगाकर मालिश कर देती हूँ। शांति तेल लगा रही थी और कल्पना अपने चौबीस साल पुराने समय पर लौट गई। कितनी बार लगा की वह सब पूरा करने लेगी वह भी सच्चाई बताकर। उसको पुराने दिन चलचित्र की भांति आँखों के सामने आने लगे। दुर्ग के पास छोटे से गाँव में उसका जन्म हुआ था वही तीन बहन भाई के बीच लालन पालन और शिक्षा पाई। बी ए पास करते ही उसके लिए रिश्ते देखे जाने लगे,... उसका बहुत मन था की वह नौकरी करके पिता का सहारा बने। मध्यम वर्गीय परिवार और पुरानी सोच वाले परिवार में संभव न हो सका। उसकी शादी भिलाई स्टील प्लांट में काम करने वाले मनोहर से हो गई और वह भिलाई ससुराल आ गई। परंतु जिंदगी को उसकी खुशी रास नहीं आई और उसके पति मनोहर का प्लांट दुर्घटना में मौत हो गई। पुराने सोच और कुरीतियों के चलते उसको बदनसीब और दुर्भाग्यपूर्ण समझकर ससुराल वाले ने मायके भेज दिया और मायके में भाभी के साथ रहते हुए उसे महसूस हुआ कि उसको भी आत्मनिर्भर बनना होगा और बस वही से उसने नौकरी की तलाश शुरू की। भाग्यवश उसे नौकरी जबलपुर के पास मिली। उसे नौकरी दूसरे दिन ही ज्वाइन करनी थी इसलिए वह टैक्सी करके जबलपुर के लिए निकली। रास्ते में चिल्पीघाटी के पार करते समय सड़क पर एक औरत लेटी दिखाई दी। उस सुनसान जगह पर शाम के समय। और उसने डाईवर से गाड़ी वहाँ रूकवा कर देखा एक भिखारन सी अभागन माँ मृत पड़ी थी उसके पैरों के पास खून से लथपथ नवजात शिशु रो रही थी शायद उसका तभी जन्म हुआ होगा और उसको जन्म देते हुए माँ मर गयी थी। कुछ देर तक तो कल्पना को समझ नहीं आया शायद उसकी संवेदना शाक्ति ने सोचना बंद कर दिया था। बहुत सोच विचार करने के बाद उसने उसे उठाया अपनी नेपकीन से पोछकर एक सूती साड़ी में लपेट कर वह अपने साथ ले आई। कल्पना को वह भी अपने जैसी अभागन सी वह प्रतीत होने लगी और उसकी संवेदना ने कहा नहीं मैं तुझे अभागन

नहीं बनाऊंगी,... और न कोई बदनसीब कह पायेगा तू मेंरे आँचल में रहकर मेंरी बेटी बनेगी। और कल्पना ने सारी दुनिया के सामने उसे बेटी मानकर पालन पोषण किया और उसका नाम वैदेही रखा। और आज उसका कन्यादान करके माँ का फर्ज निभा दिया। सब रिश्तेदार और जान पहचान वालो को इंसानियत की धरोहर का पाठ पढ़ाने दिया। आज वह बहुत खुश है अपनी संवेदना पर गर्व हो रहा,...!

--00--

दोहराता इतिहास

आकांक्षा दुल्हन बनकर तैयार खड़ीं है वरमाला डालने के लिए। बाहर से बाजे कि आवाज आ रही है। उर्मिला ने अपनी बेटी आकांक्षा को दुल्हन के रूप देखा। मन खुशी से भर गया पर वहाँ दो चार मेंहमान को देखकर उसका दिल भर आया। आज उसे अपनी शादी का दिन याद आ गया। आज से तीस साल पहले उसकी शादी के समय भी उसके कोई बहन भाई शादी पर नहीं पहुँच पाये थे। शादी के दो दिन पहले आतंकियों ने रेलवे की पटरी को बम से उड़ा दिया था और रेल में सफर कर रहे उसके भाई बहन मार्ग में जंगल में ही रह गये थे। और उसकी शादी उन लोगों के बिना उदास मन से हुई थी।

जब उसकी बेटी हुई,... तभी से अरमान मन था कि वह अपनी बेटी की शादी में सभी मेंहमानों,... विशेष कर अपने बहन भाई को पहले से बुला लेगी। और जो कमी उसने महसूस की थी उसकी पूर्ति कर लेगी।

आज उसकी बेटी की शादी है पर कोरोना महामारी के कारण न तो कोई बहन भाई आ पा रहे है और न ज्यादा भीड़ भाड़ की सरकार से इजाजत मिल पाई है बस किसी तरह बेटी की शादी कर रही है क्योंकि कोरोना महामारी दो चार माहिने में खत्म होने वाली नहीं है और न ही पहले जैसे भीड़ भाड़ और मेंहमानों को बुला पायेगी। जैसे उसने अकेलापन झेलते अपनी शादी की रस्में निभाई थी वही सब रस्में वह अकेले बेटी की निभा रही है। काश कोरोना तु न आती। शायद वक्त अपने इतिहास को भूला नहीं दोहरा रहा है,...!

--00--

कमाकर लाना

शरद एक बहूत ही बिगडा़ और आलसी था उसे जो चीज चाहिए तो चाहिए। खाने पर भी उसके सौ नखरे रहते थे। दरअसल में वह चार लड़की के बाद पैदा हूआ था इसलिए शरद को दादा दादी,... माता पिता के लाड़ ने अत्याधिक बिगाड़ रखा था। और बचपन के लाड़ प्यार ने उसे आलसी और निकम्मा बना दिया था। कोई काम न कमाई सिर्फ फरमाइश।

दादा दादी ने सोचा कि शरद की शादी कर देने पर जिम्मेदारी से वह कमाई करने लगेगा और सुधर जायेगा। शरद का परिवार धनी परिवार माना जाता था इसलिए लड़की भी जल्दी मिल गई। पर शादी के पाँच साल बाद भी उसका वही हाल था। माँ पिता,... दादा दादी परेशान हो गये थे क्योंकि बहू के साथ शरद के दो बच्चों का खर्च भी बढ़ गया था।

शरद के माता पिता और दादा दादी कमरे में बात कर रहे थे कि तभी उनको थाली गिरने की आवाज आई। साथ ही बहू की चीख। शरद की माँ दादी घबरा कर वहाँ आई तो देखा बहू के सिर से खून बहाने रहा है और खाने की थाली इसतरह पड़ी थी जैसे फेकी हो। शरद जोर जोर से चिल्ला रहा था मैंरे पसंद का खाना क्यूँ नहीं बना। शरद के पिता शरद की आवाज सुनकर बाहर आये और हालात देखकर बेकाबू हो गये,... उन्होंने ने दादा के हाथ से छड़ी छुड़ाकर शरद की पिटाई शुरू कर दी और गुस्से में घर से निकालते हूए कहा "तुम्हें बैठे बिठाये खाने मिलता है इसलिए रोटी की कीमत नहीं मालूम है आज तुम दो जून की रोटी की कमाई करने लगो तभी घर आना,... पता चलेगा कमाकर लाना",... !

--00--

श्रद्धांजलि

अनिल बाबू को गये तेरह दिन बीत चुके थे,... यद्यपि दुख और संवेदनाओं के वातावरण में सहजता घुल चुकी थी,... घर का हर सदस्य अपनी सामान्य प्रक्रिया में लग चुका था,... अनिल का छोटा भाई सुनिल दौड़-दौड़ कर तेरहवीं की व्यवस्था देख रहा था,... पंड़ित जी आ चुके थे लगभग पिंड़ का कार्य समापन होने में दोपहर तो हो ही जायगी।

सबकुछ सामान्य सा चल रहा था लेकिन वैसा था नहीं,... रात की घटना ने यशोदा देवी को अन्दर तक तोड़ दिया था,... पिंकी को लगे चाँटे की झनझनाहट की अदृश्य तरंगें अभी भी उद्वेलित कर रही थी। यद्यपि टिंकी उस चाँटे से सहम गई थी और रोते-रोते सो चुकी थी लेकिन यशोदा देवी के मन में कई प्रश्न जाग चुके थे।

अब क्या होगा? क्या टिंकी उपेक्षित हो जायगी? क्या बड़ी बहू अस्तित्व हीन हो चुकी है? घर टूट जायगा? सुनिल चुप क्यों रहा? घर के प्रति अनिल द्वारा कीये गये त्याग,... अपनी इच्छाओं का दमन सब व्यर्थ हो गया? क्या इस घर में अनाहूत शक्तियों का बोलबाला हो गया? क्या मुझे भी सब वही करना होगा जो दूसरे कहेंगे? मन बड़ा बेचेन सा हो गया था नाना प्रकार के विचार आ रहे थे,... यक्ष प्रश्न खड़े कर रहे थे,... सब गड़मड़ हो रहा था।

विचारों के झंझावात ने यशोदा देवी को घर के एक कोने में गुमसुम बैठने को मजबूर कर दिया था,... तो क्या यशोदा देवी संज्ञा शून्य हो गई थीं? कदापि नहीं,... मंथन तो चल ही रहा था। उसी समय आवाज आई कि "पूजा समाप्त हो चुकी है,... तेरह पंडितों को भोजन के लिऐ बैठाया जाय"। यह किसने कहा था यशोदा देवी समझ नहीं पायी थीं,... लेकिन घर का दृश्य बदल चुका था।

तेरह आसन लग चुके थे,... बुलाये गये अग्रणी तेरह ब्राहमण बैठ चुके थे उनके सामने पत्तल लग चुकी थी कि अचानक यशोदा देवी उठी,... उन्होंने एक निर्णय शायद ले लिया था और एक आदेशात्मक घोषणा सी की "ठहरो,... सबसे पहले टिंकी को बुलिओ और गुलाबजामुन की प्लेट लाओ,... पहला भोग टिंकी लगायेगी,... किसी को कोई आपत्ति ?"

स्तब्ध वातावरण को तोड़ते हूये यशोदा देवी ने आगे कहा " टिंकी का यह भोग ही अनिल की सच्ची श्रद्धांजलि होगी,... अब देर न करो "।

टिंकी गुलाबजामुन का भोग लगा चुकी थी,... बड़ी प्रसन्नता से खा भी रही थी,... यशोदा देवी की पनीली आँखों में अजीब सा संतोष दृष्टगोचर हो रहा था उन्हें लग रहा था अनिल की तस्वीर मुस्कुरा रही है।

--00--

तमांचा

अरे! अरे। अरे! साहब धोखे से आपकी गाड़ी में चला गया साहब माफ कर दीजिए। ग्यारह बारह साल का श्याम विनती करने वाले अंदाज में क्षमा माँग रहा था और कार से निकलने वाले नवयुवक ने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया और एक करारा तमाचा श्यामू के गाल पर जड़ दिया। श्यामू तमाचे वाले गाल पर हाथ रखकर अवाक एकटक कार के मालिक को देख रहा था।

श्यामू के माता पिता सब्जी बेचते हैं श्यामू भी जब तब उनकी मदद के लिए सब्जी के ठेले पर आ जाता है श्यामू के पिता सब्जी ताजी दिखे इसलिए सब्जी पर हरे रंग के पानी का छिड़काव करते रहते हैं। और उनकी तरह ही श्यामू भी अभी हरे रंग के पानी का छिड़काव कर रहा था कि अचानक सफेद रंग की नई कार व्ही एम डब्ल्यू आई और हरे रंग के पानी से खराब हो गई।

श्यामू की माँ ने कहा साहब धोखे से पानी चला गया

श्यामू के पिता ने नाराजी दूर करने के लिए कहा साहब बच्चा है जाने दो ना। गाड़ी का मालिक श्यामू के माता पिता की बात को अनसुनी करते हुये श्यामू से बोला आज से पंद्रह साल पहले मुझे भी ऐसा ही तमाचा एक कार वाले ने मारा था। जब मैं एक छोटे से होटल में बैरे का काम करता था। और चाय देने कार के पास आया तो उसकी कार गंदी हो गई थी चाय गिरने से मैं वह तमाचा कभी नहीं भूला,... और चुनौती के समान वह तमाचा याद रखकर इस कार तक पँहुच पाया हूँ!

श्यामू जो कार वाले की डाँट ध्यान से सुन रहा था बोला मैं भी यह तमाचा आपकी तरह कभी नहीं भूलूंगा साहब यह भी मेंरे लिए चुनौती है!

--00--

बूढ़े की अर्थी

सुबह से सारी कलोनी में हल्ला मचा कि रामदिन काका नहीं रहे। सुबह के पांच बजे उन्होंने अंतिम साँस लेकर संसार को अलविदा कह दिया। मौबाईल पर मैसेज आ गया कि अंतिम संस्कार के लिए बारह बजे का समय दिया गया है। मै भी कालोनी का सदस्य होने के कारण अंतिम संस्कार में शामिल होने पंहुच गया घर के सामने। सामने रामदिन काका की अर्थी बिलकुल तैयार थी शमशान घाट जाने के लिए। घर के अंदर पूर्ण शांति समझ आ रही थी जितने लोग बाहर दिख रहे थे सब के चेहरे स्थिर भाव लिए थे गम या विछोह का चेहरे पर नामोनिशान नहीं था न विलाप,... न क्रदन,...न मातम आँखों से कोई आँसू बहा रहा था। इकट्ठे हुए सभी लोग आपस में बात कर रहे थे कोई कह रहा था तीन माह से बिस्तर में पड़े थे अब कष्ट से मुक्ति मिली पड़ोस के चाचा कह रहे थे कि बहुत कष्ट था आज शांति मिल गयी काका को कोई कह रहा था काका बेबस और लाचार हो गये थे तभी किसी ने कहा काका को क्या मुक्ति मिली,... मुक्ति तो काका के घर के लोग को,... निजी रिश्तेदार को मिली,... जो लगे रहते थे तन मन धन से,...चलो बूढ़े की अर्थी को कांधा देकर,... सब मुक्त हो इससे,..!

--00--

अभ्यास

निकिता की आज खुशी का ठिकाना नहीं था उसे हस्तकला प्रतियोगिता में राष्ट्रीय पुरस्कार मिला था उसने भारत में सबसे सुंदर मिट्टी के बर्तन बनाने में निपुणता हासिल की थी निकिता को अपनी दादी की बहुत याद आ रही थी जिसके कारण वह आज यहाँ तक पहुँच पाई थी।

निकिता का जन्म कुम्हार के घर हुआ था वह प्रतिदिन अपने घर में पिता को चाक चलाकर घड़े सुराही दिया बनाते देखती थी। निकिता को पढ़ने का मन था उसने जिद करके पाँचवी तक की पढ़ाई कर ली थी पर आगे की पढ़ाई उसे दूसरे गाँव जाकर करनी पड़ती इसलिए उसके पिता ने साफ इंकार कर दिया।

निकिता को रोते देखकर दादी ने उसको प्यार से बहलाना चाहा। निकिता ने दादी से कहा कि वह भी आगे बढ़ना चाहती है नाम कमाना चाहती। जिससे गाँव व परिवार का नाम हो। तब दादी ने निकिता से कहा बेटा नाम कमाने के लिए सिर्फ पढ़ाई जरूरी नहीं है तुम अपनी लगन और मेंहनत करके कोई भी रास्ता चुन सकती हो और अपना लक्ष्य बनाओं और निरतंर अभ्यास करो तुम कोई भी कला का चुनाव कर लो जो गाँव में होती है। निकिता ने कहा दादी आप बताओ मैं क्या करूँ।

दादी ने उसे कहा तुम अपना चाक चलाना सीखते लो और उस पर सुंदर सुंदर बर्तन,... खिलोने और मूर्ति बनाओं।

बस क्या था उस दिन से निकिता ने अभ्यास करना शुरू कर दिया और फिर उसके मन की कल्पनाओं ने सुंदर सुंदर आकृति लेनी शुरू कर दी। आकृति पशु पंछी जानवर,... मूर्ति इंसान,... भगवान की खिलौना और तरह तरह के आधुनिक और प्राचीन बर्तन। सपनों के सुंदर रंगों का समायोजन से कलर ऐसे भरती की हर कलाकृति लाजवाब बन जाती आकषर्ण इतना होता की जो देखता खरीदने को तैयार।

गृह उद्योग के संगठन कर्ता,... तथा कई समाजिक ईकाई ने उसकी कला को प्रोत्साहन दिया। प्रदर्शनी लगवाई और चौदह साल के परिश्रम और अभ्यास से आज उसको राष्ट्रीय सम्मान से सम्मानित किया किया गया यह सब की हक़ तो दादी है ना निकिता केलिए,...!

--00--

दोष किसका

मीना की शादी को पांच साल हुए थे पर भगवान को शायद मीना से नाराजगी थी कि वह ज्यादा दिन तक पति का सुख प्राप्त नहीं कर सकी एक बेटी के होने के बाद मीना के पति का एक्सीडेंट में दुखद निधन हो गया। मीना पर दुख का पहाड़ टूट गया। परिवार की हालत भी मध्यम वर्गीय परिवार की थी इसलिए मीना को सर्विस के लिए तैयार होना पड़ा। पर कम उम्र की सुंदर लड़की का दुनिया में नौकरी करना कितना कठिन होता है यह मीना को अब पता लगा। मीना की बड़ी बहन ने अपनी इच्छा से मीना को दूसरी शादी के लिए राजी कर लिया मीना भी दूसरी शादी के लिए तैयार हो गयी। बस मीना चाहती थी कि शादी के बाद उसकी बेटी सुमिरन उसके साथ रहे। इस तरह का परिवार और लड़के की तलाश जारी हो गई और एक लड़का सुमि सहित मीना को अपनाने के लिए तैयार हो गया। माधव के साथ मीना की शादी हो गई और उसके साथ सुमि भी।

शादी के समय तो माधव तैयार हो गया था सुमि के लिए फिर किसी न किसी बहाने वह सुमि को अपनी बहन उषा के घर भेज देता। उषा सुमि को अच्छे से रखने का वादा करके ले गई। सुमि अब तक ग्यारह साल की हो चुकी थी वह अब अपनी माँ की मजबूरी समझती थी इसलिए उषा बुआ के पास रहने लगी। उषा बुआ ने एक दिन अपने पहचान के लड़के को सुमि के साथ सोने भेज दिया। वह लड़का सुमि के साथ जबरदस्ती करता। सुमि ने चाहा यह बात अपनी मम्मी को बताना पर उषा के कारण बता नहीं पाती थी। एक दिन सुमि ने चोरी से फोन करके मम्मी को बुला लिया। मीना सारी बात जानकर हैरान हो गई और सुमि को अपने पा ले आई। माधव सुमि को देखकर बहुत नाराज होता। उसके अपने बच्चे न होने के कारण वह सुमि का दर्द नही समझता था वह उसे मारता,... खाना नहीं देता और कई प्रकार से दंडित करता रहता। मीना बहुत परेशान थी उसकी बहन भी सुमि की जिम्मेदारी संभालने में असमर्थ थी। बड़े पापा मीना की दूसरी शादी से नाराज थे इसलिए कोई रिश्ता नहीं रखते थे। मीना की एक सहेली ने मीना से कहा कि वह सुमि को अपने छोटे भाई के घर भेज दे। मीना संकोच बस कुछ नहीं कह पा रही थी। सुमि की हालत देखकर मीना की सहेली ने मीना के भाई से बात करके सुमि को मीना के भाई के घर भेज दिया। जहाँ पर सुमि का भविष्य संवर रहा है पर तभी दुर्भाग्य वश मीना के दूसरे पति माधव को एड्स हो जाने से मृत्यु हो गई है मीना फिर अकेली हो गई। पर सुमि के भविष्य की सोच कर मीना सुमि से दूर रहने पर मजबूर है। पर किसी को समझ नहीं आ रहा है कि दोष किसका है किसे दोषी समझे,...!

--00--

शबरी के बेर

रामायण धारावाहिक सीरियल टीवी पर चल रहा था। रमा देवी के साथ उनकी सात साल की पोती पीहू और कृष्णा पोता भी रामायण देख रहे थे। रमादेवी अपने पोते पोती को अपने साथ रामायण देखने बैठा लेती थी और सभी पात्रों और रामायण की कई बातों को वह विस्तार से समझा देती थी। दोनों बच्चे भी जो समझ नहीं आता पूछ लेते थे।

उस समय सीरियल में शबरी का प्रसंग चल रहा था श्रीराम जी और लक्ष्मण जी शबरी के आश्रम पहुँचते हैं। शबरी श्रीराम लक्ष्मण को देखकर अत्यंत खुश हो जाती है और प्रेम वश अपने जूठे बेर खिला रही है यह देखकर पीहू ने कहा दादी श्रीराम जी तो भगवान है फिर यह उनको अपने जूठे फल क्यूँ खिला रही है आप तो पहले भगवान को भोग लगाती हो उसको समझाते हुए मैंने बताया कि शबरी श्रीराम जी से बहुत ज्यादा प्रेम करती थी इसलिए वह अपने जूठे फल खिला रही है कृष्णा कहने लगा प्रेम में कोई जूठे फल खिलाता है। मैंने कहा कि जब कोई बहुत अधिक प्रेम करता है तो जूठे पर विचार नहीं करता। भक्ति में वह भगवान को सब खिलाता है और वह खा लेते हैं। दूसरे दिन मैं पूजा कर रही थी और फल काट कर भोग लगाने वाली थी कि पीहू ने जल्दी जल्दी सब फल जूठे कर दिए मैंने गुस्से से उसे देखा तो वह मासूमियत से बोली दादी मैं भी कान्हा जी को बहुत प्यार करती हूँ ना इसलिए देख रही थी सब फल मीठे है ना शबरी के जैसे,...!

--00--

मातृत्व की तरंग

कपिल और लीना की शादी को साल वर्ष हो चुके थे पर लीना माँ नहीं बन पाई थी। सारे टेस्ट,... करा लिये दोनों ने कोई कमी नहीं फिर भी मातृत्व का सुख नहीं मिला। पूजा मनौती और जिसने जो कहा सब कर लिया पर कोई फायदा न हुआ।

कपिल ने बढ़ती उम्र के साथ वक्त न बरबाद हो इसलिए एक बच्चा गोद लेने की योजना बना डाली। उसका विचार था की घर में एक बच्चे की जरूरत है और अगर ईश्वर की कृपा नहीं तो यह कमी दूसरे अनाथ बच्चे लेकर कर लेते हैं। पर लीना को इस बात हमेंशा दुविधा रहती थी कि किसका बच्चा गोद ले रिश्तेदार,... भाई बहन का या अनाथालय से। अनाथालय का बच्चा पता नहीं किसका होगा कैसा निकलेगा। यह दुविधा

रिश्तेदार या बहन भाई का लेने पर बच्चे के बडे होने पर,... उसको पता चलने पर वह कैसा व्यवहार करेगा। मैं उसको सही प्यार दे पाऊँगी। संस्कार और परवरिश अच्छी न हुई तो सभी उगुँली उठायेगे कि गोद लिया बच्चा था। दुविधा ही बनी रहती।

कोरोना के कहर से लॉकडाउन के चलते सब मजदूर परेशान हो रहे थे। प्रवासी मजदूरों का आना जाना चल रहा था। कपिल और लीना भी लांयस संस्था से जुड़े हुए थे इसलिए सभी के साथ मजदूरों और जरूरत मंद को खाना के पैकेट बांटने में सहयोग कर रहे थे। उस दिन खाना का पैकेट देने के लिए कपिल और लीना रेलवे स्टेशन गये थे। वहाँ पैकेट बांटते समय लीना ने देखा कुछ भीड़ लगी है वहाँ जाकर देखा की एक औरत जमीन पर लेटी है और लगभग साल भर की बच्ची उसका आँचल पकड़े रो रही है उसके रोने से लीना का मन करूणा से भर उठा। मन में माँ की ममता हिलोरे लेने लगी। उसने वहाँ सभी से कहा बच्ची को गोद में क्यों नहीं उठा रहे हो। वहाँ पर उपस्थित लोगों ने कहा कि यह महिला मर चुकी है इसकी मृत्यु पता नहीं कैसे हुई,... अगर कोरोना संक्रमण रहा हो,... इसलिए बच्ची को कैसे ले,... तथा इन लोगों के साथ और कोई नहीं है। लीना ने आगे बढ़ कर बच्ची को गोद में उठा लिया और कपिल को आवाज देकर कहा इस बच्ची का कोई नहीं है इसको में अपनी दत्तक पुत्री स्वीकार करती हूँ। आज से यहमेंरी बेटी है,... कपिल से कहा,... तुम्हारी दुविधा,... लीना ने कहा मेंरी सारी दुविधा दूर हो गई आज,...!

--00--

आओ पेड़ लगाये

लाकडाउन के कारण बच्चे दिन भर घर में ही रहते न स्कूल जाना,... न पार्क में,... न दोस्तों के साथ खेलना। इसलिए बच्चे बोर हो जाते थे। इसलिए शीला देवी के साथ बच्चे सुबह सुबह प्रातःकाल की सैर को निकल जाते थे। दादी के साथ घूमने में मजा आता था।

पीहू और कार्तिक दोनों दादी के साथ घूम रहे थे तभी उन लोगों ने देखा बहुत सी औरत पीपल की पूजा कर रही है क्योंकि उस दिन शनिवार था और औरते शनि देव की पूजा के लिए पीपल की पूजा कर रही थी। पीहू और कार्तिक को बहुत आश्चर्य हुआ,... दोनों ने पूछा दादी ये सभी आंटी पेड़ की पूजा क्यों कर रही है क्या ये भगवान है।

शीला देवी उन्हें उसी पीपल के नीचे बने चबूतरे पर बिठाकर समझाने लगी,... पेड़ भगवान ही होते हैं बल्कि भगवान से बढ़ कर। ये हमें फल फूल सब्जी अनाज लकड़ी और मेंवा इत्यादि सभी कुछ पेड़ से मिलता है।

पेड़ हमारे जीवन रक्षक है ये हमें आक्सीजन देते हैं और हम जो कार्बन डाइऑक्साइड छोड़ते है ये ग्रहण करके शुद्ध वातावरण देते हैं इनसे धरती हरी भरी रहती है इनकी जडो़ के कारण मिट्टी रूकती है और धरती में जल का संग्रह होता है इनके कारण ही बरसात होती है पृथ्वी हरीभरी रहती है इसलिए हमें पेड़ लगाना चाहिए उसकी देख रेख करते रहना चाहिए।

पीहू और कार्तिक ने कहा दादी हम तो फ्लैट में रहते हैं पेड़ कहाँ पर कैसे लगायेंगे पेड़ जरूरी है तो हमें भी लगाना चाहिए। दादी ने कहा हम पेड़ अपनी कालोनी,... सड़क के किनारे,... तालाब,... पार्क,... अस्पताल,... और जो भी खाली जगह हो लगा सकते हैं। पर्यावरण दिवस पर सभी पेड़ लगाते हैं और पौधे बाँटते भी है लगाने के लिए जिनकी जमीन या खेत हो।

कार्तिक बोला दादी पौधे लायेंगे कहाँ से दादी ने कहा नर्सरी में सब तरह के पोधे की कलम मिलती है शीला देवी ने देखा दोनों बच्चे पापा के साथ सब्जी लेने जाने की जिद कर रहे हैं। और जब लौट कर आये तो उनके साथ बहुत से पौधे की कलम थी। वे दौड़ कर दादी के पास आये और बोले दादी ये बरगद,... नीम,... पीपल,... आम जामुन के पौधे हैं हम दूध वाले भइया के खेत में लगाने जायेंगे,...!

--00--

मेरी बगीया

रोहणी को हमेशा पेड़ पौधों से बहुत प्यार था,... सुंदर एक सी क्यारी बना कर सुंदर फूलों के पौधे,... धनिया पत्ती,... हरी मिर्ची,... पोदीना,... और कई प्रकार की सब्जियाँ लगाना उनका शौक था।

रोहणी की शादी सागर में हुई जहाँ हमेंशा पानी की दिक्कत रहती थी। पानी मिलता भी तो खारा।

सागर आकर रोहणी को अपने बागवानी के शौक को विराम देना पड़ा। एक दिन सब्जी धोते समय ध्यान आया कि क्यों न सब्जी धोने,... दाल चावल,... धोने,... और किचन के कई काम है जिसका पानी बेकार में फेंक दिया जाता है। बस क्या था रोहणी ने किचन गार्डन बनाने की ठान ली। घर के पीछे खाली जमीन पडी़ थी कभी गायभैंस को रखा जाता था वहाँ। बस क्या था समय मिलते ही अपने शौक को पूरा करने लगी। पहले क्यारी बनाई गमले लगाये और बड़े पेड़ को खाली जमीन के कोने में और नीम का पेड़ बीच में लगा दिया। रसोई घर का जितना उपयोग किया पानी,... मिलता सब अपनी बगीया में डाल देती। सासु माँ को तो यह काम अच्छा लगा सहयोग करने लगी। पर जिठानी,... और दादी सास दिन भर नाराज होती। रोहणी ने बच्चों को भी बाथटब में नहलाया शुरू कर दिया वह पानी भी वह बगीया में डाल देती। जैसी लगन से मेंहनत कर रही थी धरती माँ ने भी उतना उपकार किया और सुंदर सुंदर फूल से भगवान सजते,... घर की धनिया पत्ती,... पालक,... हरी मिर्ची,... पोदीना,... लौकी गिलकी टमाटर को देखकर सब का मन खुश हो जाता और जब पालक गिलकी के भजिये और घर की टमाटर धनिया की चटनी ने सबका मन मोह लिया। अब सब लोग रोहणी की तारीफ करते। साथ ही सब लोग सहयोग करने लगे। सबके सहयोग से घर तो घर आसपास के लोग भी तारीफ करते। वट सावित्री आँवला नवमी और शनिवार को पीपल गुरु वार को केले की पूजा घर की बगीया में करने का मज़ा सबको मिल रही था। और मोहल्ले में सभी के घरों में बगीया की हरियाली नजर आने लगी थी फालतू पानी का सदुपयोग देख,...!

--00--

वृक्ष भी लगाना

"बेटा आज कितने किलोमीटर सड़क का निर्माण हुआ है बेटा,... और तुमने सड़क के किनारे के कितने वृक्ष काट डाले है"।

दादा जी ने अपने नाती केशव से पूछा,... केशव ने सड़क बनाने का ठेका लिया था और वह सरकारी ठेका लेकर सड़क बनाता था।

"दादा जी आज तो पाँच किलोमीटर सड़क भी नहीं बन पाई है क्योंकि सड़क का चौड़ीकरण करना है इसलिए दोनों ओर के पेड़ को कटवा कर निकालने में काफी समय और मजदूर लग जाते हैं"।

केशव ने जबाब दिया- "बेटा तुम सड़क के किनारे से पेड़ काटकर रहे हो पर उससे दस गुना पौधे लगाते जाना,... जिससे पौधे विकसित हो पेड़ बने व सड़क पर ठंडक बनी रहे और शुद्धहवा और छाया सबको मिले" दादा जी ने केशव को समझाया।

ऐसा वाक्या हर दूसरे दिन दादा जी और पोते में होता रहता था।

केशव दादा जी कुछ भी कहते हाँ कह देता। पर उसे तो जल्दी से जल्दी अपना काम पूरा करना था। सड़क बनाने का ठेका लिया परंतु वृक्ष लगाने में उसकी कोई दिलचस्पी नहीं थी। अधिकारी भी थोड़े लेनदेन के चक्कर में सब अन्य बातों की तरह पेड़ लगाने पर भी ध्यान नही देते थे!

केशव इसीतरह सड़क बनाये जा रहा था तभी कोरोना का कहर टूट पडा़। और लॉकडाउन के चलते कम से कम मजदूर मिल रहे थे। केशव भी परेशान हो रहा था। एक दिन वह अपने साइड पर काम देखने जा रहा था रास्ते में कार बिगड़ गई। बहुत कोशिश के बाद भी स्टार्ट नही हुई। केशव ने कार से बाहर निकल कर देखा,... चिलचिलाती धूप फैली थी चारों ओर,... कही पर भी छाया का नामोनिशान न था। लाॅकडाउन के कारण सड़क पर वाहनों का आवागमन भी नहीं हो रहा था जिससे लिफ्ट ली जा सके। कितनी देर तक कार में बैठ कर इंतजार करता रहा कि कोई सवारी वाहनों या माल वाहनों ही मिल जाये। जिससे किसी गाँव तक पहूँच कर किसी गैरेज से मिस्त्री को लाकर कार सुधरवा सके।

अंत में थककर धूप में चलकर पाँच किलोमीटर दूर गाँव गया और वहाँ से एक मिस्त्री को उसी की गाड़ी में लेकर आया और तब कार सुधर पाई।

केशव को आज दादा जी की बात और छायादार वृक्ष की जरूरत समझ आई की पथिक के लिए कितने जरूरी होते हैं वृक्ष। जिसकी शीतल छाया में वक्त बिताया जाये। केशव ने उसी समय संकल्प किया कि वह जितनी सड़क बनानी है उनके किनारे पेड़ लगायेगा। और जो बना चुका है उस फिर से पेड़ लगाने जाना है और दादा जी से सब बात बताकर माफी माँगकर अपनी प्रतिज्ञा दुहराई,...!

--00--

बदला ऐसा भी

"छोड़ो,...छोड़ो,... मानव ये तुम क्या कर रहे हो मेंरे साथ" अपना हाथ छुड़ाने की कोशिश करती हुई आस्था बोली

"वही कर रहा हूँ तुम्हारे साथ जो,... तुम्हारे भाई ने मेंरी बहन के साथ किया है उसकी आबरू लूट ली,... लहूलुहान तन मन करके जिंदगी बरबाद कर दी है और तुम्हारी इज्जत तार तार करके बदला लूगाँ" मानव ने आस्था का दुपट्टा खीचते हुए बोला

"मानव तुम गलती कर रहे मेंरे भाई की गलती का बदला तुम मुझसे ले रहे हो" लेकिन ये गुनाह है सोहन भइया अपने गुनाह के लिए जेल में बंद है उनको उनके किये की सजा मिल जायेगी। तुम क्यूँ कानून से खेल रहे हो" स्वयं को बचाने का भरसक प्रयास करते आस्था कह रही थी।

"तुम पैसे वाले गुनाह करके,... कानून को खरीद लेते हो,... दोचार दिन में जमानत हो जायेगी और फिर सालों कोर्ट के चक्कर,... फिर कानून को धोखा देकर बेगुनाह साबित हो जायेगा। मैं इतने दिन बदले के लिए इंतजार नहीं कर सकता"।

जो दर्द मैं मेंरे परिवार वाले और मेंरी बहन झेल रहे हैं उसका बदला तुम्हारी आबरू है,... मानव वहशी पन से दबोचते हुए आस्था को बोल रहा था,... उसकी आँखों से बदले के अंगारे बरस रहे थे।

आस्था ने पूरी ताकत से मानव के हाथ पर काट लिया और दौड़ कर जाली के दरवाजा लगा लिया। मानव को समझाने वाले भाव से बोली मानव !!! मुझे तुम से तुम्हारी बहन मधु से पूरी सहानुभूति है पर यह बदला लेने का सही तरीका नहीं है इससे तुम्हारी ज़िंदगी बरबाद हो जायेगी और तुम्हारी माँ और बहन का क्या होगा।

"सोहन भइया और परिवार से बदला लेने के लिए तुम मुझसे शादी कर लो। ऊँचे खानदान और इज्जत वालों की बेटी को एक गरीब निम्न दबके वाले के घर की बहू बनते देखना सबसे बड़ी सजा होगी मेंरे परिवार और भइया के लिए। आत्म ग्लानि ही उनकी सजा होगी। "

मानव के मन से शैतानियत की जगह इंसानियत ने ले ली थी। पर वह शंकित स्वर में बोला और शादी के बाद तुमने अपना विचार बदल दिया और गलत बयान दिया तो आस्था बोली हम दोनों ही बालिग है इसलिए विवाह कर सकते हैं और मेंरी इज्जत ज्यादा महत्वपूर्ण है मेंरी जिंदगी से,...

मानव और आस्था एक दूसरे का हाथ थामें लक्ष्मी नारायण के मंदिर में पंडित के सामने खड़े थे विवाह बंधन के लिए,...!

--00--

जरूरत

नीरज को कैरियर वाले ने लिफाफा हाथ में दिया। वैसे ही उसने हड़बड़ाहट में खोला। नीरज को जैसे ही ज्वाइनिंग लेटर मिला,... उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। वह माहिनों से इस पल का इंतजार कर रहा था कि कब कही उसकी नौकरी लग जाये। रोज सुबह वह इसी उम्मीद से उठता था की शायद आज उसको ऑफर आयेगा। और शाम ढलते ढलते उसकी उम्मीद का सूर्य भी अस्त हो जाता था। वह जल्दी से अपने कमरे में आया। कल पांच बजे सुबह की ट्रेन से निकलेगा तब कही वह परसो सुबह दिल्ली पहूँच पायेगा। और जाते ही कंपनी में अपनी उपस्थिति दर्ज कर पायेगा। अपने पर्स और रूपये रखने की जगह से ढूँढ-ढूँढ कर रूपये एकत्रित किये पर रूपये मात्र दो सौ पचास ही हो रहे थे। उसकी चिंता बढती जा रही थी। उसने अपने दोनों जोड़ी कपड़े में प्रेस किया। एक पहन कर जाने व दूसरे जोड़ी कपड़े छोटे से बैग में रखे। थोड़ा सा जो समान था एकत्रित करके रखा। और सुबह का इंतजार करने के लिए रूकना व्यर्थ था। जाते जाते कमरे के मालिक को कमरा छोड़ने की बात कहकर निकलना चाह रहा था परंतु मालिक अपने दो सौ रूपये किराये के लिए बिना जाने नहीं दे रहा था। अंत में नीरज ने दो सौ रूपये कमरे के मालिक को देकर पैदल स्टेशन निकल गया। नीरज सोच रहा था पचास रूपये से कैसे वह दिल्ली की टिकट लेगा। और कैसे कंपनी तक पहूँच पायेगा बिना रूपये के। खाने की चिंता नहीं थी मजबूरी ने बहूत भूखा रहना सीखा दिया था। पर टिकट का क्या करे। इसी उधेड़बुन में वह रेलवे स्टेशन पहूँच गया। और एक बैच पर बैठकर भगवान को याद कर रहा था कि इस अजनबी के शहर में कोई मदद को आ जाये। लगभग चार बजे के करीब एक अधेड़ व्यक्ति नीरज के पास आकर बैठ गया। वह भी टेन का इंतजार कर रहा था। अचानक उसने नीरज से पूछा "बाबू कहाँ तक जाओगे"

नीरज बोला "दादाजी जाना तो दिल्ली है पर क्या करूँ,... कैसे जाऊँ समझ नहीं आ रहा है"

"क्यों बेटा क्या बात है बहूत परेशान लग रहे हो" अधेड़ व्यक्ति की आत्मियता पूर्ण बात सुन कर नीरज का धैर्य जबाब दे गया और उसने अपनी परेशानी बता दी और बोला " जिस नौकरी के लिए इतनी मेंहनत की ढेर सारे इंटरव्यू दिये वह सब व्यर्थ हो जायेंगे। बिना टिकट का सफर किया तो,... पकड़ा जाऊँगा और समय पर नहीं पहूँच पाऊँगा"। नीरज की बात सुनकर अधेड़ व्यक्ति बोला बेटा मेंरे पास जनरल का टिकट है दिल्ली तक और मेंरे पास तीन सौ रूपये है सो तुम टिकट और रूपये रख लो। जब तुम्हारे पास रूपये आयेगें तो मुझे फोन

करके भेज देना। मेंरा नंबर रख लो" लेकिन "दादा आप भी तो दिल्ली जारहे हो ना। नीरज उनकी बात सुनकर बोला।"

हाँ बेटा मैं दिल्ली अपने जीजाजी की तेरहवीं के लिए जा रहा था पर तुम्हारी जरूरत इस समय मुझसे बड़ी है इसलिए तुम चले जाओ। मैं अपनी बहन का दुख बाँटने फिर कभी चला जाऊँगा। मैं भी एक "मजबूर मजदूर हूँ और जरूरत अच्छी तरह समझता हूँ तुम्हारी जरूरत जरूरी है मुझसे",...!

--00--

दिखावा

सूरज,..."सुनो ना,... मेंरी बात को ध्यान से सुनो मुझे इतने अधिक तामझाम की शादी बिल्कुल पसंद नहीं है"

सूरज,... तो क्या करूँ,... तुम ही बताओ,... मम्मी पापा को समझाना बहुत मुश्किल है,.."

कुछ भी करो सूरज,... पर इसतरह ढेर सारे मेंहमान बुलाना,... इतनी अधिक साज सज्जा,... कितने सारा खाना,... कितने प्रकार का मीठा नमकीन,... सारे खर्च फिजूल के लगते हैं,... क्या हमारी शादी साधारण तरीके से तुम्हारे हमारे खास रिश्तेदार के बीच हो तो कितना अच्छा रहेगा,...

लेकिन निरूक्ति,...! पापा तो बहुत शान शौकत से मेंरी शादी करना चाहते हैं उनका बड़ा अरमान हैं कि मेंरी शादी वो धूप धाम से करें"

सूरज,... तुम किसी तरह पापा को मनाओं,...

मै भी अपने पापा को समझाने की कोशिश करती हूँ,...

"मुझे बहुत अच्छा लगेगा जब हमारी शादी सादगी से बिना भीड़ भाड़ के होगी,... शादी तो मन का बंधन है इसमें दिखावा करके मेंहनत की कमाई व्यर्थ में खर्च हो"

निरूक्ति की मनोकामना ईश्वर ने सुन ली थी कोरोना महामारी के चलते लाकडाउन चल रहा था और शादी में पचास लोग से अधिक शामिल नहीं हो सकते थे।

शादी का जो भी खर्च बच गया वह शादी की खुशी में जरूरत मंद मजदूरों की मदद के लिए देने का संकल्प कर लिया दोनों परिवारों ने,...!

--00--

दिवा स्वप्न सच हूआ

राधा शकुन्तला के यहाँ गृह कार्य करती थी। झाड़ू पोछा,... बर्तन,... कपड़ा,... और खाना बनाना। सभी काम में बहुत निपुण थी खाना तो बहुत ही स्वादिष्ट बनाती थी। शकुन्तला हमेंशा राधा की तारीफ करती की तुम्हारा खाना इतना अच्छा बनता है कि होटल में भी नहीं मिलता है स्वाद वाला। तुम अगर होटल खोल लो तो हाथों हाथ बिक जाया करेगा समोसा कचौड़ी,... मंगौड़ी।

रोज रोज सुनकर राधा को भी लगने लगता कि सच में होटल खोल ले। और उसकी आमदनी से अच्छा घर अपने बच्चों को अच्छी मँहगी शिक्षा दिला सकती है। अपने लिए कार बच्चों के लिए टू व्हीलर खरीद सकती है। उसके मन में दिन रात अपने सपने तैरने लगते। अपने पति से कहा तो उसने मजाक में उसकी बात उड़ा दी। उसका पति मदन बोला "राधा तुम्हारी मालकिन तुम्हें उल्लू बनाती है ताकि तुम तारीफ के कारण अच्छे से काम करो"।

एक दिन शकुन्तला ने जब तारीफ की तो राधा ने कहा "दीदी आप मेंरी झूठी तारीफ करके मूर्ख बनाती हो" शकुन्तला बोली नहीं "राधा तुम सच में अच्छा खाना बनाती हो मै तुम्हे सब्जबाग नहीं दिखाती हूँ और एक साल तुम रूक जाओ फिर में तुम्हारा सपना पूरा कर दूँगी। "

शकुन्तला ने राधा को स्वादिष्ट व्यंजन बनाने वाली प्रतियोगिता में हिस्सा दिलवाया। राधा प्रतियोगिता में प्रथम आई और उसे इक्कीस हजार रूपये इनाम में मिले। शकुन्तला ने राधा से कहा कि तुम अपने बच्चों की सहायता से इन रूपये से होटल नहीं एक चाट का ठेला लगाना शुरू कर दो। जिससे तुम्हारी आमदनी बढ़ने लगेगी। राधा के बेटे ने माँ के सपने को पूरा करने के लिए दिल लगाकर मेंहनत की। आज राधा की बड़ी सी होटल है बेटे की पढ़ाई कम हूई पर राधा के सारे दिवा स्वप्न पूरे हो गयें है स्वयं बंगले और कार की मालकिन है,...!

--00--

प्रमोशन

अंबिका! अंबिका!,... "तुम्हे पता,...मेंघा का प्रमोशन हो गया है" अंबिका ने जैसे ही ऑफिस में कदम रखा भारती ने कहा

लेकिन,..." तुम्हे,... कैसे पता चला "तुमसे किसने कहा"

अरे! स्वयं मेंघा ने बताया है और वह सबको मिठाई खिला रही है लेकिन ऐसे कैसे प्रमोशन हो गया,... स्वयं से बुदबुदा उठी अंबिका भारती,... तुम कुछ कह रही हो अंबिका,...

नहीं नहीं भारती कुछ नहीं

अंबिका सोचने लगी क्या मेंघा को भी वही आॅफर दिया है बाॅस ने जो मुझे दे रहे थे

बॉस ने कहा था अंबिका,... तुम बहुत सुंदर स्मार्ट और मेंहनती हो,... तुम्हारा काम और तुम,... दोनों ही मुझे बहुत पसंद हो,... तुम्हारा कल ही प्रमोशन हो जायेगा,...!

सच में सर,... "आप मुझे प्रमोशन दे रहे हैं"

हाँ अंबिका,... तुम्हारा प्रमोशन हो जायेगा,... पर इसके लिए तुमको मुझे दो घंटे का अलग से समय देना होगा,... वहाँ पर हम दोनों पर्सनल काम करेंगे,... तुम मुझे खुश करना में तुम्हारा प्रमोशन करता रहूँगा,... और अंबिका को बॉस के कहने से पर्सनल काम और प्रमोशन समझ आ गया

नो सर,... मैं,... यह प्रमोशन नहीं लेना चाहती,... आई एम सॉरी,... यह कह कर अंबिका आ गई थी तभी चपरासी ने आकर मेंघा को संदेश दिया

मैडम,... आपको सर ने केबिन में बुलाया है

आज ही मेंघा को प्रमोशन मिल गया,... वह बॉस,... की प्रायवेट सेक्रेटरी बन गयी,...!

--00--

साबुन

"दादा जी साबुन से नहाने से सच में गोरे हो जाते हैं" रवि ने बाल सुलभ जिज्ञासा से पूछा।

गर्मी की सुबह में रवि दादा जी के साथ प्रातःकाल की सैर करने जाता है और उसके जिज्ञासु प्रश्नों का उत्तर दादा जी देते थे।

रवि के प्रश्न पर दादा जी ने समझाया हम साबुन से गोरे होने के लिए नहीं नहाते है,... बल्कि हमारे तन में पसीने कि गंध,... धूल मिट्टी और कई प्रकार की गंदगी लग जाती है इन सबको दूर करने के लिए नहाते है हमारे शरीर की सफाई और कीटाणु का नाश होता है"

"दादा जी हम कपड़े भी इसी लिए साबुन से होतें है" रवि ने अपना दूसरा प्रश्न कर दिया दादा जी से

"हाँ! बेटा हम कपड़ो को भी साबुन पानी से इसीलिए धोते है जिससे वह साफ शुद्ध और कीटाणु रहित हो जाये। मौसमी धूल,... पसीना और वायरस को समाप्त करने के लिए साबुन से धोना,... और धूप में सुखाना जरूरी है" कपड़े ही नहीं अपितु हमें अपने उपयोग में आने वाली हर चीज की सफाई करनी चाहिए। साबुन और शेम्पू,... से,... बालों की सफाई,... गाड़ी,... साईकिल,... कार,... अपने घर का फर्श,... दिवार सभी का मैल निकालने के लिए अलग अलग प्रकार के साबुन सर्फ और तरल पदार्थ आते हैं

"दादा जी मन का मैल साफ करने के लिए कौन सा साबुन आता है"

मन का मैल दादा जी ने आश्चर्य से पूछा

हाँ दादा जी "दादी हमेंशा कहती है तुम्हारी रत्ना चाची के मन में मैल है,... कभी कहती है शांता चाची के मन में मैल का भंडार है। क्यूँ न हम ये साबुन दादी को ला दे",...

रवि कहे जा रहा था और दादा जी सोच रहे थे कि कैसे बताये कौन सा साबुन धो सकता है मन का मैल,...!

--00--

सागर

वह निरर्थक ही रेतिले समुद्र तट पर घूम रहा था घूमते घूमते थक गया तो वही सागर किनारे रेत पर बैठ गया।

हर आने जाने वाली लहरों को गिनने का बेवजह प्रयास कर रहा था। पर लहरों पे लहरें आती जाती और निशांत की हर कोशिश को बेकार कर रही थी। तभी वहाँ पर एक छोटी सी लकड़ी नजर आई और निशांत उस लकड़ी से लहरों पर लिखने का असफल प्रयास करने लगा। बार बार कोशिश करता और शब्द पूरा होने के पहले ही लहरें लौट जाती थी। उसकी इस कोशिश को पीछे खडी़ लड़की ध्यान से देख रही थी वह खिलखिला कर हँसने लगी। और बोली "जनाब क्या कोई मजनूँ हो क्या? जो दिल टूटने का गम बयां कर रहे हो"। उसकी आवाज सुन कर निशांत ने देखा और हँसते हुए बोला "अरे! आपको तो दिल टूटने के दुख का बड़ा अनुभव है"। हाँ,... हाँ,... क्यूँ नहीं "जब आप जैसे मजनूँ होगे दुनिया में जो जरा से संघर्ष से भाग जायेगें,... तो हम हसीना का दिल टूटेगा ही" कहते हुए वह निशांत के करीब बैठ गई। और पूछा क्या मै आपके दुख का कारण जान सकती हूँ। निशांत बोला बेकार इंसान को न काम मिलता है तो फिर आज की दुनिया में प्यार कहाँ मिलेगा। उसपर गरीब अनाथालय में पलने वाले को।

निशांत का हाथ अपने हाथ में लेकर लड़की बोली,... मुझे शोभना साहय कहते हैं मैं तुम जैसे युवक और युवती को समन्दर के किनारे से ढूँढती हूँ मुझे आप जैसे बहुत से दोस्त मिल जाते हैं और सारे लोगों के समूह को सागर नाम दिया है और इस समूह में सागर की तरह सब कुछ डूबा दो,... और खुद को सागर सा विशाल बनाओं आओ मेंरे साथ सागर का रूप लेने। और निशांत लहरों से पूछ रहा है तुम में मैं भी समा रहा हूँ बनके सागर की लहर,...।

--00--

गतिविधियाँ

"पापा जी रिमोट मुझे दीजिये ना मुझे कार्टून चैनल लगाना है" चिंटू ने पापा से रिमोट माँगते हुए कहा "बेटा अभी कार्टून चैनल नहीं लगा सकते हैं मै अभी न्यूज़ देख रहा हूँ। जरूरी कारवाई दिखाई जा रही है देखो अपनी और चीन की सरहद पर कितने सारे सैनिक और अपना सुखोई भी आवाज करके अपने होने का प्रमाण दे रहा है कभी भी युद्ध हो सकता है। भारत अब डरता नहीं है किसी राष्ट्र से।"

"पापा कारवाई का क्या मतलब होता है। कल मम्मी ने हमको खिलौना भी नहीं लेने दिया था। कह रही है ये चीन का बना हुआ है इसको नहीं खरीदना है नहीं तो पापा गुस्सा करेंगे,... पर क्यूँ पापा?"

चिंटू पापा से बड़ी उत्सुकता से पूछ रहा था। सुधीर ने चिंटू को समझाते हुए कहा,... "वैसे तो बेटा हम लोगो को अपने देश का बना समान ही खरीदना चाहिए। क्योंकि अपने देश का समान तो अपने देश में पैसा रहेगा। और अभी तो सभी चायना पर नाराज है उसने धोखे से हमला करके हमारे बीस जबान को मार दिया है। इसलिये हम चायना की चीजों का बहिष्कार करेंगे। जिससे उनके समान की बिक्री कम हो और घाटा हो" लेकिन पापा जबानों को कैसे पता चलेगा हम समान का बहिष्कार करके उनका साथ दे रहे हैं उनको सपोर्ट कर रहे हैं,...!

बेटा जब हम चायना बहिष्कार करते हैं मतलब वह नहीं खरीद रहे हैं तो समाचार और न्यूज़ चैनल से जबानों को पता चल जाता है कि हम चीन का विरोध कर रहे हैं तो खुद होते हैं कि वह जिन भारत के लोगों की रक्षा कर रहे हैं वे उन्हें साथ दे रहे हैं। यह उनके बढ़िया काम के लिए ईनाम कह सकते हैं !

"लेकिन पापा अपने देश का पैसा अपने पास कैसे रहेगा। हम तो खिलौना खरीदते हैं तो हमारा पैसा खत्म हो जाता है। " चिंटू ने जिज्ञासा जाहिर की।

हाँ बेटा जब हम खिलौना खरीदते हैं तो हमारा पैसा खत्म हो जाता है पर जो समान हमारे भारतीय बनाते हैं तो वह पैसा हमारे भारतीय भाईबहन को मिलता है तथा हम विदेश का खिलौना खरीदेगें वह पैसा उनके पास जायेगा। जैसे तुम्हारे खिलौने अगर दीदी के पास है तो घर में। और निक्की भइया ले गये तो उनके घर चला जाता है।

अच्छा पापा अब मैं भी विदेशी खिलौना और चायना का कोई समान नहीं खरीदूंगा। हम अपने भारत का नाम और विकास दोनों करेंगे पापा। पापा जो भी समान चायना का है उसको घर से बाहर रखेंगे मैं भी अपने जबानों का सहयोग करूँगा,...!

--00--

ग्रहण

राजा बाबू के तीन बेटे थे। राजा बाबू स्वयं अच्छे सरकारी पद थे। और उनकी इच्छा थी की तीनों बेटे भी बहुत अच्छे से पढाई करके उनसे अच्छे पद पर नियुक्त हो। वह स्वप्न देखते की उनका बेटा कलेक्टर बन गया। दूसरा बहुत बड़ा आई.एस.ऑफिसर बन गया। तीसरा सपूत विदेश मंत्रालय में काम करता है इस तरह वह सब्जबाग देखते रहते थे उनकी पत्नी अंजना हमेंशा टोकती की "बच्चों पर अपनी इच्छा नहीं लादना है उनको जो बनना है वह बनने दो"

बड़े दो बेटे तो पढ़ने में अच्छे थे पर छोटे बेटे का पढाई में मन नहीं लगता था अक्सर फेल हो जाता। तिमाही और छैमाही परीक्षा का तो यह हाल रहता की सबमें शून्य मिलता। राजा बाबू छोटे बेटे निकुंज को जीवन का ग्रहण कहते। हमेंशा डाँटते व सबसे कहते कि निकुंज तो मेंरे जीवन में ग्रहण बन गया है।

राजा बाबू के पिता गाँव में रहते थे उनके बहुत से खेत थे उसी पर खेती करवाते और अरहर दाल,... मटर सोयाबीन,... मूँगफली का उत्पादन करते थे। जब वह आये और निकुंज के लिए ग्रहण शब्द सुनकर उन्हें बहुत दुख हुआ निकुंज को प्यार से समझाया की वह पढाई क्यूँ नहीं करता तो वह बोला "दादा जी मुझे पढ़ना पसंद नहीं है मैं हटकर कुछ करना चाहता हूँ पर पापा पढाई के आलावा कुछ नहीं करने देते। वह अपने सपने को पूरा करना चाहते हैं।"

निकुंज के दादाजी निकुंज को गाँव लेकर चले गये की इसे गाँव में कुछ अच्छा बनायेंगे। राजा बाबू ने भी कहा मैं ग्रहण को रखना भी नहीं चाहता। गाँव में निकुंज को बहुत अच्छा लगा। वह दादा जी के साथ खेत जाकर खेती बाड़ी का काम देखता समझता। और नये नये प्रयोग करके नई नई प्रकार की किस्मों के मूंगफली,... अरहर की दाल और कितने ही प्रकार के फलों का वर्णशंकर पद्धति से फल फूल का सृजन किया। गाँव में उसकी फसल बहुत उन्नत तथा बहुत अधिक मात्रा में होती है। निकुंज को खेती के लिए किये गए प्रयास के लिए स्थानीय,... राज्य सरकार द्वारा पुरूस्कृत किया जा चुका है और पंद्रह अगस्त को प्रधानमंत्री द्वारा उसे सम्मानित किया जाना है जिसके लिए निकुंज के पापा और दादा जी को बुलाया गया है।

राजा बाबू ने कभी ग्रहण निकुंज से यह दिवास्वप्न की आशा नहीं की थी जो अब पूर्ण हो रहा है,...!

--00--

मैं क्या करूँ?

आसमान में सूर्यास्त की लालिमा छा गई थी। बनवारीलाल अभी खेत से लौट कर आये थे। खेत में बोनी का काम चल रहा था। दो दिन लगातार बारिश के बाद आज धूप निकली थी सो खेत में जितना अधिक हो सके व काम कर रहे थे। तभी बाहर उनको गायों के रभांने की आवाज सुनाई दी। आवाजें सुनकर वह चौक गये क्योंकि उन आवाज में एक आवाज़ श्यामा की थी।

बनवारी जी के पास सात गाय थी। ये सारी गाय बचपन से उन्ही के पास पली थी अच्छा दूध देती व सीधी सादी थी सब की सब। बनवारी जी भी उनको जी भरकर प्यार करते थे सबके उन्होंने नाम रखे थे। इंद्रा,... गोमती,... गंगा,... रामा,... श्यामा,... अहिल्या,... और सरस्वती। तीन चार बैल थे जिन्हें वो राम,... लखन,... भरत कहते थे।

बनवारी जी किसानी करते थे तथा खाली समय में मजदूरी भी कर लेते थे। जिससे घर खर्च चल जाता था। गाय के दूध का रूपया तो उनके चारा पानी में ही लग जाता था। पर कोरोना महामारी और लाॅकडाउन के चलते न उनका दूध होटल में जा रहा था न उनको मजदूरी मिल पा रही थी। खाने पीने के लाले पड़ गये।

बेचारे जानवरों को भी चारा भरपेट नहीं मिल पा रहा था। बनवारी लाल ने अपनी एक गाय को बेचने का विचार किया। और उन्होंने अपनी गोमती को महाजन को बीस हजार में बेच दिया। महाजन के यहाँ गोमती ने तहलका मचा दिया न चारा खाया न दूध दिया।

महाजन की शिकायत की और गोमती को वापस कर दिया। बदले में बनवारी लाल ने सरस्वती को दे दिया। सरस्वती ने भूख हड़ताल कर दी आठ दिनों में एकदम कमजोर हो गई। महाजन का ग्वाल उसको लेकर आया साथ में महाजन रूपये माँगने लगा। रूपये तो बनवारी लाल ने समान और खेत के लिए बीज खाद में खर्च कर दिए थे। मजबूर होकर बनवारी लाल ने अपनी प्रिय श्यामा गाय को दे दिया महाजन को। श्यामा को थपथपा कर बनवारी लाल ने समझा कर भेजा। जानवर भी प्यार की भाषा समझ जाते हैं श्यामा भी सिर हिला कर चली गई। पर दूसरे दिन वह भाग कर बनवारी लाल के पास आ गई। बनवारी लाल ने बहला

कर फिर उसे महाजन के घर भिजवा दिया। पर दूसरे दिन श्यामा शाम को चारागाह से वापस आ गई। श्यामा की दोनों आँखों से आंसू बह रहे थे। बनवारी लाल को देखते ही श्यामा उनसे सटकर खड़ी हो गईं और जोर से सिर हिलाने लगी,... जैसे बनवारी लाल से कहरही हो कुछ भी कर लो मैं तुम्हें छोड़ कर नहीं जाऊँगी। उसके आंसू और उसका उदास चेहरा देख कर बनवारी लाल भी उससे लिपट कर रोने लगे और बोलते जा रहे थे "श्यामा तुम ही बताओं मैं क्या करूँ,..."

श्यामा और बनवारी लाल रो-रोकर अपनी अपनी मजबूरी एक दूसरे को समझाने में लगे हैं,..।

--00--

इंद्रधनुष

काले काले बादल आसमान पर छा गये,... जोर जोर से हवायें चलने लगी। बदलता मौसम देखकर संध्या दौड़ती हुई छत पर पहुँच गई। लग रहा था बारिश की बड़ी बड़ी बूंदे अभी बरस पडेगी और संध्या जल्दी जल्दी सूखे अधसूखे कपड़े समेंटने लगी। साथ ही छत पर धूप में रखी मिर्च,... अजवायन,... और मसूर उठाकर रखा। वही छत पर किनारे खड़े,...होकर मौसम का हसीन ना राजा देखने लगी।

हवाओं के झोके से पेड़ पौधों झूम रहे थे जैसे वह खुशी में इतरा रहे हो। काले काले बादल,...इधर उधर दौड़ रहे थे जैसे आपस में खेल रहे हो। सफेद रूई से बादल भाग रहे थे मानो काली बदरिया,...से डर कर छुप भाग रहे है।

आकाश को देखते देखते संध्या,...को अपना बचपन,...याद आ गया ऐसा मौसम देखते ही सभी भाई बहन सामने खुले मैदान में दौड़ कर पहुँच जाते थे पासपडोस की सखियाँ भी पहुँच जाती। फिर मस्ती शुरू हो जाती बारिश की। कोई कहता बादल पानी लेने जा रहे हैं। कोई कहता आपस में खेल रहे हैं। बादलों के विभिन्न आकार पर दुनिया भर कै बातें करते। पानी की फुहार में दिल के सारे अरमान पूरे करते। न कीचड़ लगने का डर न कपडे गीले होने की चिंता होती थी। न कीटाणु का भय न बीमार होने सर्दी खांसी होने की परवाह। ये सब काम माँ का था वही करती रहती। और न वह अभी की मम्मी के जैसे डाँटती चिल्लाती थी। ज्यादा देर तक भीगनें पर आवाज देकर बुलाती। "कहती बहुत देर हो गई भींगते,... सर्दी हो जायेगी। कपड़े बदल लो। आओ जल्दी गरम गरम चाय पी लो"

आज न तो पहले जैसे घर आँगन है न बड़ी बड़ी दहलान जिसमें कपड़े सूखाया जा सकें। बस कपड़े स्टैंड ही होते जितने कपड़े सूखा सकते हैं। इसलिए बच्चों को भी उतनी छूट नहीं मिलती है हमारे जमाने जैसे।

बचपन की याद के साथ साथ मम्मी और पापा दादी की याद सताने लगी। बारिश के साथ साथ मेंरी आँखो में भी सावन मौसम छा गया। मुझे रोते देखकर मेंरी सात वर्षीय पोती मेंरे पास आई कहने लगी "दादी आप रो रही हो"

मैने कहा नहीं,... नहीं कहाँ रो रही हूँ। और मीठी ने मुझे खींच कर वही रखे दिवान पर बिठाया और मेंरी तरह ही मेंरे सिर को अपने सीने टिकाकर मुझे

गोदी में लेने की असफल कोशिश करते लाड़ करके कहने लगी "क्या हो गया मेंरा बच्चा,... किसने डाँटा है क्या तकलीफ है,... अच्छा अच्छा ये बताओ होमवर्क नहीं हुआ,... अरे! अरे! अरे!

दादी आप तो स्कूल जाती नहीं हो। तो बताओ बच्चा तुम्हें क्या चाहिए,... मैं दूगीं ना!

उसकी मासूम बातों पर संध्या अनायास खिलखलाकर हँस पड़ी। और "संध्या को हँसते देखकर मीठी ऐसे मुस्कुराई जैसे बादलों में अचानक इंद्रधनुष दिख रहा है,...!

--00--

आत्महत्या

सरिता आज बहूत से बच्चों की बड़ी मम्मी है उसकी सारी दुनिया की खुशी इसी में समाई हुई है पूर्ण संतोष से वह अपनी जिंदगी का आंनद ले रही है पर हमेंशा से ऐसा नहीं था उसे याद आ रहा वह दिन,... सिर्फ सरिता थी,...

सरिता के कानों में सासु माँ के शब्द गूंज रहे थे "न जाने किस मनहूस पल में हमने तुम्हें बहु बनाने का निर्णय लिया था। हमारी मति मारी गई थी जो एक बाँझ को गृहलक्ष्मी बना लिया। अगर जरा भी शर्म हो तो डूब मर जाकर कही"

सरिता अब इससे ज्यादा नहीं सुन सकी। पाँच सालों से निरंतर बच्चे न होने के लिए उसको ताने दिये जाते थे। कितनी ही बार प्रमोद की दूसरी शादी की कोशिश सासु माँ और बुआ सास कर चुकी थी। पर प्रमोद के हाँ कहलाने केलिए। पर सिर पीट कर रह जाती थी। बुआ सास और सासु माँ को प्रमोद ने कह दिया था की एक बार सरिता को तुम लोगो की इच्छा के कारण पत्नी का दर्जा दे चुका हूँ। अब मैं और किसी के साथ शादी करने या बच्चे के झमेंले में नहीं फँसना चाहता हूँ। मेंरी जिंदगी में पत्नी और बच्चे से जरूरी है मेंरी शोहरत,... और मंत्री मुख्यमंत्री,... प्रधानमंत्री बनने का सपना। क्योंकि चुनाव जीतने के लिए पाक दामन दिखना जरूरी है। और दूसरी शादी तलाक ये सब मेंरे नेता पक्ष को बदनाम कर सकते हैं। इसलिए वह सरिता और माँ के बीच पड़ता नहीं था जो कुछ कहना सुनना है आपस में निपटते रहो।

सरिता के लिए यह सब सहना अब मुश्किल होता जा रहा था। और उसने अपने आपको नर्मदा मैया को समर्पित करने के लिए घर से निकल गई। बदहवास सी वह भेड़ाघाट पहुँची,... वही घाट उसके घर से करीब था। सरिता नर्मदा के किनारे बैठ गई और आत्महत्या के लिए विचार करने लगी। क्या मेंरे मर जाने से समस्या का अंत हो जायेगा। मन कहता नहीं इसका विरोध करना चाहिए सासु माँ को वशं चलाने के लिए संतान चाहिए। विशेष कर पुत्र।

सरिता ने देखा भेड़ाघाट पर बहुत से छोटे छोटे बच्चे भीख मांँग रहे है उसने एक दो बच्चों से पूछा उनका घर कहाँ है माँ बाप कौन है कई बच्चे ऐसे थे जिनका न कोई घर है ना माँ बाप का पता।

सरिता ने वही पर कुछ अलग करने निर्णय लिया की वह आत्महत्या करके अपना जीवन समाप्तनहीं करेगी। उसका सही उपयोग करेगी। और अपने पति प्रमोद के नाम पर उसने एक बाल गृह बनाने का संकल्प किया और जितने बच्चे असहाय और अनाथ थे सबको लेकर अपने घर की ओर बढ़ चली। वह जानती थी कि उसके ससुराल में कुबेर का खजाना है और वह उस खजाने और अपनी जिंदगी को नये रूप में स्थापित करेगी। आत्महत्या? कहाँ का कायर विचार आया था उसके मन में वह जियेगी,... अपने लिए इन बच्चों के लिए और आज वह बहुत से बच्चों की बड़ी मम्मी है हाँ वह इस बड़ी मम्मी से पूर्ण संतुष्ट और सुखी,...!

--00--

मातृत्व प्रेम

शिल्पी ने रोते हूए डाक्टर से पूछा "डाक्टर साहब मेंरा बच्चा,... क्या कभी नहीं चल पायेगा"

डाक्टर ने कहा "मैडम मुझे इसके पैरों में कोई खराबी या कोई बीमारी समझ नहीं आ रही है बेहतर होगा आप किसी बड़े सर्जन को दिखाये"

शिल्पी का पाँच वर्षीय बेटा रूद्र अपने पैरों पर खड़ा नहीं हो पाता था न ही चल पाता था।

शिल्पी हर तेल,... मालिश,... डाक्टरों को दिखा चुकी थी पर कोई फायदा न हूआ। धीरे धीरे रूद्र बड़ा हो रहा था। दिमाग और बुद्धि तीव्र थी बस पैर काम नहीं करते थे। देखने में पैर कोई कमी नहीं थी।

शिल्पी की शादी के सात साल बाद ढेर मन्नतों और पूजा पाठ के बाद रूद्र हूआ था और वह भी चलने में असमर्थ।

शिल्पी अपने बेटे को लेकर बम्बई गयी बड़े हड्डी वाले डाक्टर को दिखाने। उनका भी वही जबाब से परेशान हो गई।

शिल्पी की सहेली ने रूद्र को देखकर कहा "क्यों ना हम एक बार इसको साइकोलॉजिट को दिखाये शायद वह इसका इलाज कर सकें"

शिल्पी तुरंत तैयार हो गई दिमाग के डाक्टर को दिखाने। दूसरे दिन वे लोग सारी रिपोर्ट के साथ रूद्र को दिखाने पहूँचे। साइकोलॉजिट डाक्टर ने रिपोर्ट और पैर देखने के बाद कहा इस बच्चे के दिमाग में शायद खड़े होने पर गिर जाने का भय बैठ गया है इसलिए यह खड़े होने का हौसला" नहीं करता है क्या कभी गिरा था यह?

डाक्टर के पूछने पर शिल्पी को ध्यान आया कि रूद्र गिर न जाये,... चोट न लग जाये करके वह दिन भर गोदी में रखती थी। मन्नतों के बाद जो हूआ तो लाड़ प्यार ने गिरने लगने के डर से उसे दिमागी कमजोर बना दिया था इसलिए वह चलने की कोशिश ही नहीं करता था। डाक्टर की बात से शिल्पी को अपनी गलती का एहसास हूआ। और उसने वही संकल्प लिया की वह अपने बेटे का हौंसला बनेगी और छैमाह में ही रूद्र चलने लगेगा।

शिल्पी ने अपनी ममता को हौसला बढ़ाने के लिए कसौटी में कसा। अब वह रूद्र के पैरों में लकड़ी की पटरी घुटने के पीछे बाँध देती।

गर्मी में धूप में बिना चप्पल के खड़ा कर देती। खाना पानी दूर रखकर उसे चलने के लिए हौसला देती। रूद्र कभी कभी घंटो भूखा प्यासा खड़ा रहता। शिल्पी के अथक प्रयास से उसकी कठोरता ने मातृत्व प्रेम को हरा दिया। उसके कठोर संकल्प से रूद्र चलने की कोशिश करता। और अंत में चार माहिने में ही वह चलने लगा।,... शिल्पी को आज महसूस हो रहा था कि उसने मातृत्व प्रेम से बेटे को अपाहिज बना दिया था,... पर,... आज उसने हौसला बुलद करके उसे पैरों पर खड़ा कर दिया,... माँ की ममता भी ना,... क्या क्या? कराती है,...।

--00--

जहरीला गुलाब

तमन्ना की आँख खुली तो वह अपने चारों ओर देखने लगी। देखने में वह एक साधारण साजसज्जा से परिपूर्ण कमरा था सामने छोटी पर ऊँची टेबिल पर लाल गुलाब का गुलदस्ता रखा था। लाल गुलाब बहूत खूबसूरत थे और इकठ्ठे फूलदान में सुंदरता की कोई शब्दों में वर्णन करना असंभव था।

उसको होश में आया देखकर नर्स सामने आ गई और प्यार से बोली,... "कैसी लग रहा है मैम,... कांग्रेच्युलेशन मैम,... आप माँ बनने वाली है"

तमन्ना नर्स की बात सुनकर एकदम घबरा गई,... उठने की कोशिश करते हूये कहा,... " क्या कह रही हो सिस्टर"

नर्स ने कहा "जो सुना सच सुना है तुमने"

तमन्ना ने कहा " मुझे यहाँ हास्पिटल में कौन लाया है"

नर्स ने कहा,... "आपके बैंक के लोग,... जो आपके साथ ही काम करते हैं लेकर आये है आप अचानक बेहोश हो गई थी तो घबरा वे आपको लेकर आये थे,... वे अभी बाहर ही बैठे है उनको बता कर आती हूँ आपको होश आ गया है "

जाती नर्स को रोकते हूए तमन्ना ने कहा,... तुमने अभी मेंरे माँ बनने के बात बता दी है क्या,...?

"अभी नहीं बताई है मैम,... मैं आपके होश में आने का इंतजार कर रही थी,... वैसे भी आपकी रिपोर्ट डाक्टर साहिबा देगी"

तमन्ना ने चैन की सांस ली और बोली "यह बात किसी को नहीं बताना,... मै यह खबर सबसे पहले अपने पति को बताऊँगी"। "ठीक है मैम,... आप अपने पति से बहूत प्रेम करती है"। नर्स के जाते ही तमन्ना को लाल गुलाब से खून टपकता दिखाई दे रहा था,... अपने विश्वास का खून,... अपने अरमान का बहता लहू,... और चुंभते काँटों से रिसता खून,... तमन्ना का दिल उस मनहूस दिन को याद कर रहा था जिस दिन वह अभिषेक से पहली बार मिली थी।,... तमन्ना बैक में कैशियर के पद पर काम करती थी। लगभग साल वर्ष पूर्व अभिषेक बतौर मैनेजर की पोस्ट पर आया था। जिस दिन अभिषेक आया बैंक वालो ने वेलकम करने के लिए बैंक में पार्टी रखी थी। तमन्ना भी पार्टी में लाल गुलाब का खूबसूरत गुलदस्ता लेकर अभिषेक से मिली।,... तमन्ना ने सोचा भी नहीं था की कोई नवयुवक मैनेजर की कुर्सी पर आयेगा। जब वह मिली तो अभिषेक के स्मार्ट होने की तारीफ की। बदले में अभिषेक ने भी खूबसूरत गुलाब के साथ साथ तमन्ना की तारीफ की। तमन्ना ने कहा खूबसूरत लाल गुलाब उसे बहुत पसंद है!

अभिषेक अक्सर लाल गुलाब लाकर तमन्ना को देता और गुलाब के साथ तमन्ना की खूबसूरती की तारीफ।

तमन्ना अभिषेक के झुकाव को प्यार समझ बैठी और अपना सब कुछ अभिषेक के प्यार पर न्यौछावर करती चली गई।

लगभग बीस दिन पहले अभिषेक ने बताया की उसका प्रमोशन हो गया है और वह दूसरे शहर जा रहा है। तमन्ना ने कहा "अभिषेक !!!! तुम चले जाओगे तो मेंरा क्या होगा। और अभिषेक ने कहा,...मेंरा इंतजार करना और क्या"?

कहकर हँस दिया,... और चला गया,... तमन्ना ने दो चार दिन तो आराम से बिताये और फिर दिन भर फोन लगाती,... अभिषेक को,... कभी अभिषेक फोन उठाता और कभी फुर्सत में बात करेंगे टाल जाता। और कल जब उसने मैसेज भेजा तो आज अभिषेक का मैसेज फोटो सहित आया जिसमें वह दूल्हा बना किसी दूसरी लड़की को वरमाला डाल रहा है,... और लिखा था कभी मुझे फोन नहीं लगाना,... मै खूबसूरत फूल का शौकीन हूँ पर कभी अपने बगीचे में या घर में फूल सजाना पसंद नहीं,... !

तुम्हारे पास मेंरा कोई सबूत नहीं है जो तुम मुझे ब्लैक मेंल कर सको,... मेंरा नाम,... शहर,... सब कुछ झूठा था,...और तुम्हें,... याद दिला दूँ,... लाल गुलाब है मेंरे पास तुम्हें,... तुम्हारी औकात दिखाने,...!

तमन्ना को लाल गुलाब खूनी,... जहरीले,... और नश्तर चुंभाते नजर आ रहे हैं अब क्या करना है,...!

--00--

बेटियाँ

आज सुमित्रा देवी को लांयस क्लब बुलाया गया था विशेष सम्मान करने के लिए जो उन्होंने अपनी बेटियों को सही संस्कार के साथ उच्च शिक्षा दिलाई। जिसके कारण आज उनकी बेटियाँ ऊँचे पद पर पहूँच गई थी। सुमित्रा देवी की पाँच बेटियाँ थी जिसमें बड़ी बेटी का यू पी एस सी चयन हुआ और वह कलेक्टर बन गई थी। दूसरी और तीसरी बेटी इंनजिनियर,... चौथी डाक्टर बन गई और पाँचवी बेटी ने पूरे भारत में नेटवर्किंग की परीक्षा पास की व गूगल की नौकरी के लिए चयन हो गया है। आज सुमित्रा देवी तथा उनके पति उमेंश कुमार की जितनी तारीफ हो रही थी कभी इन लोगों ने उतने ही ताने उलाहाने सुने थे।

सुमित्रा देवी को याद आ रहे थे वे दिन जब उनकी लगातार पांॅच बेटियाँ हुई और उनकी जेठानी और देवरानी को लड़के होते थे तब सासु माँ और ददिया सास किसतरह उन्हें सुनाती थी। बेटियों की माँ को नौकरानी तक कह देती थी दिन भर काम करते रहना। बेटियाँ पर ध्यान देती तो कहती कौन सी कमाई लाने वाली है बेटियाँ जो इनको दिन भर लाड़ प्यार करती रहती हो। ढेर सारा सारा दहेज देकर ब्याहना पड़ेगा। हमारा तो घर खाली हो जायेगा।

एक दिन तो हद हो गई जब घर में त्यौहार के लिए सबको नये कपड़े आये पर दादी ने मना कर दिया बेटियाँ को नये लाने के लिए। रूपये जोड़ कर रखो शादी पर काम आयेगें।

रोज के खाने पर भी भेदभाव किया जाता। लड़कियों को सिर्फ दाल रोटी और लड़को को पकवान। सुमित्रा देवी त्यौहार के दिन सासु माँ से लडाई कर बैठी। मेंरी लड़कियों को भी सभी लड़के की तरह सभी सुविधा सुख मिलेंगे तो मैं रहूँगी साथ में। या मैं अलग रहकर अपनी लड़की को पाल लूँगी। अपने पति से भी कह दिया अगर आप साथ दो ठीक नहीं तो मैं अकेले ही लड़कियों की परवरिश कर लूँगी।

उस दिन पहली बार उमेंश ने सुमित्रा का साथ दिया था और कहा ठीक है हम अपनी लड़कियों की परवरिश खुद कर लेगे। और उस दिन सुमित्रा ने ख़ुद को अलग घर लेकर रहने लगी तथा लाड़ प्यार के साथ उन्हें अच्छी शिक्षा दिलाने

लगी। इसके लिए उन्हें अपने पति के साथ कंधा से कंधा मिला कर घर की आर्थिक नींव को संभाल कर रखा।

सिलाई बुनाई ट्यूशन करती उनकी लड़कियाँ भी माँ को पूर्ण सहयोग देती। तथा मन लगा कर पढ़ती। बिना कोचिंग क्लासेस के सारी परिक्षाओं में अच्छी पोजीशन ले आती।

आज सुमित्रा देवी और उमेंश कुमार को उनकी बेटियों ने सम्मान शिखर पर पहुँचा दिया था जहाँ सब उनकी परवरिश और संस्कार की तारीफ कर रहा था तथा बिना दहेज के उनका हाथ मांग रहे हैं,...

--00--

आजादी

संजीव जब भी चिड़िया घर जाता जानवरों को पिंजरे में बंद फरफडाते देखता तो लगता की ये जानवर सच मायने में ही जानवर है आराम से इनको खाने मिलता है आराम से रहने मिलता है समय समय पर डाक्टर का इलाज भी मिल जाता है वरना जंगल में घूम कर मेंहनत करनी पड़ती है। खाने के लिए यहाँ वहाँ भटकना पड़ता है अपने से बड़े जानवरों से अपनी सुरक्षा करनी पड़ती है। पर चिड़िया घर में आराम से सब मिल जाता है समय समय पर। वह अपनी मम्मी से भी पूछता था माँ पिंजरे में तोता और चिड़िया अच्छे से क्यूँ नहीं रहते हर समय उड़ने की फिराक में रहते हैं। दाना भी मिल जाता है पानी को भी नहीं भटकना पड़ता है। न ही घोंसला बनाने की या टूटने की चिंता रहती है। न ही अपने घर में रहते हुए इन्हें गर्मी,... सर्दी बरसात से परेशानी होती है। संजीव की बात पर तब मम्मी हँसकर कह देती थी बेटा आजादी बहुत महत्वपूर्ण होती है जीवन में,... पर तुम यह नहीं समझ पाओगे। जब कभी तुम इस तरह बंधन में रहोगे तो पता चलेगा और इतने बरसों बाद संजीव को यह बात समझ आई। आज बीस दिन हो गये वह अपने ही घर पर सुरक्षित कैद में है मनपसंद का खाना मिल रहा है जब चाहे टीवी देखे,... मोबाईल चलाये,... सिर्फ बाहर जाने की इजाजत नहीं पिंजरे का तोता या चिड़िया घर के जानवरों की आज़ादी की व्याकुलता,...

--00--

चोरी का उपहार

अनायास फोन की घंटी बज रही थी। संकल्प ने घंडी देखी,... रात के बारह बजे वो भी लैड लाइन पर फोन?

सोचने लगा कौन हो सकता है इस समय!!! सोचते हूये फोन उठाया,... उधर से तापक से किसी ने पूछा "दो दिन पहले तुम्हारी बाइक की चोरी हो गयी थी ना"

संकल्प ने कहा "हाँ,... हो गई थी मैंने तो रिपोर्ट भी लिखवा दी थी,... पर तुम कौन हो,... और तुम्हें कैसे पता " संकल्प ने प्रश्न के बदले प्रश्न किया।

उधर से आवाज आई "आपको क्या करना कौन बोल रहा है मैं तो आपको आपकी बाइक की सूचना दे रहा हूँ। आपकी बाइक आपके घर से थोड़ी दूर पर पीपल के पेड़ के नीचे खडी है आप उठा लीजिए"

संकल्प कुछ पूछता इससे पहले ही फोन कट गया। संकल्प सोचने लगा की रात के समय,... कोई झूठ बोलकर उसे बुला रहा है या सच में उसकी बाइक खड़ी है। थोड़ी देर में फिर से फोन आया "भाई साहब आपकी बाइक खडी है आप उठा लीजिए मुझपर भरोसा कीजिये। मै आपका शुभ चिंतक हूँ ",...

संकल्प ने जाकर देखा तो पीपल के पेड़ के नीचे उसकी बाइक खड़ी थी। संकल्प ने आपनी बाइक पहचान कर घर लेकर आया,... तो देखा सीट कवर में एक कागज और 500 रूपये वाली नोट की गडडी रखी थी। संकल्प ने देखा वह छोटा सा पत्र था उसने खोलकर देखा,... । पत्र में लिखा था,...

संकल्प भाई,... बहुत बहुत धन्यवाद आपको। आपकी बाइक मजबूरी में चुराई थी,... क्योंकि मुझे एयरपोर्ट जाना था मेंरी फ्लाइट का समय हो गया था और कोई साधन नहीं था मैंने जो टैक्सी बुक की वह नहीं पहुँची,... इसलिए मैंने तुम्हारी बाइक बिना पूछे लेकर निकल गया था। मेंरा इंटरव्यू था नहीं पहुँचता,... तो मेंरी इतनी अच्छी नौकरी हाथ से निकल जाती। मुझे पता चला की तुम्हे पचास हजार रूपये की सख्त जरूरत है। तो मैं बाइक के साथ तुमको भेंट स्वरूप यह रूपये भिजवा रहा हूँ। स्वीकार करना। तुम्हारे कारण मुझे नौकरी मिली। और बाइक की चोरी से तुम्हे परेशानी हूई उसके लिए क्षमा सहित यह "उपहार"

नोट मुझे तुम्हारा नाम पता और फोन नंबर सब तुम्हारी बाइक के कागजात से मालूम हुआ और तुम्हारी जरूरत भी,...

तुम्हारा चोर शुभचिंतक

संकल्प उन रूपये को अपने टेडर केलिए उपयोग कर रहा था जिसकी उसे जरूरत थी और अनजाने शुभचिंतक को भेंट के लिए धन्यवाद दे रहा,...

--00--

विदाई

"दामिनी!! दामिनी!! जल्दी आओ बेटी,... बैड बाजा,...कार तैयार खड़ी है। विदाई का वक्त हो गया है" चाचा जी आवाज लगा रहे थे विदाई के लिए अपनी आँखों के आंसू,...समेंटते हुए वह बोली,...

"बस चाचा जी दो मिनट में "पापा जी" को प्रणाम करके आती हूँ" दामिनी कमरे में लगी पापा की तस्वीर के सामने खडी हो गई और हाथजोड़कर रोते हुए बोली "पापा ये कैसी विदाई है। आपको विदाई का इंतजार था और स्वयं विदाई लेकर चले गये पापा,... पापा,..."

आँसू भरी आँखों में पुरानी बातें चलचित्र की तरह आने जाने लगी। जबसे वह समझदार हुई थी तब से पापा के सपने सुनते आ रही थी मेंरी प्यारी बिटिया रानी दुल्हन बनेगी,... दूल्हा राजा के साथ विदा होकर चली जायेगी मेंरी लाड़ली दामिनी,... मैं और तुम्हारी मम्मी,... तुम्हें याद करके रोया करेंगे। पर पापा का यह सपना पूरा न हुआ और मम्मी दामिनी और उसके पापा को रोता छोड़ कर,... विदाई लेकर सदा के लिए दूसरी दुनिया में चली गई। पापा ने अपने को संभाला साथ ही दामिनी की देख रेख में कोई कमी नहीं की। बल्कि और जिम्मेदारी से सपना संजोते और याद भी करते की दया,... क्या क्या,... करना चाहती थी दामिनी की शादी में,...!

विजय कुमार को अपनी दामिनी के लिए उनकी इच्छा के अनुरूप लड़का व परिवार मिल गया। सौरभ को देखकर,... दया के दुख को भूल,... नये उत्साह से शादी की तैयारी में जुट गए। शादी की तारीख तय होते ही होटल,... विवाह स्थान,... कैटर्स,... सजावट बैड बाजा सब की व्यवस्था कर डाली। साथ ही साथ दामिनी को दिनभर हिदायत देते जल्दी जेवर,... लहगां साड़ी,... कपड़े सूटकेस ले लो पूरी तैयारी कर लो। कभी कभी दामिनी नाराज हो जाती "पापा आपको कितनी जल्दी है मेंरी विदाई की,... आप मुझे घर से भागना चाहते हैं"

विजय कुमार कहते "नही बेटी,...भागना नही चाहता,... तुझे दुल्हन के रूप में देखना चाहता हूँ,... तुम्हारी विदाई करना है मुझे,... यही एक काम जरूरी है,..." आज से बीस दिन पहले विजय कुमार का सपना टूट गया,... बेटी की विदाई की जगह उन्होंने इस दुनिया से विदाई ले ली।

दामिनी अपने पापा से विदाई नही करा पाई,... पर अपने पापा को हमेंशा के लिए विदा कर दिया,... एक्सीडेंट में कार एक खड़ी जीप से टकराई और विजय कुमार की स्टेरिंग से सिर टकरा गया। तत्काल ही मौत ने बाहों में समेंट लिया,...

सबके समझाने पर आज बीस दिन बाद ही तय तारीख पर दामिनी की शादी और विदाई हो रही है सारी तैयारी पापा ने की,... बस वही नहीं है विदाई के लिए,... हाँ पापा,... आप नहीं हो,... पर विदाई हो रही है,... ये,... कैसी विदाई पापा,... कैसी पापा,... विदाई,...!

--00--

सपना सपना रह गया

फोन की घंटी बजते ही उषा ने दौड़ कर फोन उठाया,... शादी के घर में मोबाइल कहाँ है उन्हें खुद नही मालूम था। इसलिए लैंड लाइन का रिसीवर हाथ में लेकर बोल पडी,... "पूरी तैयारी है बहू के स्वागत की,...बस तुम लोगो का इंतजार है",...

दूसरी तरफ से क्या कहा,... उषा के हाथों से रिसीवर छूट गया और वह दोनों हाथों से सिर थामकर शून्य में तकने लगी। आँखे सूनी सूनी और दिमाग कही कुछ उधेड़बुन में,...

बेटे का जन्म होते,...ही हर माँ का,... पहला सपना होता है वह बड़ा होकर मेंरे लिए एक अच्छी बहू लेकर आयेगा। और जैसे जैसे बेटा बड़ा होता है पढाई लिखाई करता है,...सपना और जबरदस्त आँखों में छाने लगता है। और बेटे की पढ़ाई के बाद सरकारी नौकरी लग जाये तो क्या कहना।,... जागी आँखों में फिर दिन रात बहू नज़र आती है और बेटा दूल्हा दिखता रहता है। ख्वाब तो बिना पंखों के पंछी जैसे मन को उड़ाते हैं और सतरंगी दुनिया तो जैसे हाथों में समा जाती है।

उषा ने भी अपने बेटे अगम के लिए ऐसा ही सपना देखा था,... अगम क्या हुआ,... जैसे उषा के आँखों में सपनों का जन्म हो गया। अगम दिखने में अच्छा था तथा उषा के मन के अनुरूप पढाई लिखाई खेलकूद सब में अच्छा।,... अगम के बड़े के साथ उनका सपना भी बढ़ता गया और जिस दिन अगम की सरकारी नौकरी वो भी रिजर्व बैंक आॅफ इंडिया में फिर तो सपने ही सपने बसे आँखों में।

ईश्वर की कृपा से उन्हें मनचाही लड़की भी बहूत के लिए मिल गई। जैसी बहू चाहती श्वेता उनकी कल्पना की बहूत जैसे अवतरित हो गई। बस क्या था,... जोरशोर से शादी की तैयारी,... फिर वह दिन भी आ ही गया जब अगम दूल्हा बनकर दुल्हन लेने चला गया,... रस्मों रिवाज से शादी हुई और बारात दुल्हन को लेकर लौट रही थी,...

अनहोनी ने अपना रूप दिखाया और बीस किलोमीटर पहले ही डाइवर को झपकी आ गई और दूल्हा दुल्हन और तीन दोस्त सहित आलटो गाड़ी ओवर ब्रिज तोड़ कर नीचे नदी में गिर गई। और शिवनाथ नदी में उषा देवी के सपने की बहूत,... बेटा और दोस्तों की बलि चढ़ गई,... उषा का सपना,...सपना ही रह गया,...।

--00--

शिक्षा का मूल्य

"माँ!! माँ!! देखो मेंरी बाइक फिर से खराब हो गई है। रातभर पानी गिरेगा बाइक पर तो बिगड़ेगी ना"

शरद बड़बड़ाते हुये बोल रहा था माँ को,... "पापा को भी ना,... सारी उम्र हो गई सबको पढ़ते और सभी विधार्थी अच्छे अच्छे घर के थे अच्छी पोस्ट पर पहुँच गए। पर किसी से कुछ नहीं लिया। वही टूटा खप्पर वाला घर और टपकता बारिश का पानी आया है बच्चों के हाथ"

शरद और भी न जाने क्या क्या कहता रहा पर सावित्री और न सुन सकी गुस्से में भरी आकर रामपाल से उलझ गई,...

"सच ही तो कहता है शरद,... अगर शिक्षा देते थे तो उसका मोल भी लेना था जैसे स्कूल से वेतन लेते थे"

सावित्री की बात सुनकर रामपाल बोले "अरे!! भागवान् में स्कूल से वेतन अपनी मेंहनत तथा घर चलाने के लिए लेता था। पर जो बच्चे मुझसे घर पर पढ़ने आते थे वह शिक्षा में अपनी स्वेच्छा से देता,... और मन और इच्छा से दी हुई शिक्षा का कोई मोल नहीं होता है। मेंरा तो सबसे बड़ा उपहार यही है कि मेंरे विधार्थी आज मेंरा नाम ऊँचा कर रहे हैं और यह सब देखकर मुझे जो सकून मिल रहा है यही सच्चा उपहार है,... मेंरा"

"शरद ने भी मेंरी शिक्षा का सही उपयोग किया होता तो वह भी अच्छी नौकरी पर होता" रामपाल ने कहा,...

सावित्री बोली,..."आज कल डिग्री सें कुछ नहीं होता है उसके साथ नोटों की गड्डियाँ भी रखनी पड़ती है तब अच्छी नौकरी मिलती है पर शरद तो तुम्हारी औलाद है उसके पास कहाँ से आती इतनी रकम"

सावित्री बोली जा रही थी पर रामपाल को लगा जो अब तक किया वह सब सही था और ईश्वर उन्हें उनकी शिक्षा का मूल्य अवश्य देगा ईश्वर के यहाँ देर तो होती है अंधेर नहीं,... सब्र का फल मीठा होता है शिक्षा देना ही सबसे बड़ा उपहार है उसका क्या मोल,... और उनको उस उपहार का इंतजार है जो ईश्वर देगा,...!

--00--

पवित्र रिश्ता

"रेशमा! ओ!!रेशमा!!! कहाँ खो गई हो तुम। आओ सबके साथ तुम भी एंजाय करो,... आओ!! आओ जरा पास तो आओ हमारे"

विनोद रेशमा को पास बुला रहा था और रेशमा चारों ओर भयभीत हिरनी सी नजर फैला कर अपने पति वैभव को ढूँढ रही थी,... पर पार्टी की चहल पहल और फूहड़ संगीत के शोर में कुछ भी सुनना और कहना मुश्किल हो रहा था सब मदमस्त हो कर नववर्ष और रेशमा की वेलकम पार्टी मनाया रहे थे किसी की बाहों में किसी का तन था,... कोई किसी से लिपट कर अपनी साँसों को महका रहे थे,... किसी की तन की आग किसी को जला रही थी,... कोई तपते तन की गरमाहट से अपने तनमन की प्यास बुझा रहा था,... कोई मौन आमंत्रण दे रहा था,... तो नजरें बचाकर एकांत और अंधेरे का फायदा उठा रहा था,... इन सबके बीच में रेशमा पागल हूई जा रही थी किसी को कोई भी रिश्ते की याद नहीं थी सिर्फ एकता रिश्ता दिखाई दे रहा था सिर्फ औरत औरत मर्द का,... एक दूसरे के जिस्म को नोचने दबोचने और वासना की आग को हवा देना,... और शांत करने के लिए हर पवित्र रिश्ता तार तार करना,... करके ठिलठिलाना,...

भाई भाभी,... पडो़सी,... दोस्त भाई बहन,... देवर भाभी,... जीजा साली,... सहेलियाँ,... या दोस्त सब एक बराबर से एन्जॉय कर रहे थे।

रेशमा छोटे शहर की पलीबढी लड़की,... शादी बडे शहर में नौकरी करने वाले लड़के से हूई थी,... और वैभव उसको अपने साथ इसबार शहर लेकर आया था। वैभव अपनी पत्नी को पहली बार शहर लेकर आया है इस खुशी में होटल में वेलकम पार्टी रखी गई थी। रेशमा बहूत खुश थी कि उसके आने की खुशी में पार्टी दे रहे है सारे वैभव के दोस्त।

वैभव और उसके दोस्त की पार्टी देखकर सीधी सादी रेशमा आश्चर्य चकित होगई है सभी उसकी सुंदरता और मासूमियत की तारीफ कर रहे हैं पर पवित्र रिश्ता को त्याग कर सभी मजा लेना चाहते हैं पति स्वयं सबको ये मौन निमंत्रण देरहा है मुस्कुरा कर और रेशमा,...रिश्ते के भँवर में पवित्र बंधन टटोल रही है अपना और वैभव का,...!

--00--

भीख

कौशल्या देवी ने रोज की तरह पूजा की। फिर आँचल फैलाकर आँख बंद करके प्रार्थना की और हाथजोड़कर भगवान से मन ही मन कुछ माँगा। फिर आवाज देकर पोता शुभ,... तथा पोती राध्या को बुलाकर बोली बेटा माथा टेककर भगवान से सद्बुद्धि माँग लो। राध्या माथा टेका फिर अचानक बोल पड़ी "दादी जी माँगने का मतलब तो भीख होता है"।

हाँ बेटा "माँगने का मतलब तो भीख होता है"।

"तो दादी आप भीख क्यों माँग रही हो"।

आप ही,...तो कल कह रही थी भिखारी से की भीख माँगने में शर्म नहीं आती,...भीख मांग कर तुम अपने साथ भगवान को भी लज्जित कर रहे हो,... इतना सब दिया है भगवान ने हाथ,... पैर,... नाक-कान,... इनका इस्तेमाल करके काम करो,...भीख माँग कर अपनी जिंदगी को शमिन्दा कर रहे हो,...।

भिखारी बोला "आज कल काम नहीं मिल रहा है और जितना मिलता उसमें रोजी में पेट नहीं पलता है।" तो और ज्यादा मेंहनत करो। कहकर कौशल्या देवी ने खाना खिला कर थोडे रूपये देकर भगा दिया था।

कौशल्या देवी को वह सब याद आ रहा था और "राध्या अपने धुन में,... बोले जा रही थी दादी आप भी क्यूँ माँग रही हो भगवान से,... हम भी क्यूँ माँगे,... जब हम कोशिश करेंगे तो,... ईश्वर तो अपने आप दे-देगे"।

कौशल्या देवी सोच रही थी कि राध्या ने नादानी में ही सही,... उन्हें कितनी बड़ी शिक्षा दे दी।,... अगर उनके कर्म सही है तो ईश्वर उन्हें सुखी,... संपन्न समृद्धि देगा।,... माँगकर वह स्वयं क्यूँ ईश्वर को लज्जित कर रही है जब कि उसने उन्हें दोनों हाथों से सब दिया है,... कांपते हाथों को राध्या के सिर रखते हुए बोली,... हाँ,... "बेटा आज से मैं भी ईश्वर से,... नहीं माँगूँगी भीख,...!"

--00--

झूला

"रूपा ओ रूपा!!! जल्दी आओ,... सारी सखियाँ तुम्हारा इंतजार कर रही है,... चलो जल्दी चलो,... शाम को सात बजे तक की परमिशन मिली है बगीचे में झूलने के लिए"।

मुक्ता आवाज देकर बार-बार रूपा को बुला रही थी। जब रूपा नहीं आई तो मुक्ता ने अंदर जाकर देखा। रूपा हरित परिधान में तैयार थी पर साथ ही आँखों में भी सावन की झड़ी लगी थी।

मुक्ता ने तुरंत रूपा का हाथ पकड़ कर बोली "ये क्या रूपा? तुम फिर रोने लगी सुबह ही तो तुम्हारी बात हुई थी सुभाष से,... अब फिर तुम धीरज खोने लगी हो,... हिम्मत से काम लो सुभाष भी मजबूरी के कारण नहीं आ पाया है ईश्वर की कृपा से स्वस्थ और सुरक्षित है"।

मुक्ता की बात सुन रूपा बोली "क्या करूँ मुक्ता,... मन को कितना समझाती हूँ पर विरह की आग मन को जला रही है पहली बार है जब सुभाष तीज के त्यौहार पर साथ नहीं है उनको भी तीज के झूले का इंतजार रहता था संग में झूला झूलने के लिए"।

कोरोना भी कैसी मजबूरी बनकर आई है जो जहाँ है वही पैर थम कर रह गये हैं सुरक्षित रहने की मजबूरी में जंजीर ने जकड़ रखा है सबको।

सुभाष अपनी कंपनी के काम से USA क्या गये पिछले तीन माहिने से वही रूकना पड़ गया। वहाँ जाते कोरोना की पाजिटिव हो गये बीस दिनों तक इलाज चला। ठीक होने के बाद 14 दिनों क्योरोटाइन करना पड़ा फिर अभी सारी फ्लाइट पर बैन लगा है इसलिए आ नहीं सकते हैं।

रूपा को एक एक दिन भारी हो रहा है सुभाष के बिना।

मुक्ता की जिद और सारी सखियों के आग्रह पर रूपा ने झूला उत्सव में हिस्सा लिया सावन की घटाओं ने रिमझिम बारिश और खुशनुमा माहौल में रूपा को मंत्रमुग्ध कर दिया और पूरी मस्ती में झूला झूलते वह गा रही थी "अबके सजन सावन में,... आग लगेगी मन में,... घटा तरसेगी,... मिलने को तरसेगी,... मिल न सके सजन,... एक ही आँगन में,..."।

--00--

जानवर

"यह क्या पापा? आपने तो मठरी और नमकीन सेव चिवड़ा का पूरा डब्बा ही खाली कर दिया,... देना भी था आंनद अंकल को थोड़ा सा रख देते" स्नेहा गुस्से में विनोद बाबू से बोल रही थी।

विनोद बाबू बोले बेटा "उनको तुम्हारे हाथ की मठरी और सेव चिवड़ा बहुत अच्छे लग रहे थे तो मैंने उनको घर के लिए रख दिये। बहु तुम और बना लेना"

बाबू जी आपने तो इतनी सरलता से कह दिया और बना लेना पर बनाने में मेंहनत समान और समय सभी खर्च होता है फ्री में कोई चीज नही बनती है। स्नेहा बड़बड़ा रही थी पर विनोद बाबू ये सब सुनकर हतप्रभ रह गये थे।

कल की बात भी उनके दिमाग में बिजली की तरह कौध्र रही थी जब स्नेहा ने साड़ी के लिए सासुमां को बोल रही थी।

कल स्नेहा अंजना को कह रही थी ये "क्या मम्मी जी मै आप के लिए इतनी सुंदर और इतनी मँहगी साड़ी खरीद कर लाई थी और आप ने तुरंत ही शिखा को दे दी। साड़ी सुंदर थी तो हर कोई तारीफ करेगा इसका मतलब यह नहीं की आप सब कुछ बाँटते रहो। आखिर वेंदात दिनभर मेंहनत करके ही चार पैसे लाते है ना"।

स्नेहा अच्छे स्वभाव की जिम्मेदार बहु थी वह अपने सास ससुर का पूरा ध्यान रखती थी पर वह यथार्थ वादी थी दिखावा व फिजूल का लेना देना पसंद नहीं था।

इसलिये अक्सर स्नेहा की बाते विनोद बाबू और अंजना को सुननी पड़ती थी। विनोद बाबू का मन तीस साल पहले के दिनों की सोच रहा था अंजना बहुत अच्छा खाना,... नमकीन,... मीठा बनाती थी और वह जब चाहे उसका बना नमकीन मीठा अपने यार दोस्तों में बाँट देते थे अंजना कभी नाराज़ नहीं होती थी बल्कि हँसी खुशी से सबको खिलाती थी।

अचानक ही विनोद बाबू किसी को ले आते तो बस यही शिकायत रहती अंजना को पहले से बताते तो एक दो सब्जी या कुछ और बना देती। न वह खर्च के लिए नाराज होते,... न ही अंजना बनाने के लिए।

यह सब कारण से उन्होंने फोन जल्दी लगवाया था घर पर की किसी को कुछ खिलाने या रखने का मन हो तो अंजना को बोल देतेवह खुश दिल से तैयारी कर देती थी।

विनोद बाबू को खाने से ज्यादा खिलाने का शौक था वह कुछ भी हो बाँट कर खाने वाले थे।

अंजना ने पति को समझाते हुए कहा "चलिए खाना ठंडा हो रहा है खा लेते हैं बहू ने हमारे लिए थोडे ही कुछ कहा है,..."

हाँ,... हाँ,... हमारे लिए थोडे ही बहू नाराज हो रही थी,... पर अब हम लोग जानवर हो गये हैं अंजना,... सिर्फ अपना ही पेट भरना है,... अपने लिए जीना है,... जानवरों जैसा,... महफ़िल जमाना और सबको खिलाना इंसान का काम है खुद खाना और अपने लिए सोचना जानवरों का,... वह भी लोमड़ी,... और भेड़िया जानवर,... जो स्वार्थी,... मतलबी,... होतें,... सिर्फ स्वयं के लिए जीने वाला जानवर,...हमारी जिदंगी,... सोच भी हो गई जानवर,...!

--00--

आहुति के रूप

सेक्रेटरी घनश्याम बाहर से आवाज लगा कर बोला "ठाकुर साहब,... कुँवर सिंह आपसे मिलने के लिए आये है क्या कह दूँ उनको"

ठाकुर साहब ने प्रत्युत्तर में कहा "डांइग रूम में बिठाकर जल पान कराओ मैं पूजा समाप्त करके आता हूँ हवन शुरू हो गया है आहुति बाकी है,..."

यह कहते हुए ठाकुर साहब ने सुमन को आलीशान पलंग पर गिराते हुए बोले जल्दी करो,... आहुति डालने की,...

सुमन साड़ी उतारते हुए सोच रही थी हाँ,...आहुति,...ही तो डालना है इस जीवन कुंड में,...

ठाकुर साहब अपनी हवस की आग में उसकी आबरू की,... आहुति,...डाल रहे हैं,... और वह अपने परिवार,... सास- ससुर और बच्चों की पेट की आग में,...अपनी मजबूरी की डाल रही है आहुति,...।

--00--

आखिर क्यों नहीं

सुजाता गुस्से में बोल रही थी उसका गोरा चेहरा कोध्र से लाल हो गया था,... आँखों में शोले सी लपटें,... तथा गहन दुख का सागर लहरा रहा था,... होठों कंपकंपाकर कई सवाल पूछने की कोशिश कर रहे थे और भर्राती आवाज पर स्थिर शब्दों में फिर प्रश्न किया "आखिर क्यों,... मैं क्यूँ माँ नहीं बन सकती,... मुझे भी माँ बनने की इच्छा है,... और आज से पहले आप सबने मेंरे इस अरमान को ताने उलाहाने,... दूसरी शादी सेरोगेसी मदर और न जाने कितनी बातें कहकर इसको बढ़ावा दिया था। आज मैंने अपनी माँ न बनने का कारण और उपाय दोनों ही ढूँढ लिया है तो आपाति कैसी। आखिर क्यों? मैं पूछती हूँ आखिर क्यों?"

सुजाता कह रही थी और उसके सास ससुर,... पति,... बुआ सास और मम्मी पापा,... भाई सभी सिर झुका कर सुजाता की बात सुन रहे थे पर कोई उत्तर देने को तैयार नहीं था,...।

सुजाता की शादी को पांच साल हो चुके थे माँ नहीं बन पाई थी। सारी कोशिश,... मंदिर दिवाला,... मन्नोती,... डाक्टर वैद्य,... टोटका जादू टोना सभी हो चुका था। पर सुजाता माँ नहीं बनी। दूसरी शादी और सेरोगेसी माँ तक बात पहुँच गई थी। पर कोई भी सुजाता के पति वेंदात को दोष नहीं देता था न मेंडिकल चेकअप करवाया गया। बस सुजाता पर ही सारी भंडास निकाली जाती थी। सुजाता की एकसखी प्रिया डाक्टर थी और उसकी जिद पर वेंदात का मेंडिकल में सारे टेस्ट हुए और रिपोर्ट में पता चला की वेदांत कभी पिता नहीं बन सकता है। पर सुजाता माँ बन सकती है आज सुजाता डाक्टरों की मदद से टेस्ट टयूब बेबी करना चाहिए रही है तो सुजाता के ससुराल वाले को यह पसंद नहीं है दूसरे के जींस से जन्म लेने वाला बच्चा उनके खानदान का वारिस कैसे होगा। यह सास ससुर और पति को मंजूर नही है और सुजाता बार बार पूछ रहीं हैं।

वह न तो अपने पति से तलाक ले रही है न बेइज्जत करना चाहती है अपने माँ बनने की इच्छा पूरी करना चाह रही है समाज और दुनिया के समाने परिवार की इज्जत रख रही है फिर क्यूँ,... फिर क्यूँ,... अपने ख्वाब पुरे करें,... आखिर क्यों,...आखिर क्यों,...!"

--00--

मालिक का उत्तरदायित्व

राही की सारी उम्र विमला देवी के यहाँ का में करते गुजर गयी थी जब वह शादी होकर आयी थी तब उनके यहाँ सासु माँ काम करती थी और उनके साथ साथ राही ने काम करते करते अपनी जिंदगी के पैत्तीस साल निकाल दिये थे। अब उससे न तो जल्दी जल्दी काम होता था और न ज्यादा काम। विमला देवी की बहू रोज सासु माँ से कहती माँ जी आप राही को काम के लिए मना कर दो और भी काम वाली मिल जायेगी। पर विमला देवी हंसकर कह देती समय आने पर निकाल देगें। आज बहू की बात सुनकर उनसे रहा न गया उसने राही को कह दिया राही कल से काम पर मत आना,... पर हर माहिने पहली तारीख को आ जाया करना।

राही आँखों में आंसू भरकर कहने लगी हर माहिने आकर क्या करूँगीश्र मालकिन,... जब आपने काम से ही निकाल दिया है अब मुझसे काम नहीं होता ना। विमला देवी ने कहा काम के लिए नहीं पगार लेने आया कर पगली,... जब सारी उम्र तूने हमारे घर चाकरी की है तो हमारा भी उत्तरदायित्व बनता है की बुढ़ापे में तुम्हारा कुछ तो सहारा बने।

राही के आंसू नहीं रूक रहे मालकिन के उत्तरदायित्व की बात पर,..।

--00--

अंशिका

"पापा !!! आप कहते हो ना कि नाम अर्थपूर्ण होना चाहिए। फिर आपने मेंरा नाम अंशिका क्यों रखा। क्या मतलब होता है अंशिका का"

अंशिका अपने पापा से लाड़ जताते हुए बोली

पापा बोले बेटा "अंशिका नाम बेहद अर्थ वाला होता है तुम्हे मालूम नहीं है इसका मतलब होता है किसी भी वस्तु का अंश या एक हिस्सा"। पापा फिर में भी एक हिस्सा हूँ पर किसका?

पापा ने कहा बेटी तुम मेंरे और संगीता के अंग का हिस्सा हो। "तुम्हारे शरीर में मेंरा खून विचार भावनाओं आदत,... सब पर तुमने हिस्सा ले रखा है तुम मेंरे अरमान,... लाड़ली गुड़िया मेंरे हर चीज में तुम्हारे हस्सा है तुम ही मेंरी परछाई और सपने का हिस्सा हो जो मुझे गौरव दिलवाओगी और में अपनी अंशिका पर नाज करते करूँगा।,..."

अंशिका अपने नाम पर गर्व तुम करोगी,... ठीक उसी तरह जैसे दर्पण के हजार टुकड़े हो तो भी वह हर टुकड़े पर सभी का अक्स दिखाता रहता है तुम भी दर्पण बनकर समाज को देखना और सीखाना,...!

--00--

बारिश

काले काले बादलों ने दिन को ही शाम के अंधेरे से गहरा दिया था। सूरज को काले,... बादल ने ढक,...दिया और धुंधली रोशनी में दोपहर,...शाम सी लगने लगी थी,...बादल गरज गरज,...कर आने का संदेशा दे रहे थे,...चपल दामिनी,...कड़क कड़क,...कर डरा रही थी

दो दिन लगातार बारिश से मौसम सुहाना हो गया था। धरती को तपती धूप से राहत मिली।

नव दंपति को सुहाने मौसम रोमांस सूझ रहा था कोई अपने रंगीन छाते का मज़ा ले रहा था।

बच्चे तो घर बाहर भरे पानी में उछल कूद कर रहे थे कागज की नाव दौड़ रही थी नाली और गली में।

भुटटे के ठेले पर भीड़ जमा हो रही थी। चआट और गरम समोसे कचौड़ी बनाने वाले के चेहरे पर रौनक छा गई।

घरों में तेल की खुशबू फैलने लगी थी गरम भजिया मंगोडी़ सबको भा रही थी। गरम गरम चाय काफी के कप खाली हो रहे थे।

लोग सैर सपाटे के लिए निकल कर बरसाती मौसम का मज़ा ले रहे थे।

कवि की कविता में बरखा बहार के तारीफ में दोहे,... गजल,... गीतिका,... छंद और गाने लिखे जा रहे थे बरसात का इतना अच्छा वातावरण का वर्णन हो रहा था।

किसानों के चेहरे से चिंता की लकीरें कुछ कम हो रही थी वह अपने खेतों में जा रहे थे।

लेकिन भरत को बारिश के मौसम से कोई मतलब नहीं था वह अपनी सोच में डूबा चला जा रहा था। बरसते पानी से न भीगनें की कोशिश कर रहा था। दो जोड़ी कपड़े है और दोनों ही गीले हो गये हैं। घर की छत दरक दरक कर अपने जर्जर होने की कहानी कह रही है। पानी आसमान से जितना बरस रहा है उतना ही पानी घर की छत से अंदर आ रहा है। खप्परैल वाला कमरा भी पानी रोकने में असमर्थ है और पानी के साथ भीगनें पर मवेशी भी रंभा- रंभा कर शोर मचाते हैं। भरत एकटक अंबर को देख रहा है जितना पानी आकाश से बरसकर धरती को तृप्त कर रहा है। उतने ही आँसू भरत के मन को भीगों रहे हैं और पानी की शीतलता उसके दुख को बढ़ाती जारही है गम के शोले,... भड़कते,... जा रहे है,...और वह,... अपनी दर की छत की तरह,... इसे,... रोकने में,... असमर्थ हो रहा है,... बेबस,... लाचार,... बारिश को रोक सकता है न घर की छत को,...।

--00--

नारी एकता

सुनीता का घर आदर्श नगर में था। नाम तो आदर्श नगर था पर आदर्श तो पूरी कालोनी से गायब था। कालोनी के सभी स्त्री पुरुष नौकरी करते थे पर स्त्रियाँ सभी समझदार और मितव्ययी थी पर पुरुष सभी शराबी और जुआरी थे। उनकी शराब की आदत के कारण एक व्यक्ति ने कालोनी के दरवाजे के पास ही शराब की दुकान खोल ली थी। उसकी दुकान पर दिन भर पुरुषों भीड़ इकट्ठी रहती थी शराब के लिए। कुछ लोग वही खड़े होकर शराब भी पीते रहते व व्यर्थ की छींटाकशी करते रहते। वहाँ से निकलने वाली लड़कियाँ और महिलाओं को बहुत दिक्कत होती थी। उनका उधर से आना जाना मुश्किल हो रहा था। सब महिलाओं ने दुकान बंद करने की मिन्नत की। दुकानदार को समझाया। कोई फायदा नही हुआ। पुलिस में रिपोर्ट करने पर भी कुछ हासिल नहीं हुआ।

सुनीता को पुस्तक पढ़ते हुए नारी शक्ति का गौरव पढ़ कर ध्यान आया की उसे भी नारी शक्ति का प्रयोग करना चाहिए और वह तुरंत उठकर अपनी पडोसी चित्रा से मिली,... और अपने मन की बात बताई। चित्रा ने अपनी सहमति देकर कालोनी की सभी महिलाओं और लड़कियों को इकट्ठा किया और शराब की दुकान पर जाकर सभी ने दुकान में तोड़ फोड़ करना शुरू किया। पुलिस के आने पर उनको भगा दिया और अपना अनुमोदन पत्र कलेक्टर को सौंप दिया और आगे कार्रवाई करने को कहा। औरतों का उग्र रूप देख कर पुलिस भी उनका समर्थन करने लगे। और कालोनी से शराब की बंद हो गई और महिलाओं की सख्ती से बहुत से कालोनी के पुरूषों में भी सुधार आने लगा है।

--00--

फैशन और संस्कार

फैशन के युग में संस्कार कम होता जा रहा है ऐसा नहीं है कि फैशन करते हुए हम संस्कारी नहीं बन सकते हैं पर फैशन और संस्कार अलग अलग है पर कुछ लोग दोनों को जोड़ कर देखते हैं।

फैशन का लिबास पहनकर नारी संस्कारी बन सकती है फैशन का अर्थ अर्धनग्नता नहीं है फैशन करने का मतलब तन से कम कपड़े पहनना नहीं होता है।

शालीनता से फैशन को स्वीकार कर सकते हैं पति की इज्जत करना,... सास ससुर का मान सम्मान और देख रेख करना संस्कारी होना होता है पर यह नहीं कह सकते कि वह आधुनिक नहीं है फैशन का मतलब आल कल ग्लैमरस ही समझते हैं जब भी बेहूदे कपड़े पहने या व्यवहार करते हैं तो अपने आप को फैन्सी दिखाते हैं।

मेंरी नज़र में फैशन करना बुरी बात नहीं है पर फैशन के लिए अपने संस्कार को छोड़ देना या भूला देना कमसे कम हम भारतीय का गुण नहीं है। फैशन में आज लोग हाथ मिलाते है,... गले मिलते व किस लेते हैं।

किसी का अभिवादन हाथ जोड़कर नमस्कार,... प्रणाम,... करके किया जाता है चरचा स्पर्श करना हम भारतीयों की विशेषता है गले भी मिलते हैं पर मयार्दा में रहकर। नर नारी का ध्यान रखकर,... और रिश्ते के अनुरूप।

फैशन के लिए हम मंदिर जाना नहीं छोड़ सकते न ही फैशन में मासांहारी होना जरूरी है शाकाहारी भोजन सादगी का खाना और उच्च शिक्षा उच्च विचार धारा भी फैशन की पूरक हो सकती है।

पढ़े लिखे शिक्षित व्यक्ति फैशन और संस्कार का अंतर समझता है कम पढ़े लिखे या गाँव के लोगों को लगता है कि संस्कारी बने रहने पर लोग उन लोगों को गंवार न समझ ले।

वास्तविकता यह है कि हम फैशन के साथ साथ संस्कारी भी बने।

जैसे नये उपकरण का उपयोग करते हैं मोबाइल टीवी ए सी इत्यादि का पर जरूरत पर इसी तरह फैशन का प्रयोग जरूरत पर करें और संस्कृति संस्कार को नहीं भूलना है यह हमारे जीवन के लिए जरूरी है।

माता पिता की सेवा उनका ध्यान रखना फैन्सी रहकर,... भी,... साथ ही संस्कारी बनकर अच्छे संस्कार निभाये जा सकते हैं।

--00--

नाम – मंजू सरावगी
उपनाम – मंजरी
पिताजी – स्मृति शेष श्री राधेश्याम खरया
माताजी – स्मृति शेष श्रीमती रामा देवी खरया
जन्मतिथि – १० फरवरी १९६२
विवाहतिथि – २१ मई १९८६
पति – श्री राजेन्द्र सरावगी
शिक्षा– बी.ए.
पता– मंजू सरावगी, श्री राजेन्द्र सरावगी, बी-७, राधा स्वामी नगर, नियर भाटा गाँव चौक, रायपुर, छतीसगढ़, पिन कोड-४९२००१
मोबाइल नंबर– ९७७०२२१८०२, What's app no- 9479246627
ईमेल – manjusaraogi1002@gmail.com

सक्रियता – सामाजिक संस्थाओ में गतिविधियां और समाज सेवा, अखिल भारतीय साहित्य संस्था की सदस्य, श्री गहोई वैश्य महिला समीति रायपुर की सदस्य, अखिल भारतीय गहोई समाज की सदस्य, इंटरनेशनल लायंस क्लब शिखर रायपुर की सदस्य, वर्तमान में लायंस क्लब की कोषाध्यक्ष, अभिव्यंजना नारी सुवास मंच की सदस्य, छत्तीसगढ़ हाइकु मंच की सदस्य, शिव साहित्य कला उनयन मंच की सदस्य

प्रकाशन– लौट आओ ना (एकल काव्य संग्रह), यादें (सांझा संकलन), झंकार (सांझा संकलन), प्रेरणा (सांझा संकलन), कवियित्री विशेषांक सांझा संकलन, नारी तुम केवल श्रृद्धा हो (सांझा संकलन), आपातकाल फुलवारी विशेषांक (एकल संग्रह), माँ (सांझा संकलन), कोरोना प्रकृति की चेतावनी (सांझा संकलन), विपदा आएगी, डरने का नई (सांझा संकलन)

सम्मान – अंतरा शब्द शाक्ति सम्मान, महिला शक्ति करण मंच रायपुर सम्मान, लायंस क्लब श्रेष्ठ कोषाध्यक्ष सम्मान, गहोई वैश्य महिला समाज सम्मान, आनलाईन लगभग ७० सम्मान पत्र,

हिन्द व हिन्दी का सम्मान, है प्रमाण देशभक्ति का.. आइए करें सृजन, शब्द से शक्ति का...

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला– बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331, मो.– 9424765259, ईमेल– antrashabdshakti@gmail.com

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स
Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/

978-93-5372-257-9

मूल्य 250/–